

नरसीमेहता का बडा मामेरा

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई.

श्रीः

नरसीमेहेता का बड़ा मामेरा.

इन्दौरनिवासी-साह शिवकरण रामरतन-

दरक माहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवाला कृत.

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : फरवरी २०१८, संवत् २०७४

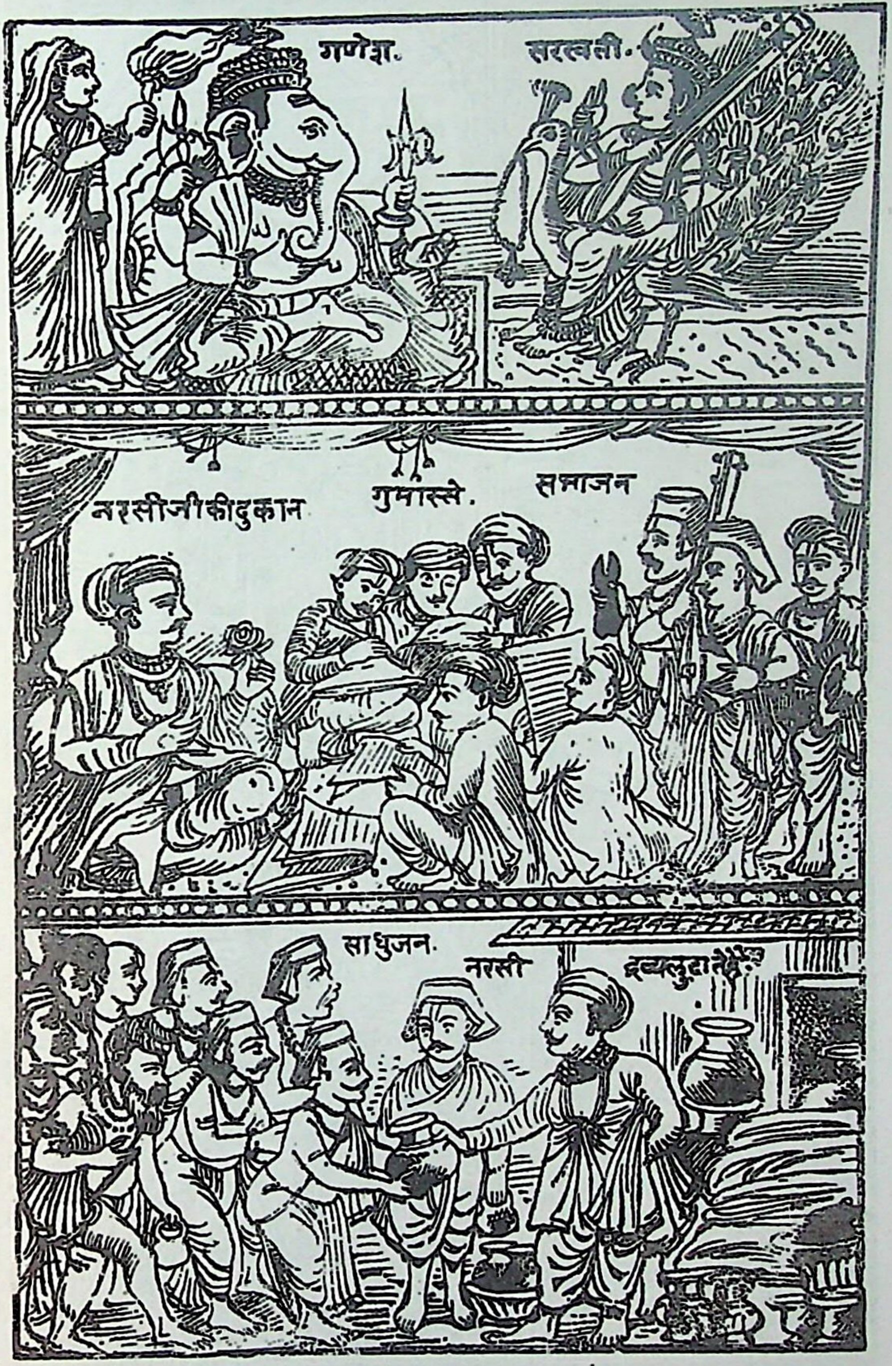
मूल्य : १०० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.


गणेश.
सरस्वती.
नरसीजीकीदुकान
गुमास्ते.
सभाजन
साधुजन.
नरसी
द्रव्यलुटाते


शिव.
नरसी
शिव
विष्णु
नरसी
नानी बाई सूं मिलकर
कोकल्योजूनेगढ़
जावै
श्रीरंग.
नराणु.
डोकरी


नरसीजीकोघर


नरसीजीको माहेरो लेजावे


नरसीजीकी डी टूटी
कृष्णवांति
बनाकर
गाडी सुधारे
अंजार सभा
कोकल्यो


संतजन.
नरसीजी
नानीबाई
नानीबाई
सास
नराणुं


नरसीजी-श्रीकृष्णजीके सिंहासनपर
माहेराकोकागद धरतेहैं·


श्रीकृष्ण माहेरो लेजातहैं·


नानीबाई. सांवल साह माहेरोल्यायो.
गायन समाज
सावलियोमारापेलो
सा.
नरसीजी


सांवल साह माहेरो
पहरावै
गाल्यांगते
है
सांवल
सांवल साह
जानजमते है

प्रस्तावना

★

प्रकट हो कि अब मैंने नरसीके तीन जन्मकी पूर्वोक्त कथा जैसे गोलोकगमनागमन, भगवत वरदान कथा हुंडी व जाति विवाद वा केदारोराग, गहणों धरके ब्राह्मण भोजन कियो तहां ऋद्धि बढ़ी तब संन्यासी कोप्यौ, मंडलीक राजापै जायके पुकारचो तब राजा कोप्यौ और नरसीको बुलायो भगवानकी मूर्तिके पास माला मँगवाई, तहां भगवान् नरसीको स्वरूप धरिकै राग केदारो छुड़ाय लाये और मंडलीक राजाकी राणीको स्वरूप धरिके जल पायवेके मिस नरसीजीको राग केदारो दियो और भगवान्‌ने प्रसन्न होकर माला पहिराई और भगवान् लक्ष्मीसहित नरसीके गृह आयके कौशल्या ब्राह्मणको भोजन करायो, मामेरो भरचो, भात जिमायो इत्यादि बहुतसे उत्तम उत्तम स्थलोंका अनुक्रम मिलाके बड़े श्रमपूर्वक तैयार किया है इसमें बहुतसी रागरागिनी, दोहे अत्यन्त ललित रक्खे गये हैं। जिसके बाँचने और पढ़नेसे भक्तिरूप अंकुर उदय होकर भगवान्‌में दृढ विश्वास हो जावे। जिसको श्रवण करनेसे भवसमुद्रसे सहज ही तरें। अगले बनाये हुए पुस्तकमें अनुक्रम मिलाकर इंदौरमें छपाया, जिसमें मेरा नाम पता छाप ठिकाणा लिखा था। उसे कोई अविवेकी दुष्ट आत्माने छाप तोड़के बगैर नाम पतेसे अधूरा व अशुद्ध छपवा दिया, खैर हमारा नाम तो श्री परमेश्वर रक्खेगा अब मैंने इस पुस्तकको बहुत शुद्ध करके मुंबई निवासी श्रीवेंकटेश्वर प्रेसके मालिक

श्रीमान् सेठजी खेमराज श्रीकृष्णदासजीको पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार समेत दे दिया है. इससे कि अन्य कोई छापनेका साहस न करे। अन्तमें सज्जन पुरुषोंसे प्रार्थना है कि मैंने इसमें जो परिश्रम किये हैं इस पुस्तकको स्वीकार कर तथा भक्तियुक्त अंतःकरणसे पढ़कर मुझे उत्साहित करके श्रीमान् सेठजी साहबको अनेक भक्तिमार्गके ग्रन्थोंके मुद्रण करनेमें वे लोग प्रोत्साहित करेंगे ॥ इति शम् ॥

आपका कृपाभिलाषी–

शिवकरण रामरतन दरकमाहेश्वरी मारवाड़ी.

*

नरसी मेहेताका बड़ा मामेरा

★

प्रथम प्रकाश.
भक्तवत्सल रागकौतूहल, दोहा
चौपाई. पदवन्ध प्रारम्भ

दोहा

श्री श्री श्रीसद्गुरु प्रणम्य, द्वितिय बन्दूं सब साध ।
तृतिय बन्दूं परब्रह्मको, द्यो वाणी विमल अगाध ॥१॥
भक्तां गत भगवत गत, मोपे लखी न जाय ।
श्रीगुरुदेव दया करौ, दीजे भेद बताय ॥२॥

सोरठा

विघ्नहरण गणराज, देहु सदा शारद सुमति ।
कीजिय मङ्गल काज, कंठ कमल वाणी विमल ॥ ३ ॥

चौपाई

श्रीगुरु चरण कमल चित राखू । भक्ति प्रभाव विरणद यश भाखू ।
बन्दौं भक्त भक्त बुद्धि पाऊं । नरसीको इतिहास सुनाऊं ॥४॥
गूजरात जूनैगढ माहीं । जगत छांडकर भक्त कमाहीं ॥
नागरकुल बडनगराकेहीं । पूर्वजन्मकी अगती लेहीं ॥५॥
तृतिय जन्मकी कथा सुनाऊं। थोड़ेमें बहुती समझाऊं ॥
पूरब जन्म हुतौ नृप भारी । सुभद्र नाम सतवंती नारी ॥६॥
सदावर्त्त पक्षिनको दीन्हो । खग मिल घात ऋषिकों कीन्हो ॥
पुण्य करत लागो तिन पापू । प्रिय दुखित ह्वै दयो शरापू ॥७॥

सो वह कथा यहां नहीं आनी । मीरा मिथुला बहुत बखानी ॥
कछु यक तात परिज चुन लेहूं । लघु संक्षेप यहां लिख देहूं ॥८॥
यहां शिवकरण कहत कछु छाई। ग्रंथ बढै बांचें कोउ नाईं ॥
यह सुन रीस करो मति कोई । इतनोइ पढै सुनै धनि सोई ॥९॥

दोहा

नृप सुभद्रको शाप अति, दयो विप्र कोउ काल ।
गयो महारणके विषे, भयो सिंह विकराल ॥१०॥

चौपाई

नारी सहित सिंह तन धारे । वनके जन्तु सकल चुन मारे ॥
रहे न खग मृग सकल सँहारे । धावा बहुत दूरलौं पारे ॥११॥
हने पथिक गोग्वाल समेता । चलत न पंथ होत भय भेता ॥
द्वारावती जात मग माहीं ।सुनत हांक सब लोग पराहीं॥१२॥
ऊजर ग्राम भये नर भागे । पन्थी पंथ और कोउ लागे ॥
फिर सत कोश द्वारका जाहीं । आदि पंथ कोउ पग न धराहीं१३

दोहा

गागरौन गढको धनी, खींची पीपा नाम ।
भयौ भक्त सब जक्त तज, गयौ त्याग धन धाम ॥१४॥

चौपाई

पीपा भक्तसीत अरधंगा । चल्यौ द्वारका मन कर चंगा ॥
सीधे राह लगे हरि दासा । जानि द्वारका निकट सुवासा ॥१५॥
अति आतुर दर्शनके ताईं । विकट पन्थ किहिं चले पराईं ॥
बरज्यो बहुत कहा नहिं माना। निर्भय चले सुमिरि भगवाना १६

अधबिच सिंह सिंहणी आये। वचन भयंकर गरजि सुनाये ॥
नख सँवारि दोउ नाचैं तरजैं। प्रलयकाल सम पुनि पुनि गरजैं १७
राम राम पीपा जब गावा। केहरिके सब पाप बिलावा ॥
तब मृगराज चरण गहि लीया। पीपे भक्त ज्ञान जब दीया ॥१८॥
सुनत बचन अनुकम्पा आई। ह्वै रोमांच देह थरराई ॥
पीपा भक्त ज्ञान पुनि दीन्हा। पूरब जन्म सिंह जब चीन्हा॥१९॥
लगीसमाधि खुलेनहीं नयना। लुटत चरणमुख व्याकुल बयना ॥
पीपा भक्त पोख तब दीया। श्रुति पुराण उच्चारण कीया ॥२०॥
मंश अंशमें पाप बताया। भिन्न भिन्न मृगपति समुझाया ॥
मंश अंश जो मुखमें आवै। शूकर श्वान जौण सतपावै ॥२१॥
उलुक काकबक बागल होई। आमिष खाय सिंह ह्वै सोई ॥
पुनि बहुजीव हनै वह पापी। पाप पुंजका मिटै न थापी ॥२२॥
सिंह देह सम अधम न कोई। बढै पाप पुनि अजगर होई ॥
वर्ष सहस दोउ देह रहावै। घीसै पेट महा दुख पावै ॥२३॥
गिरगट होत त्याग तनु भाई। दश हजार लौं देह रहाई ॥
गिरगट जौण पाप बहुकरही। पुनि २ देह सरटकी धरही ॥२४॥
सरट समान अधम कोउ नाहीं। चुगली करे मांस पुनि खाहीं ॥
तनक कहीं लरिहैं नरनारी। जो सुनलेहि मांसके अहारी ॥२५॥
पशू खाय गिरगिट तनु पावै। मानुष खाय कौन गति जावै ॥
चंद सुरज जहँतकरह धरणी। मांस अहारि न सुधरे करणी ॥२६॥
समझै नहीं ज्ञान नहिं लागै। जो कोइ कहै क्रोध तन जागै ॥
ह्वै राकस बहु जीव सतावै। फिर या इकोत्तर नरक पठावै ॥२७॥
कोउ इक पुण्य मनुषतनु धरही। होहि अपुत्र पुत्र जन मरही ॥
तब संतान गुपाल जपावै। मांस पापको मर्म न पावै ॥२८॥

यहि विधि ज्ञानसिंहको दीन्हों। शिरपै हाथ धऱ्यो शिष्य कीन्हों
संत वचन हिरदे कोउ धरही। ते नर काल फंदतैं टरही ॥२९॥

दोहा

चलती हलती आतमा, रामरूप सब जाण।
कबहूँ न भूल सताइये, सब घट तोसे प्राण ॥ ३० ॥
जीव अमर अज अज अमर, छिदत भिदत नहिं ताप।
नाहरको पीपा कह्यो, प्राण हनेको पाप ॥ ३१ ॥
जीव मार जाहर कर, खाता करै बखाण।
पीपापरतक देखल्यो, थाली माहिं मसांण ॥ ३२ ॥
केहरि सुन मन मोद अति, गहै संतके चरण।
मानव जिह्वा स्वापते, तजत नाहिं शिवकरण ॥३३॥

चौपाई

त्राहि त्राहि करि केहरि रोयो। प्रभु मैं जन्म अकारण खोयो ॥
पीपै कह्यो राम भज भाई। तजो जीव मानस अरुगाई ॥३४॥
सब आतम अपनी सी जानो। दया देह अनुकंपा आनो ॥
नर बीरजतें उतपति होई। नरक बीच बोओ मति कोई ॥३५॥

दोहा

राम राम जब सिंह जपि, हृदय धारि सह प्रेम।
तज्यो जीव हनबो तबै, लह्यो जु निश्चय नेम ॥३६॥

चौपाई

बचन सुनत मृगपति व्रत कीन्हों। क्षुधित पिपास प्राण तज दीन्हों॥
सिंहिनि मरी पीवके संगा। बस वैकुण्ठ सहित अरधंगा॥ ३७॥
पुनि हरि भक्त करणके ताहीं। भरत खंड मृतमंडल आहीं ॥
भरतखंड बिन भक्त न होई। श्रीमुख वचन दियो बरसोई ॥३८॥

मानव तन उत्तम कुल पावो । करो भक्ति गोलोक सिधावो ॥
प्रभु आज्ञा ले शीश चढ़ाये । भक्ति करण मृतमंडल आये ॥३९॥
प्रेमाभक्त प्रेमरस भीनी । दिन दिन प्रति दिन बढ़हिं नवीनी ॥
वर शिवकर्ण दियो अति भारी । मनुजवतार लयो नरनारी ॥४०॥

दोहा

नरहरिको नरसी भयो, नाहरिकी भइ नार ।
ह्वै हैं कन्या ताहि इक, ब्यावहिं नग्र अँजार ॥४१॥
जाके इक कन्या हुती, ताको रचहिं विवाह ।
मोहेरो नरसी तणो, भरसी सांवल साह ॥४२॥
यहां बहुत सँकोचिके, तनक कहत हूँ सार ॥
विविध भाँति आगे कहूँ, सुनो सहित विस्तार ॥४३॥

चौपाई

आज्ञा गुरु गोविंदकी पाऊँ । नरसी कथा यथामति गाऊँ ॥
नागरवेश बड़े आचारी । जूनेगढ़ गुजरात मँझारी ॥ ४४ ॥
तहां आय नरसी वपु धारा । सकल कुटुंब लहै सुखसारा ॥
जनमतही शिवभक्ति सम्हाई । माता पिता ज्येष्ठ यक भाई ॥४५॥
शिवकी महिमा बहुत बखानै । विष्णुभक्त स्वप्ने नहिं जानै ॥
गोधन वृषभ विभव अति भारी। रथ शिबिका गज वाजि सँवारी ॥
बहु गुमासता सेवक दासा । लक्ष्मी वसै सदा तिन पासा ॥
इयाझाँ चलै दिसावर जावै । कर व्यापार माल बहुलयावै ॥४७॥
अरबपती धनको नहिं पारा । गहणा राखै देह उघारा ॥
प्रिया इकीस रिद्धि चलि आई । कबहूँ न खूटी सदा सवाई ॥४८॥
पुरखा सकल भये बड़ा नामी । यश कीरति जगमें बहुजामी ॥
नरसी लग्न भयो तिहिं वारा । ताको द्रव्य लग्यो लख च्यारा ।४९।

प्रथम ब्याह नरसीजी ताके । कन्या पुत्र भये दोउ जाके ॥
भई शांति त्रिय और विहाई । बरसबतीस अवसथा आई ॥५०॥
पुत्री नगर अँजार विहाई । बड़ी बरात धूमतैं आई ।
उभय लक्ष ता समय लगाये। शोभासहित सकल मन भाये ॥५१॥
अगणित द्रव्य भरे भंडारा । कबहूँ न खूटै अंत न पारा ॥
पूजा अतिथि करै नित प्रीती । उनकी सदाकाल यह रीती ॥५२॥
साधू भक्त द्वार चलि आवै । सदाबरत नित नेम दिवावै ॥
एक दिवस मंडली चलि आई। उतरे पोलमाहिं रुचि पाई ॥५३॥
कथा कीर्तन हरियश कीन्हा । नरसी सुणे श्रवण चित दीन्हा ॥
मनन करत निध्यासन होई । गदगद भयो प्रेमवश सोई ॥५४॥
चरचा सुनी भर्मसब भाग्या । पिगल्यामन निज मन तब जाग्या ॥
हिरदा शुद्ध भया तत चीन्हा । पाया ज्ञान प्रेमरस भीना ॥५५॥
प्रेम भक्ति नरसी मनमानी । नीरस वैन अटपटी वाणी ॥
विष्णुभक्ति दृढ भई सदाई । नरहरि गुरु किरपातै पाई ॥५६॥

दोहा

लहर उठी वैराग्यकी, करम भरम चकचूर ॥
काम वासना सब मिटी, भागे मोह अरु कूर ॥५७॥
दीन्हों द्रव्य लुटाय सब, मास दवादश माहिं ॥
देश दिसंतर सब सुनी, हुंडी चालै नाहिं ॥५८॥
गहणा कपड़ा बेचके, भक्तन दीन खवाँहिं ॥
थिन वित बासण और कुछ, सौंज हुती घर माहिं ॥५९॥
निर उद्यम निरद्वंद है, धरयो भक्तको भेष ॥
दंभरहित हरि हर भजे, चतुराई नहिं लेश ॥६०॥

निष्कामी निष्कपट है, निजानंदपद नेह ॥
शिव प्रसन्न शिवकरण हुए, कह्यो मांगि कछु लेह ॥६१॥

पद राग विहाग

श्रीगणपतकी आज्ञा पाऊँ। हरिभक्तन को यश गाऊँ ॥ टेर-गुरु चरना शीश निवाऊँ ॥ शारद पै सुमती पाऊँ ॥ मैं तो शिवही शिवको ध्याऊँ ॥ जलसूं असनान कराऊँ ॥१॥ म्हें तो चावल चरन चढाऊँ ॥ नित आक धतूरा ल्याऊँ ॥ म्हें तो घड़घड़ गाल बजाऊँ ॥ यातें हड़हड़ नाथ हँसाऊँ ॥२॥ म्हें तो सूरज ध्यान लगाऊँ ॥ लेलेबीलपत्र चढाऊँ ॥ अगड़बँब बँब मुख गाऊँ ॥ शिर जल धारा बरसाऊँ ॥३॥ यातें प्रसन्न भये शिव राजा ॥ कहि मांग मांग सारूं काजा ॥ मोकूं और कछू ना चाहिये। श्रीराधाकृष्ण मिलइये ॥४॥ मोकूं प्रेम भक्ति नित भावे ॥ मोय और कछू न सुहावे ॥ मोपै एक कृपा प्रभु कीजे ॥ मोकूं भक्ति पदारथ दीजे ॥५॥ धन धन नरसी बुद्धि तिहारी ॥ तैं तो वर मांग्यो अति भारी ॥ ऐसी बुद्धि और को पावे ॥ हरि भक्तनको हरि भावे ॥ ६ ॥

चौपाई

मांगु कहा कछू नहिं चाहिये। प्रभु मोहिं राधाकृष्ण मिलाइये ॥
यह सुन प्रसन्न भये त्रिपुरारी। नाचत नाथ बजावत तारी ॥१॥
धन्य धन्य बोले शिव वाणी। नरसीकी निजभक्ति पिछाणी ॥
गवने सङ्ग सखा ले धाये। नरसीको गोलोक दिखाये ॥२॥

पद राग काफी

जाय पहुँचे गोकुल वृन्दावन नरसी रास रचायो ॥ टेर-पाय घुँघरू घमक बजावत प्रेममगन गुन गायो है ॥ मिरदङ्ग

ताल संख सुरनाई मुरली बीण बजायो है ॥ १ ॥ तानमान स्वरताल भेद तज अदभुत निरत दिखायो है ॥ प्रेमपुञ्ज नहिं लखत गुञ्ज तहां हावभाव छबि छायो है ॥२॥ गानछटा धुरपद धमाल धुधकार धरण धमकायो है ॥ भये प्रेमवश देव थकित सब उनमुन ध्यान लगायो है ॥३॥ रहे चित्रसम हलत चलत न प्रेमप्रीति रस पायो है ॥ नैन सेनमुख बैन मुदित मन हरखि हरखि छबि छायो है ॥ ४ ॥ नारदादि विस्मय अपार सुरनार कमल सकुचायो है ॥ सहचरि अनेक अपछर अपार गांध्रवन पार नहिं पायो है ॥५॥ हरि पूछैं हरसों मुखमुलकत सखा कहांते आयो ॥ घर गुजरात वास जूनेगढ नरसी नाम कहायो है ॥६॥ शिवके वचन सुनत करूणानिधि नरसी कंठ लगायो है । रीझे हरि दियो केदारी नागरि ये यश गायो है ॥७॥

दोहा

हरि हरिजन दोहु मिलमिले, भई परसपर प्रीत ॥
क्षीर नीर शिवकरण कह, उत्तम जन यहि रीत ॥१॥
आपस मैं आड़त पड़ी, पक्की भई पिछाण ॥
कागद दीज्यो द्वारिका, सांवलसा सहिं धाण ॥२॥
काम काज लिखवो करो, आलस करो न मत ॥
मेरी कोठी द्वारिका, हुंडी लिखौ निचिन्त ॥३॥

चौपाई

नरसी कर प्रणाम सिधाये । पहुँचे भवन गोविंद गुण गाये ॥
पूजे अतिथि करै सतसङ्गा । जक्त न लखै भक्तको अंगा ॥४॥

पुरजन करै मसकरी सगरा । बोलै कटुक रखैं नित झगरा ॥
यक दिन साधू आये चार । कारी मस्करी भेजे द्वार ॥ ५ ॥
कहि तुम नरसीके घर जावौ । वापै हुंडी तुरत लिखावौ ॥
आगे पन्थ विकट है भाई । का वा लूट लेत दुखदाई ॥६॥

दोहा

नरसीकी हुंडी वटै, च्यार खूंट माहिं ॥
भुवन चतुर्दश खंड नव, पीछे पलटै नाहिं ॥ ७ ॥

पद राग मांड

पथिक थारे निकट अटपटी वाट ॥ टेर ॥ चलो तो वेला चालज्यो रे अब आछ औघट घाट ॥ लिखवा लो हुंडी अठे थे तो आगे लीज्यो साट ॥ पथिक० ॥१॥ पंथ द्वारिका जात री रे जूनागढ लौ आय ॥ आगे मारग दौय लौ काहूं ऊबट पैंडोंजाय ॥ पथिक० ॥२॥ पास रूपैया सौजी हुंडी लेवाजी कराय ॥ कौन लिखै इण नग्रमें कांई पूछे बजरां आय ॥ पथिक० ॥३॥ जूनागढरा बाँणिया रे खरा मसकरा लोग ॥ भवानी महतौ आगलौ कांइ मिलियौ करम संयोग ॥ पथिक० ॥४॥ इणगाँमै नरसी बसै रे है सत पढियो साय ॥ और ठौरथी जौ मती थे तौ लीज्यौ तुरत लिखाय ॥ पथिक० ॥५॥ भवने कीन्ही मसकरी रे सन्तन लखे अजान ॥ कह शिवकरण भुलावणी काई साँची लीन्ही मान ॥ पथिक० ॥ ६ ॥

पद राग मांड

चले सन्त हुंडी लिखावण काज ॥ टेर-हरिजन चल्या चूंप सूरै नरसी बैठा द्वार ॥ राम राम कहि रिलमिल्या कांई पूंछे

परस्पर सार । चले सन्त० ॥१॥ पासे रूपया सातसौ रे म्हें आया इन काम । हुंडी लिखतौ सांभल्यो कांई नरसीमहतौ नाम ॥ चले सन्त०॥२॥ तब नरसी करूणा करी रे हृदय सुमर श्रीराम ॥ ले रूपया हुंडी लिखा कांई सांवलसाके नाम ॥ चले सन्त० ॥३॥ ले हुंडी हरिजन चल्या रे भेटण श्रीरणछोड़ ॥ मजलाँ देर मजलाँ करै कांई हाले होडा होडा ॥ चले सन्त० ॥४॥ कहै दरकशिवकरणि यौं रे हरिजन पहुँचा जाय ॥ कर दरशन परसण हुआ कांई मनमैं हरष बधाय ॥ चले० ॥५॥

पद राग मांड

हरिजन पूछै साँवलिया री हाट ॥ टेर-इस नगरी सांवल वसै रे घो कोई भवन बताय ॥ छै नरसीको आडत्यौवाला हुंडी ल्यां सिकराय ॥ हरिजन० ॥१॥ इस गाम्में साँवल नहीं रे हुंडी जिणरै नाम ॥ ठग मिलियो कोई ठावको थे तो मूल ठगाणा दाम ॥ हरिजन० ॥२॥ गली गली भटकत फिरै रे कोइय न भवन बताय ॥ पचि हार्‍या पीछा फिर्‍या कांई वटतर बैठा आय ॥ हरिजन० ॥३॥ थाक पडचे लौटे गुडे रे पैंड न चाल्यो जाय ॥ रौस भर्‍या इमदाखवै कांई दीज्यै प्राण गमाय ॥हरि० ॥ ॥ ४ ॥ काख वही कर कोथली रे आयौ सांवल साय ॥ साधांसू बतलाव तो कांई बैठो त्रिभुवनराय ॥ हरि० ॥५॥ कमल जटांकी कान मैं रे द्वात धरी हरि हात ॥ कह शिव-करण भौलो वण्यो कांई पूछै सन्तनसै वात ॥ हरि० ॥६॥

पद राग ठुमरी

सांवल सन्तनसै कांई पूछै मरमकी बात ॥ टेर-कहाँसूं आया कहां तुम जासो उगंतै परभात । तुमरौ मुखडौ उनमुना

रे काई जाग्रण कीन्हा रात ॥ सांवल० ॥१॥ आकासे पटक्याने धरती झेल्या रे कही सुणी नहिं जात ॥ ठगपासे हम दाम ठगाया देह करा अपघात ॥ सांवल० ॥ २ ॥ कीसडौ ठग थांने किणविध ठगिया रे कौण ग्राम किंण भाँत ॥ वलत वैष्णव बौलिया जि म्हारौ कहतां धूजे गात ॥ सांवल० ॥३॥ जूनैगढ नरसी वसै रे म्हानैं हुंडी लिख दी हात ॥ सांवल-साह पुर द्वारिका रे हौं ढूँढ़ लियौ दिन सात ॥ ४ ॥ सांवल म्हारौ नाव छे रे उठ मिल्यो बरबात ॥ द्यो हूँडी ल्यो रूपया जी थे तौ खरचौ हातौ हात ॥ सांवल० ॥ ५ ॥ कह शिव-करण वधावणोंरे हरष्यों सन्त समाज ॥ ले रूपिया झोली भरी जि कांई प्रभु सारै सब काज ॥ सावल० ॥ ६ ॥

दोहा

साध निरखि विस्मय भये, सांवलसहाकौ रूप ।
सुखसाधारण मन बस किया, मौह्या त्रिभुवनभूप ॥१॥
ले रुपिया हरिजन चल्ये, मन उमंग शिवकर्ण ।
हेरि हिये प्रभुमुख विमल, लग्यो चित्त हरिचर्ण ॥२॥

इति हुंडीसिकारण जन महिमा नरसीमेहेताको मामेरो
प्रथम प्रकाश समाप्त ॥ १ ॥

अथ जातिविवाद राग केदारो

गहणे धरिकें ब्रह्म भोज्य कियो और ऋद्धि बढी तब संन्यासी
कोप करिके राजमें पुकार्‍यो मण्डलीक राजा कोपकर
नरसीको बुलायो माल मांगी तब ठाकुर
माला पहिराई ताकी कथा ।
द्वितीय प्रकाश २.

पद राग मारू

एक दिन दश बीस तीस मिल नागर मतौ उपायो जी ॥ नरसी अपणे नितको जीमें आप नीर नहिं पायो ॥ टेर-कोई कत इणरे मत द्यौ नौतौ कोई कहै इणनै टालो ॥ कोई कहै न्तात बड़ी छौ जिमतौ पंच विरद प्रतिपालौ ॥१॥ इतने एक मसकरो बोल्यो नरसी मोय पठायौ ॥ श्राद्ध पितानी आज तीथिहुं नौतौ देवण आयौ ॥२॥ सहपरिवार पावणा पहिनौ सिगरी नौतौ कीन्हौ ॥ तेडा तणीं बाट मति जोवौ साथ बुलावौ दीन्हौं ॥३॥ सरस सवाल रसोई ताजी वेगा जीमण आज्यौ ॥ बूढा ठाढा बाल जुवा मिल वैरा साथै लाज्यौ ॥४॥ नौतौ सुणत हुआ सब राजी चूलहा बन्ध कराया ॥ न्हावा चाल घरे नरसीके उष्णोदक धरवाया ॥५॥ घरमें तो घर-वाली राजी बाहर राजी परण्यौ ॥ टाबर टूबर हरष बधावै सुन नौतौ शिवकरण्यौ ॥ ६ ॥

पद राग मारू

हेम खेमन मनजी महता पनजी धनजी मिलियाजी ॥ पाट पटौला सोला लीना कलिहयानै काम लिया ॥ टेर-आसण वासण अरघा पूजा सहु मिल हाते ल्यावे ॥ दौड़त

क एकके आगे नरसीके घर आवै ॥१॥ देखी भीड़ वारणें भारी नरसीजी बतलाया ॥ जीमण आज किणीधर नौतौ मने तेडवा आया ॥ २ ॥ इतरौ भार मनैं क्यूं चौढौ जिहाँ तेडौ तिहाँ आऊँ ॥ हूँ तौ दास न्यात नागरनौ बिना बुलायौ धाऊँ ॥३॥ इतनी सुण सब नागर बोल्या ते म्हांनै कौन बुलाया ॥ नौता साथ बुलावौं दीन्हों जद थारे जीमण आया ॥४॥ कह नरसी लो सुण भाई भवना म्हें नहिं नौता दीन्हाँ ॥ निरधण जांण मसकरी कीन्ही चुगल काम किण कीन्हाँ ॥ ५ ॥ केई हँसे केई मुख मसकोडैं फिर केइ मँहणा बोलैं ॥ न्यातमाहिं तूं नितको जीमैं ऊभौ छातौ छोलै ॥ ६ ॥ कोई कह नरसी करी मसकरी कोई कह कीन्हीं हाँसी ॥ केई छीकैं केई बहुत डकारैं केई कर ऊठैं खांसी ॥ ७ ॥ कहै भवानौं सुर रे नरसी किसि कूँभी घर थारै ॥ मिरदंग ताल शंख धर गहणे युं काँइ हींमत हारै ॥ ८ ॥ सुण नरसी सिवऱ्या गिरधारी आतौ अँवली आई ॥ कह शिवकरण संतकी हाँसी पत राखै म्हारौ सांई ॥ ९ ॥

पद राग मारु

कर करुणा नरसी कर जौड्या भीर परी अति भारी ॥ पलटी जात करणकौं हासी पत राखौ गिरधारी ॥ टेक—गद गद प्राण रौन देह कंपे नैंण नीर झड ल्यायौ ॥ सात उसास-मौंड तन मनकौ नरसी गोविंद गायौ ॥ १ ॥ घरकी बिगत सकल तुम जाणौं ना कोई देत उधारो ॥ आज अणी सरका-रण गहणौं राग धरूं केदारौ ॥ २ ॥ अब प्रभु आया छुडा र लीज्यो नहिं तरहूँ भर पायौ ॥ पांच पचीस पचास साठ

सौ पायौ सौंहि कमायौ ॥३॥ पंडवाँ काज दौर हरि आया पात सिरी सुख पायो ॥ श्रापा दैन दुरवासा आयो छिनमैं पेट अघायो ॥ ४ ॥ ईसरके ऊकलते ऊन्यो दास धनाके धायो ॥ बीज बांट भगतानैं दीन्हौं बिन बोयो निपजायो ॥५॥ जन कबीरकी करी मसकरी याकी या विधि कीन्हीं ॥ देस देस नौताकी पत्री लिखि परबारी दीन्ही ॥ ६ ॥ जुड बहु साध मुलकके आये जहां लगी नौंतो फेन्यो ॥ सब मिलि द्वार कबीर भक्तकौ आन अचानक घेन्यो ॥७॥ वह विधि-आज भई नरसीकी ज्यूं गजराज उधान्यो ॥ कह शिवकरण शरण नरसीलौ जुग कारण सान्यो ॥ ८ ॥

सिन्धूं

नरसी वचन तणीं कर गिनती पांच अरब पच्चीसां करोड़ ॥ लाख पचास हजार साठशत इण विधि आई पूरी जोड़ ॥१॥

पद राग बरवौ

अब नरसीजी सुमिन्यो हरी ॥ हात जोड़ने करुणा करी ॥ टेर-केदारो कागद लिख लियौं ॥ सेठ तुलाधरके घर गियौ कह नरसी धन नामौ करौ ॥ राग केदारौ गहणैं धरौ ॥१॥ सेठ कहैं सुन नरसी बात ॥ लौक हँसे तनैं सगली न्यात ॥ तूइमकिम कालाई करै ॥ काईं वस्तु गहणैं धरै ॥ २ ॥ यौ केदारौ पारस जाण ॥ कामधेनु कलवृक्ष समान ॥ धनवंत जाण थारे गहणे धरूं ॥ बीजाको विसवास न करूं ॥ ३ ॥ सेठ

१-वार्ता-यौं सिंधू इस झडकौ उदाहरण समझानों ॥ ऊपर ले पदकी झडी ऐसे है. पांच पचास साठ सौ पायौ सौहि कमायौ ॥ ५, २५, ५०, ६०, १००, नगसी इतनेसे भर पायौ ॥

जाणौ रे इणमैं काइ नही ॥ द्विजमुख अञ्जल पडसी सही ॥
केदारौ थारौ तू ले जाय ॥ ले रुपियाने विप्र जिमाय ॥४॥
कह नरसी केदारौ धरौ ॥ धनकनामौं म्हारा हातकौ खरो ॥
देसी तौ म्हे लेस्यां वरां ॥ नहिं तर विप्र जीमसी खीरां ॥५॥
देस्युं व्याज समूल चुकाय ॥ फिर केदारौ गास्यूं जाय ॥ कह
शिवकरण वचन इमि कर्यो ॥ रुपयो साठ केदारौ धर्यो ॥६॥

पद राग चाल गरभा

खोलै रुपिया साठ नरसी ल्योयो रे ॥ काईं हरष्यो नागर साथ मन हुलसायो रे ॥ टेर-ल्यावो मेवा मिसरी खांड घिरत मंगा ज्यौ रे ॥ काइँ करज्यौ हातोंहात वार न लाज्यौ रे ॥१॥ हूक्यो सगलौ साथ पाक बणावै रे ॥ काईं भांत भांतका शाक कौण बणावै रे ॥ २ ॥ लागौ हरिनै भोग पंगत कीन्ही रे ॥ काईं बैठौ सकलौ साथ पातल दीन्ही रे ॥३॥ जै बोलैं सब मिलि साध सूरचा गावैं रे ॥ काईं नरसी लीन्ही ताल मृदंग बजावैं रे ॥४॥ धुन ब्राह्मण वेद उचार हरिहर बोल्या रे ॥ काईं रिद्ध सिद्ध भण्डार कुबेरे खोल्या रे ॥ ५ ॥ सब जीमैं सहित ननुहार चलूँ भरेछे रे ॥ कांई नरसी दक्षिणा देह तिलक करैछे रे ॥६॥ हम सुण शिवकरण रिसाय संन्यासी कोप्यौ रे ॥ काईं मण्डली नृपपै जाय झगडौ रोप्यौ रे ॥७॥

दोहा

मंत्रवादियौ नग्रमैं, सिद्ध संन्यासी एक ।
विकटबीर विद्या बिषै, वामी विकल विशेक ॥ १ ॥
भक्तभेद जाण्यौ नहीं, जनपर कोप्यो आय ।
नरसीकी निन्दा करी, मंडलिकनृपपैं जाय ॥ २ ॥

पद राग बिहाग

कउतुक देखिये नृपराज । यौ नरसीलौ करै जि ठगाई परचौ लीजै आज ॥ टेर-नाच कूदकर ताल बजावै नेहक न आवै लाज । नागरकुलकी रीत छोड़ी तौड़ी धर्मकी पाज ॥ १ ॥ विधवा नार नजीक राखत निशिदिन करत अकाज ॥ चौर-जार बटफार साथैं धरचो भगतको साज ॥२॥ कंठी माला तिलक छापा बोलत संत समाज ॥ पाटवाज महंत वाज्ये बैठ करे औ गाज ॥ ३ ॥ ग्राम बाहर कोट बांध्यो जांण मोटो राज ॥ झपटकर शिवकरण झगरचो ज्यों संन्यासी बाज ॥४॥

पद राग जैजैवन्ती

नरसीनैं राज बुलावै जी नरसीनै राज बुलावै ॥ कोई दौड़ दौड़कर आवै जी नरसीने राज बुलावै ॥ टेर-एक दौड़ताबिसि एक दौड़चा हल्ले हल्ला धावै ॥ जी नरसी० ॥१॥ हलकारा ऊपर हलकारा अनवन हुकुम सुनावै ॥ जी नरसीने० ॥२॥ केइ खैंचे केइ दे झिझकारा धमकधका हुए जावैं ॥ जी नर० ॥३॥ चुप नागर चुप घरकी नारी चुपाचुपी छिप जावैं ॥ जी नरसीने० ॥ ४ ॥ सूरदास पड़ वनमें भागों सङ्ग कोई नहिं आवैं ॥ जी नर० ॥५॥ कह शिवकरण निर्भय नरसीलो गुण गोविंदका गावैं ॥ जी नरसी० ॥ ६ ॥

दोहा

सादं कसौटी परखिये, बिखौं पड़चां घर नार ।
सूर वीर शिवकरण कह, रणबांगा तलवार ॥ १ ॥
जती परख परनार सङ्ग, मन चञ्चल नाहिं होय ।
सती परख शिवकरण कह, धीरज तजै न कोय ॥ २ ॥

घरका सब गुपचुप हुवा, संग न चाले कोय ।
नकटी सकटी टहलण्याँ, साथ चली दस दोय ॥ ३ ॥

सोरठा

पौस प्रवेशत वार, हरिजन कीन्हीं शंखध्वनि ।
सुनि दौड़े नर नार, भयो अचंभो नृपतकौ ॥ ४ ॥

राग सोरठा

नरसी पहूँचो राज दरबार । पांच सात टहलविया लीन्ही-नकटी सकटी लार ॥ टेर- हरषित वहन उनमुनीं मुद्रा प्रेमपुंजकी धार ॥१॥ निर्भय खड़ो करै हरि सुमिरन देख हँसी संसार ॥२॥ हरिजनकी गति हरिजन जाने लखत न मूढ गँवार ॥३॥ कह मंडलीक सुन्यौ तोहि लंपट, संगले आयो नार ॥४॥ कर पाखंड जगत ठगि खाई, भेख दिगंबर धार ॥५॥ शंख बजावत शंख न आनी, चढ़कर राजदरबार ॥६॥ थारा पथको एक न छोडूं, मारूं खांडे धार ॥७॥ जो थारा बसमें ठाकुर है तो; मांग गलको हार ॥८॥ कह तौनैं मूरत माला बखसे, नहिंतर डारूं मार ॥९॥ नरसी कहै चराचर व्यापक, सबको सिरजन हार ॥१०॥ कह शिवकरण पैज कर आशी सांवलियो दातार ॥ ११ ॥

पद राग मल्लार तथा सोरठा

भीर परी छै भारी माला म्हांने आलज्यौ गिरधारी ॥ टेर-पलटी सभा संन्यासी कोप्यौ लोक हँसे दे तारी ॥१॥ मारणकों मंडलीकको रूतो पलटीं परजा सारी ॥२॥ यंत्र मंत्र टौना नहिं जानूँ मनकी जानौं म्हारी ॥ ३ ॥ कह शिवकरण शरण नरसीलो चरण कमल बलिहारी ॥ ४ ॥

पद राग कालिंगडो

आव रे आव रे सांवरा आंगन घूमर घाल ज्ये रे ॥ टे
तुलसीको पात सूत्रको धागो थारागलनी माला आज्ये रे
आव रे० ॥१॥ सगो समंधी थोरेहूँ नहिं लागूँ तूँ तो भगती
विरद सम्हालज्ये रे ॥ आवरे ॥२॥ घणा दिहाडारी प्रीतडी
सांवरा वचन पुरातन पाज्ये रे ॥३॥ तूँ तो थारो विडद
वज्ये रे सांवरा म्हारी करनी मती न्हालज्ये रे ॥ ४ ॥ क
शिवकरण शरण नरसीलो ठमके-ठमके चालज्ये रे ॥ ५

पद राग मल्लार

प्रभु कांइ न आयो नरसी चीत ॥ टेर–सांझ पड़ी ज
नाचण लागो होगई रात बदीत ॥१॥ जग पटलीज्यूं तूं क
पलट्यो बुद्धि भई विपरीत ॥ २ ॥ हूँ तों राजरे रह्यो भरो
रात्यूं गाया गीत ॥ ३ ॥ पीठ फिरयां सब फिर मग जावें
कांइ भयो न चीत ॥४॥ किनपै जाऊँ कठै पुकारूं म्हारे त
तुमही मीत ॥५॥ विन केदारे हरि नहिं आया रात गई स
बीत ॥६॥ मारणको मंडलीको रूतो भोरहिं करेलो अनीत ॥७
कह शिवकरण शरण प्रतिपालो आंण निभाज्यो प्रीत ॥८

पद राग जिंझोटी

सांवरा रजनी रही थोड़ी ॥ म्हा कालाजी रातली र
थोड़ी ऊगते दिवस मौने मंडलीको मारसी ॥ सांवरा ॥ टे
मैंने तो भरोसो थारो मोकलोरे सांवरा सांकडा रे भाज थार
प्रीति जोड़ी ॥ ऊगते० ॥१॥ रांकड़ो थईने काई बांकडो
बैठो बाला मूघडोन बोलै पडियो ढाल गोड़ी ॥२॥ थार
तो घरमें धन घणों रे सांवरा हारडायी पूंजी कांई होस

थोड़ी ॥ ऊगते० ॥३॥ तुलसीको पातुडौनै सूत्रकौं डोरडौ बेचियां बटै न थारे तीन कोडी ॥४॥ सुमडौ हुवा थी थारी भक्त बिरद लाजसी रै भक्तवत्सल बजवाकी आस छोडी ॥ ५ ॥ कह शिवकरण दरक हूवो वाणियौं नरसियाथी प्रीति वाला कैंम तोडी ॥ ६ ॥

पद राग मल्लार तथा सोरठा

सांवरांसू महुआ नहीं सरसी ॥ टेर-मारणकौं मंडलीको रूतौ मूढ मतौ नहिं टरसी ॥१॥ तुच्छ धनकाज निठुर हुय बैठा या तोकूं कांई दरसी ॥२॥ तीन कोडीको हार न दीनों लोक हँसी रैं थारी करसी ॥३॥ उर दे हार मती तरसावै तू इणरो कांईं करसी ॥ ४ ॥ औंछी पूजीनैं कीरति इधकी काज भगतकौ सरसी ॥ ५ ॥ कह शिवकरण शरण प्रतिपालौ जन नागरियो नरसी ॥ ६ ॥

पद राग खमावच

नरसिया मैं आज गजराजकेसी भीर परी भक्तियानैं भूल सूतौ तांण खूटी ॥ टेर-भक्तिभाव काज म्हारे बाई भाई आवै जाय राजमें संन्यासी कीन्हीं चाडी झूठी ॥ नरसियामैं०॥१॥ बापडा गरीबडाने कांईं कलपावै म्हें तौ भक्ति थारी कीन्हीं किसी बाट लूटी ॥२॥ पैडवांके काज आतो दौड़ द्वारकासू नरसी काज आच आंई टांग टूटी ॥३॥ काढ किरपाण ऊभौ मण्डलीक मारवाने साम्हौं बैठो जोवे कांई आंख फूटी ॥४॥ कह शिवकरण रैकांरारी सखी जैमती नरसियांतें तौंडी प्रीति-जौड पूठी ॥ नरसियामें ॥ ५ ॥

पद राग मारू

करुणासिंधु दयानिधि जनकी अरज तुरत सुन लीन्हीं।
ले केदारो तुरत पधाऱ्या निमख ढील नहिं कीन्हीं ॥ टेर-नर-
सी रूप धऱ्यो नारायण नग्र सेठ घर आया ॥ मूल व्याज
देकर पावोती ले केदारो धाया ॥१॥ बण मंडलीपतकी पट-
राणी जलकोगडवौ हाथे ॥ धनकनामौं राग केदारो दीपावोतं
साथे ॥२॥ हँसि हँसि मुसकि मुसकि मुख निरखत नैनसैन मुस-
कानी ॥ पुरज देखि भये सब विस्मय मंडलीपतकी रानी ॥३
मगन भयौ नरसी कर दरसण दोड वारणां लीन्हा ॥
शिवकरण काज भगतांका ठोड ठोड प्रभु कीन्हा ॥ ४ ॥

पद राग जैजैवन्ती

मनमोहन लटको रानी कौ ॥ टेर-नारीरूप धऱ्यो नाराय
मंडलीपत पटरानीकौ ॥१॥ मन्द हास्य चल चपल नैन मुख
मधुर वैन मुसकानीकौ ॥ २ ॥ इन्द्राणी रुद्राणी लक्ष्मी रू
लजै ब्रह्माणीकौ ॥३॥ घूंघट उघार मुख झपट ढाक भर ल्या
गडवो पानीको ॥ ४ ॥ दे केदारो कागद दीन्हौं निज क
नाम निसानीकौ ॥ ५ ॥ देखत लोग सकल नगरीको मान्य
मान गुमानीकौ ॥ ६ ॥ हरिकूं निरख शिवकरण दरक क
देव धन्य मुख बानीकौ ॥ मनमोहन लटको० ॥ ७ ॥

पद राग केदाराकी चरचरी

ठुमक चाल चलैं रे कन्हैया ठुमक चाल चालै ॥ रुम
झुम रुमझुम रुमझुम रुमझुम ठुमक चाल चालै ॥ टेर-आ
मंडलीकी रानी पायौ नरसियाकूं पानी देखी सारे लोक जानी
नृप उर अन्तर सालै ॥ रे कन्हैया ॥१॥ नरसी गावत केदा

इत होत भनसारौ रविकोटिय उजारौ दुगमुग दुगमुग न्हालै । रे कन्हैया० ॥२॥ झट ऊठे नंदलाला लीन्ही पुष्पनकी माला नाचैं घूमैं मतवाला ॥ माला नरसीके गल घाले ॥ रे कन्हैया० ॥३॥ नरसियांको स्वामी शिवकर्ण अंत्रजामी अनन्त बाहूँ घणनामी सन्तनको प्रतिपालै ॥ रे कन्हैया० ॥ ४ ॥

दोहा

प्रथमहि ले हुंडी लिखी, सों प्रभु दीन सिकार ॥
राणी हुय पाणी पर्यौं, दयो गलको हार ॥ १ ॥
मंडलीकौ राजा नम्यौ, जाण रसियों संत ॥
भक्तांका कारज प्रभू, ऐसे किये अनंत ॥२॥
अशरण शरण दयानिधि, दीनबंधु महाराज ॥
सुखसारण बजिये सदा, प्रभु सारे सब काज ॥३॥
कह्यो तत्त्व संक्षेप अति, माला बहु विस्तार ॥
कथा बढ़े शिवकरण कह, सकुच लयों ततसार ॥४॥
हरि हरिजन हिरदे बसौ, म्हे संतनकौ दास ॥
जन महिमा शिवकरण कहि, भयो द्वितीय प्रकाश ॥५॥

इति श्रीभक्तवत्सल रागकौतूहल नरसीमेंहेताका
मामेरो द्वितीय प्रकाश समाप्त ॥ २ ॥

तृतीय प्रकाश ३.

दोहा

श्रीगणपति गुरु हरि सुमर, हिय धर प्रेम हुलास ॥
महिमाँ माहेरा तणी, वरणूं तृतिय प्रकाश ॥ १ ॥
नरसाजीके डीकरी, नान्ही बाई नाम ॥
व्याही श्रीरंगके घराँ, नग्र अंजरा सुग्राम ॥ २ ॥

जास सुताके लग्नको, श्रीरङ्ग कियो उछाव ॥
नौते सकल बिरादरी, नागरकुलको भाव ॥ ३ ॥
सोलासो सोलौ तडौ, विक्रम संवत जाण ॥
चवदासौ इकयासियौ, शाके शालिवहान ॥ ४ ॥
माघ कृष्ण भृगुसत्तमी, कूंकूंपत्र लिखाय ॥
नागर सब मेला हुवा, जाजम दई विछाय ॥ ५ ॥
प्रथम लिखौ गणईसकौ, पुनि जूनैगढ़ जाण ॥
ता पीछे सब जातमें, फिर सब जाण पिछाण ॥ ६ ॥

राग मारू

कूंकूंपत्र लिखा जूनेगढ महता नरसी नामैजी ॥ नग्र अँजा मिले सब समदी, बहुविधि लिखे प्रणामौ ॥ टेर-सिद्ध श्रीजूनागढ़ शोभित, नरसीजी बड़ा नामौ ॥ बाल गुपाल सकल समदीसें श्रीरंग लिखे प्रणामौ ॥१॥ कुंवरबाईको ब्याह रच्यो छे, नौमि मंगलवारो ॥ देबा लेबाकौं नेग नहीं छे, मोहे रीजपधारौ ॥२॥ तुमारी कन्या ओलूं करेछे इण, अवसर तो आज्यौ । अडूवौ कडूवौनैं आखली पाखली, बालगोपाल सब ल्या ज्यो ॥३॥ समग्र मिति श्रीनामौ दीन्हो, डौसाजीके हाथे । जूनेगढ़ समदीके जाज्यो, लेकर आज्यो साथे ॥ ४ ॥ क शिवकरण विप्र मन सोचे, डोल्यौ फिरचौ न जावै ॥ अतह दूर बसे जूनोगढ़; पन्थ चलत कब आवै ॥ ५ ॥

दोहा

पंच लिखी बहु पत्रिका, गवने निज निज धाम ॥
देने लगे कासीदकौं, ले ले सबको नाम ॥ १ ॥

नरसीजीकी पत्रिका, विप्र कौकल्या हाथ ॥
जूनेगढ़ अतिवेगतैं, लेकर आज्यौ साथ ॥ २ ॥

पद राग बरवौ चाल मारू

चौपाई

कूंकूंपत्र हाथमें लयौ । नन्ही बाईसों मिलबा गयो ॥
जाय कौकल्ये ऐसी कही । जूनेगढहूँ जासू सही ॥ १ ॥
सुणकर मतौ कियो परिवार । नरसी आया हुस्यां खुहार ॥
मुड़ियौ संख बजासी धाय । लोक हँसैंला तुमने आय ॥२॥
जब श्रीरङ्ग डोसीपे गयो । सब वृत्तांत मुख सेती कियो ॥
कोईऐसी विधकीज्योमाय । नरसी अपणैं द्वार न आय ॥३॥
तबै डोकरी मतौ उपाय । लघु पुत्र नारायण बुलाय ॥
अनमिल लेवौ सूज मँगाय । उनकौं मिलैं न अपने आय ॥४॥
कहे डोकरी भेद बताय । नरसी जूनै गढ़ रहि जाय ॥
जो आवे तो लेकर आवै । नांतर जूनैगढ रहि जावै ॥५॥

दोहा

लघु मौटी भेली हुई, समदण राणोंराण ॥
कहे डौंकरी सौंज सब, लिखवा लग्यो नराण ॥१॥

पद राग

सासु ननद दिवराणी जिठाणी सब मिल बैठी आयके ॥ द्वात कलम कागद मंगवाये लेखक लयो बुलवायके ॥ टेक-सवा-पचीस मण लिखो सुपारी सवा पचीस मण रोरी ॥ सवा पचीस मण लिखो कलेवो अरु मेवणकी बोरी ॥ १ ॥ हजार थान महमूदी लिखदो साल दुसाला कदडा ॥ ठठा करे नरसीका ब्याही बखता बरछ बापडा ॥ २ ॥ असी हजारतो मोहोंर

लिख द्यो क्रोड पपेया रो करी ॥ कागद मैं दोय भाटा लिखदो उठ बोली डोकरी ॥३॥ लाड बहू कह कुंकुंबाईन कागदमांहि खा ज्यो ॥ पायलन रमझोल अगौटा म्हांके कारण लाज्यो ॥

पद राग बरवौ चाल मारू

चौ०–नान्ही बाई बोली थे तौ लिखौंई इती ॥ म्हारे सासारिये णे तो आज्योही मती ॥ टेर–म्हारी तो सासुजी छै माहेराकी ख्यांत ॥ माहेरो जुडैं तो लेकर आज्यो भली भांत ॥ १ ॥ इतरो तौ सन्देशो म्हारो कह दीज्यो जोसी माहेरा विना तो थांरी हांसी ही होसी ॥२॥ आगे तो कि यावर कारज चोखा थे किया ॥ दौडवते वडदात म्हानै दाय दिया ॥ ३ ॥ माहेराकी बेला आई विखत करूर ॥ आवण हुये तो खरच्यां ल्याज्यो भरपूर ॥४॥ सूरतकी बरात आस बरहोटी देसी ॥ माहेरो भरस्यो तो भात थांको बी लेसी ॥५ नेग जोंगनै चूडांचूनी घोड़ चली चडसी ॥ इतरी तौ करिय वर थांने करणोंही पड़सी ॥ ६ ॥

दोहा

घरकौं ब्राह्मण कौकल्या, श्रीरंग लयौ बुलाय ।
पहली दीन्ही पत्रिका, यौं कागद लै जाय ॥ १ ॥

राग सोरठा बरवौ चाल मारू

घरको बिराह्मण लियो छै बुलाय ॥ कूंकूंपत्री लेय पां जूनागढ जाय ॥ टेर–म्हारा तौ सगांने पांडे राम राम कह ज्यो ॥ एक तौ दिहाडो महता नरसीके घर रहज्यौ ॥ १ खरचीतौ बांद ब्राह्मण बिदाज्ञ भयो ॥ जिण दिन तौ डोसौज बैठ बजारां रह्यो ॥२॥ मोड़ो वेगो घरे पौंचकर तयारी कर्ी

ऊगते दिहाडे पंथ चालणा खरी ॥ ३ ॥ गरमां है भाला-
वण दीघी जावतांसू रीज्यो ॥ मोडौ बेगौ आऊँ तो निचिंत
थे तो रीज्यौ ॥ ४ ॥

पद राग सोरठा

लीधी छीजी डांगडी हात डौसीजी तोली धीछेंजी डांगडी
हात ॥ टेर-कागद खोसियो छे पोतियाके माहीं ॥ धोतियो
लीधौ छे सात ॥ कांधे कांमलोने हातमैं हांडी खरभर चालैछे
परात ॥ कौस पूणपर दिन आथवियौ पडीछे अंधेरी रात ॥
चनणियाके रूखडे जाइनै सुतो सूझैं नहीं हातनै हात ॥२॥
रात अँधेरी विप्र अकेलो संग न कोई साथ ॥ कह शिवक-
रण बिकल भयो ब्राह्मण खडबड धूज्यौ छे गाथ ॥ ३ ॥

पद राग मारू

दूज्यो दिन तो चाल्यो जोसी करकर मनमें रोस ॥ बागां-
तांई पौंच्यौं जिणरौ किणने दीज्ये दोस ॥ टेर-बुढलौ बिरा-
ह्मण थाको सूतो खूटी तांण ॥ आकासांसु आय
सिरीठाकुरका बिवांण ॥ १ ॥ ऐसा बूढा ब्राह्मण ऊपर कियौ
उपकार ॥ छिनमें पौंचायो जूनागढके बजार ॥ २ ॥ वसती
तौ देख पांडचो अचंबे रयौ ॥ किसी तो नगरी मैं हूँतौ
आय गयो ॥३॥ चिक्रित भयो छे पांडचो करे छे विचार ।
कह शिवकरण पूछे नर नार ॥ ४ ॥

दोहा

पूछे जोसी कौकल्यो, योछैं किसडो गांव ॥
पंथ भूल आयौ अठे, सांच बतावौ नांव ॥ १ ॥

कहे नग्रके नार नर, जूनोगढ छे नांव ॥
सुनकर हरख्यों कौकरिख, नरसीजीको ग्राम ॥ २ ॥

पद राग मारू

श्रीरंगब्याही जोसी भेज्यो विप्र कौकल्यौ आयौ ॥ जूनागढ़ की गली गली फिर नरसी भवन न पायो ॥ टेर—भटकत फिरे पूछतो पांड्यो किंणिहि न भवन बतायो ॥ ब्याकुल भयौ भटक कर बैठो एक मसकरो आयो ॥१॥ किसूं बधाई देसी रे पांडे नरसी भवन बताऊँ ॥ उनकी कोठी नग्र किनारे रोकड खरची पाऊँ ॥ २ ॥ च्यार टकानै एक कामली उदरे म्हारे हाथे ॥ महताजीको भवन बतावण जद हूँ चालूँ साथे ॥ ३ ॥ काहे कोकल्यो सुण भाई भवनांच्यार टकाले कौरी ॥ कामल दिया ठंढ मरजासूं रात काढणी दौरी ॥४॥ नरसीके घर साल दुसाला ओढण सोर पछेरी ॥ गरम पोसने औ दुलाई करे जाबता तेरी ॥५॥ मनमें सौच करे कोकलियो फिर कुण पंथ बतासी ॥ कह शिवकरण कामली लीन्हीं करी मसकरे हांसी ॥६॥

पद राग मारू

भवनै महते करी मस्करी जौसीने भरमायो ॥ कामल खोस काख मैं घाली फिर नहिं भवन बतायो ॥ टेर-कहे भवाणौ सुन कौकलिया हूँ थारे साथ न आऊँ ॥ नरसी बड़ नग्रसेठ है सन्मुख हूँ सरमाऊँ ॥१॥ नग्र किनारे कृष्णसरोवर बाग बगीचा भारी ॥ हवा महल असमानी बंगला नरसी कोठी डारी॥२॥ सैन बताय हात अंगुलीसों भवना पाछौ आयो ॥ कह शिवकरण काकरिगि सुधकर नरसी भवन सिधायो ॥३॥

पद राग सोरठा चाल मारू

पाणीकी पिणिहारचां थे तो कीज्यो उपकार ॥ म्हाँने तो बतावौ म्हेता नरसीको दरबार ॥ टेर-आम्हाँ सम्हाँ औबराने तिलक मांडय ॥ सुरज साम्हीं पौल महता नरसीकी पांडय ॥ १ ॥ किस्या देशको बासी पांडचा जासी किसडे गाम खडियो आयो दूरको थारे नरसीसूं कांई काम ॥२॥ जोसी बोल्यो कोकल्यो जीवेगो भवन बताय ॥ कह शिवकरण सती-बीसूं हूँ नरसी भेटूं जाय ॥३॥ कृष्णसरोवर न्हाये रे पांडचा ऊंडो छै अपार ॥ साम्हाई दीखै छै म्हेता नरसीको दरबार ॥४॥

पद राग मारू

अतिमणीक देख थल उत्तम धाय चल्यो ब्रह्मचारीजी ॥ नरसी मेहता ताल बजावै निरत करै सुत नारी ॥ टेर-सूरदास दस बीस विराजैं लूला लंगड़ा कोढ़ी ॥ पांच सात टहलिया बैठी गूँगी बहरी मोड़ी ॥ १ ॥ तुलसीबन फुलवाड़ी फूली बेल तूमणांऊणी ॥ उड़ गयो फूस झूँपड़ीनी अदविच दीन्ही थूणी ॥२॥ चींचण माकड और कसारी कोल ऊंदरा दोडे ॥ सामगरीमें ठाकुरसेवा शंख धरे दश चोडे ॥ ३ ॥ अचरज भयो देखि जासीकूं खड़ा पौलके छाजे ॥ कह शिवकरण रामधुन गावे ताल मृदंगा बाजै ॥ ४ ॥

पद राग सोरठा चाल मारू

पांडेजी तो जाय पौलो मांहनै धस्या॥ बैठोडा साधूडा हड-हड़डी हंस्या ॥ टेर-मानदास अरू ध्यानदासके मनमें पांडचो भायो ॥ ज्ञानदासजी बोल्या यों तो नौतौ देवण आयो ॥१॥ आखण पडिया डोसोजी अलूज गई पौत ॥ साधूडां जाण्योरे

पांड्यो करै छै डंडौत ॥२॥ परमहंसजी राजीं होगया भगत
भलाई आयौ ॥ कह शिवकरण घणां दिन हौया मी
भोजन पायौ ॥ ३ ॥

पद राग मारू

थाक्यो ब्राह्मण उठ्या न जावे पस-या आंगण मांहीजी ॥
घांसी स्वास खासमैं उलज्यो बोल्यो जावै नाहीं ॥ टेर-आं
हुये नरसी बोल्या क्यूं थे भारचढ़ावौ ॥ म्हाने तौ मत करो
डंड़ौतां ठाकुरने विडदावौ ॥१॥ सांच विप्रको करिख मनमें
यहां तो दालिद छायो ॥ नागर न्यात गई सब निरफल श्रीरंग
सगपण पायौ ॥ २ ॥ कूंकूं पत्र सुपारी कर धर तांदुल पीत
झलाया ॥ कुंवराबाईको व्याह रच्यो छै तुमने तुरत बुलाया
॥३॥ गाठ दाम ह्वै महेरो भरज्यो नहीं तो मिलता आज्यो ॥
गीतहगाम च्यार दिन रहिनैं माढ मंडप छाज्यों ॥४॥ क
कौकलियौ सुन नरसीजी भूख लगी छै भारी ॥ मारग चल्यो
मिलि विध नाहीं भोजन करौ तयारी ॥५॥ घरमें चून अ
नहिं आखों रोकड दाम न कोई ॥ साकपाक नहिं सूक
पाका नां कोई रांधी पोई ॥६॥ बरतन धातु नहीं घरमाहीं
गिरवे जाय धरवां ॥ विरत अकाश भरोसै बैठा ठाकुरका गुण
गांवा ॥७॥ जौसी भणै सुणौं नरसीजी दूर देशसूं आयो ॥
कह शिवकरण पंथके माहीं भोजनसे नहिं धायो ॥ ८ ॥

पद राग सोरठा चाल मारू

बूठलो बिराह्मण बोल्यो दूजो कागज लेवौ ॥ रसोई करांला
म्हानैं आटौ वेगौ देवो ॥ टेर-देवानें लेवनें जोसी रामजीके
नाम॥ तुलसीकी माला सेवा सालगराम ॥१॥ मिश्री मेवाला

पेड़ा रामजीको नाम॥तुलसीदल ले जारे चावे रोकड़ दाम॥ ॥२॥म्हकां तौ रसौवड़ाको योही छे सरा ॥ मोटी माला लैल्यौ बैठा भजन करा॥३॥साधूड़ाके जोड़े बैठा गावो होडां हौड ॥ आथण पहली ताजा भोजन देसी रणछोंड़॥४॥कूंकू-पत्री बांच नरसी मगन भया॥ म्हानैं म्हाकाव्यांयां भला याद तौ किया॥५॥ घरमैंसे बोली महता नरसीजीकी नार ॥ कूंकूं पत्री झेलण मोडच्या ह्वै गयो तयार ॥ ६ ॥ थांका तो घरमांही आगे अनकी छे भूख ॥ क्यूं कर थेतो करस्यो माहेराको जी सालूक॥७॥थांकातोघरमांहेनहींपावहीजवार ॥ माहेरो भरवाने मोडच्या ह्वैगा तैयार ॥८॥आंधला गरलावै रोवै मांगै रोटी ॥ गांवका आटासूं वामन कर नीना खोटी ॥९॥ बोली रेज्या चुपकी तू तौ घरकी है नार ॥ तोनै म्हारामाहेराकोकांई आयौ भार ॥१०॥ साधूडारी टैल करिज्यौ चालौम्हांकी लार ॥ चोखा मोठा भोजनियां जीमोंनी दिन चार ॥११॥

दोहा

तब दोनूं सुत बोलिया, माहेरे किन जाय ॥
घर तुलसी दल छावमैं, दीज्यी सब संख बजाय ॥१॥
दस माला तूमडा, रामरज्ञ भर लेह ॥
दोय दोय छापा तपत, कर जाय सगरी देह ॥२॥
सुण हाक्यो वाक्यो रह्यो, जोसी करे विचार ॥
श्रीरंग कीन्हीं मसकरी, मोकलियो इणद्वार ॥ ३ ॥
कोकलियो कुर लायके, पड्यो धरण मुरझाय ॥
सुख पूछे सहलायके, नरसी कंठ लगाय ॥ ४ ॥
जोसीकूं नरसी कहै; ये त्रिय पुत्र अज्ञान ॥
तुम चित्तमैं कसमैं मती, धरो हरीका ध्यान ॥ ५ ॥

भूचालो भूखा मरूं, तै नहिं दीन्हों चून ॥
श्रीरंग कीन्हीं मस्करी, जल्यो जात मम खून ॥ ६ ॥
नरसीजी तूम्बो दियो, आटा ल्यावो मांग ॥
इन्धण ल्याजों आवता, यहां नहीं लूण अरु साग ॥७॥

राग मारू

कह कोकिलियो सुण नरसीजी भीक भऱ्यां नहिं कोईजी ॥ कर कासीदी पेट गुजाऱ्यो इण विधि ऊमर खोई ॥ टेर-जब नरसी करुणां कर उठ्या सबके जाय जगाय ॥ हात तंबूरो गद गद वाणी राग केदारो गाय ॥१॥ कृष्ण कृपा कुबेर बुलायो विसकरमा भी साथे॥ इन्द्रा और इन्द्राणी आया जलभर ल्याया हाथे ॥२॥ शूपकार हेमाड पंथ और भीम आदि चलि आये ॥ खाद्य साद्य अरु चोख्य चोस्य विधि खटरस आन बनाये॥३॥नाना रंगति रंग सुरंग भोजन विधि बनाये ॥ मानों आज पाठशालामै शूप रूप धरि आये ॥ ४ ॥ छप्पन भोग छतीसूं व्यंजन चटणी और अथाणुं ॥ कह शिवकरण अलप मति मोरी कबलगि पाक बखाणुं ॥ ५ ॥

दोहा

लग्यो भोग परब्रह्मके, अचवन दीन्ह कराय ॥
ले बीरी अरपन करी मोछन दियो धराय ॥ १ ॥
पंगतिकी त्यारी करी, लयो हरीहर नाम ॥
भर गडवा शिवकरण कह, बैठे निज निज ठाम ॥ २ ॥

पद राग मारू

अगणित सूंज अजब अनऊपम भवनमांहि नहिं मावेजी ॥ देखत थकित भये ब्रह्मादिक वरखत पार न पावे ॥ टेर-

कञ्चन थाल जटित मणित माणक प्याला रतन जड़ाया ॥
कनककलस गङ्गाजल डाले सब लोटा अघड़ घड़ाया ॥१॥
त्रिविध बयार भवन गरणावै महिमा वरणि न जावै ॥ उष्णोद-
कमैं अजब सुगंधी डोसौजी तिन्हां न्हावै ॥२॥ अष्ट सिद्धि
नव निद्ध विराजैं देह धारकर आई ॥ कामधेनु कल्पवृक्ष
चन्द्रमणि चित्राबेली छाई ॥ ३ ॥ चवदै विद्या राग बाजंतर
नृपसहित चतुराई ॥ बन्दीजन गांध्रव विद्दुचारण भाटवंश
विरदाई ॥ ४ ॥ भूषण वसन देखि नानाविध जौसीके मन
भाये ॥ करत विचार उझकि मनहीं मन कहौ कहांते आये ॥५॥
निश्चय चोर येह नरसीलौ के कोई मारग मारे ॥ बस्ती छोड़
जंगलमें बैठो नहीं किसीके सारे ॥६॥ के अणिमादिक वश
कर लीन्हीं पारस लौह लगायो ॥ येती सोज नृपति गृह नाहीं
कै घड़ियों धन पायो ॥ ७ ॥ भोजन देख तुरत मत पलटी
तांत्रवादिवौ जाण्यौ ॥ भूत खदेड मंगाय मिठाई मेलो मंत्र
पछाण्यौ ॥८॥ नानाविध पकवान सलौना देखत मन ललचावे ॥
रंग रंग नवरंग मिठाई विविध सुगंधी आवै ॥९॥ खांयां धरम
करम सब नाशै बुद्धि भ्रष्ट हुई जासी ॥ बिन खांयां मनमें रह
जासी एक रोज एक हासी ॥ १० ॥ परुस्या थाल छोड़कर
जौसी नरसी परसी सायौ ॥ करिया विटलकरण रे कारण हूं
थारे घर आयौ ॥ ११ ॥ कह नरसीलौ सुण जौसीजी जीमैं
ठाकुर आपौ ॥ कनकामात्र मिल्यां कट जावै जनम जनमका
पापौ ॥१२॥ नरसी संग कौकऋषिजीमें ब्रह्मा परुसण आवै ॥
इन्द्राणी ब्रह्माणी सगतीलछमी गारी गावै ॥१३॥ औ नाग
देव ऋषि कन्या मिलमिलके बहु धावैं ॥ कह शिवकरण रूप
जौसीका धनि धनि भाग सरावैं ॥ १४ ॥

दोहा

जौसी जीमैं जुगतसैं; परुसै त्रिभुवनराय ॥
बार बार मनुहार करि; बहुत निहोरत आय ॥ १ ॥

पद राग विहाग डौरी

जोसीजी भलां पधाऱ्या म्हारा मनरा कारज साऱ्या । टेर–थे तो जीमौ जौसी राजा ॥ सीरो खीर खांडनै खाजा ॥१॥ थांका मौटा दांत अगारी ॥ जासूं देख डरे नर नारी ॥२॥ थांकी डाढ खड़ाखड़ खटके ॥ थांका होंठा ऊंटसा लटके ॥३॥ जौसीजी आख्यां काडे ॥ डाकणसा डौला फाडै ॥४॥ थांकौ नाक मींडका जैसो ॥ जाणो अंग आरणो भैंसो ॥ ५ ॥ थांको पेट चडसमो झलके ॥ माहे गङ्गा जमुना खलुके ॥६॥ मुख बोलत डांडर लागे ॥ ज्यासूं टाबरिया डर भागे ॥७॥ जौसी खीर सबौड़े ॥ जाणौं दौड़ै करीछे घोड़े ॥८॥ न्याही काजल काढ्यौं नीको ॥ थांके रंग रंगीलौ टीको ॥९॥ जौसीजी चूल भरे छे ॥ जाणै सिंह डकार करै छे ॥१०॥ अब मौछनपान मंगावो ॥ न्याहीजीरा हौठ रंगावो ॥ ११ ॥ लछमी गारी गावे ॥ धनि साहा शिवकरण सरावे ॥ १२ ॥

दोहा

जीम झूठ पूरण भये, कर भोजन भरपूर ।
फिर दूजी पंगत भई, जीमैं लूलहा लंगड़ा सूर ॥ १ ॥
संतनके संग सांवरो, जीमैं त्रिभुवननाथ ।
देवऋषीश्वर नारिकौं, नरसी परुसै हाथ ॥ २ ॥
सब जीमैं मनुहारतें, बहुत अघाय अघाय ।
सुरसुरपति जदुपति सकल, निज निज धाम सिधाय ॥३॥

नरसीजी आसण दयो, कथा कीरतन सार ।
जब जौसी कह लौटिके, फाटत पेट अपार ॥ ४ ॥
लुटैं धरण बोल विकल, जौसी करै विलाप ।
पेट फाट परस्यूं अबहीं, प्रगट्यो पूरब पाप ॥ ५ ॥

राग मारू

लुटपुट करै धरनपर लोटे बोलैं वचन अकराजी ॥ अजर अन्न भोजन करवायो जासी प्राण हमारा ॥ टेर-कह नरसीजी सुण जौसीजी कृष्ण भजत चित दीज्ये॥आसन मार अडिग हुय बैठो भजन बन्दगी कीज्ये॥१॥ कहकौकरिष सुन नरसीजी टाबरिया रुल जासी ॥ बूढी नार विभो घर नाहीं उणरै कौण कमासी॥२॥खोटी दशा करमकौ पेरयो हूँ थांरै घर आयौ ॥ भाग्य संजोग मिली विध ऐसी अजर अन्न मुख पायौ ॥३॥ बिगड्यौ लौक प्रलौक अधम गति भ्रष्ट कियो रे भाई ॥ भूत खदेड गँगाय मिठाई तैं मोहि आन खवाई ॥४॥ तब नरसी करुणा कर टेर्यो अश्वनिकुमार बुलाये ॥ जीवणमूर हडू विद्रु अमृतशुक्र धनवन्तरल्याते॥५॥देमौछनेखुमार मिठाईजीमणकी मन आई ॥ ऐसे भोजन शाक सलौने कहां मिलैंगे भाई॥६॥ लागी भूख अजीरण भागीवायकिलकिलाजागी ॥शोख समुद्र नीरबडवानल ऊद्र जगी जठरागी ॥७॥ मनमें कहै मांग नरसीपैं पालैं बांधलेजासूं॥ सरमांमरतौं यहां नहिं जीमूं बैठ इकंतर खासूं ॥८॥ जौसी मैं तो लख्यो नारायण छाव सिराणैं मेली॥ कह शिवकरण खाय सँगलीन्हो दिलकी दुरमत पेली॥९॥

पद राग मारू

पौढ़न धरन सांथरी फागी नैण नींद नहिं आईजी ॥

चींचड़ माकड डांस जुवां अत्ति बद्द दुख रैण विहाई ज्यूं ॥ त्यूं करके रात निकारी भइ अजगरी भारी ॥ सीख मांग श्रीरंगनौ जौसी विदा हुवे ब्रह्मचारी भयो विहान निरख नरसी गृह संपत दीखै नाहीं ॥ कांहां वह महल माल धन माया लोप भई छिनमाहीं ॥ २ ॥ बोले नहीं दसूं दिस डोल कहत सुनत संकोच ॥ चित्र समान भयो भ्रम भारी विप्र मनहिंमन सोचै ॥ ३ ॥ कह नरसी लौ सुण जौसीजी म्हें थांके घर आस्या ॥ सरधासम माहेरौ भरसा जहां थानैं विदा दिरास्यां ॥ ४ ॥ मन चाहै तौ अबही लेल्यौ रामरंज घरमाहीं ॥ तूंबी तूंबी गोपीचंदन थासूं दुसरा नाहीं ॥ ५ ॥ बड़ा संख रामेश्वरवाला इजेविजे दोय देखौ ॥ लंब अवाज बजाय मुखसूं आछीभांत परेखौ ॥ ६ ॥ जौसीजी थे भलां पधारयां म्हांपर किरपा कीज्यो ॥ धिन धिन भाग भलौ दिन म्हाकौ फिरकर दरसण दीज्यो ॥ ७ ॥ मनमें कहै सकल भर पायौ जीमतडा घर जाऊँ ॥ जूनागढ़के पंथ पांव धरे फेर कदे नहिं आऊँ ॥८॥ नमस्कार कर चल्यौ विराह्मण विनय परस्पर कीन्हीं ॥ बेगा आज्यौ माहेरौ ल्यायज्यो घणी भौलावण दीन्हीं ॥ ९ ॥ जोसीजी निज सकुन विचारै टुगर मुगर पंथ जोवै ॥ छूटी गेल जोवतौ जासूं सकुन भलेरा होवै ॥ १० ॥ पंथ पलाय दिवस दस चाल्यो नगर अंजारा पूगो ॥ कुशल क्षेम सब पूछ परस्पर आज भलौ दिन ऊगौ ॥ ११ ॥ नरसीजीकी समदेण पूछै किस्यूं बधाई पायौ ॥ पांवण चार कियो कितना दिन कांई सन्देसो ल्यायौ ॥१२॥ कह कौकलियौ सुण सेठाणी समदी मण्डप आसी ॥ मामेरामें गोपीचंदण मिरदंगा ताल बजासी

॥ १३ ॥ संख तंबूरा झालर वीणा मौरचंग औ वंगा ॥ साथे सूरदास दसवीसक चरच तिलक चितरंगा ॥ १४ ॥ कह शिवकरण डरी मनमाहीं श्रीरंगजीकी नारी ॥ जैसी तणीं हकीकत सुणकर हुवौ अचंबौ भारी ॥ १५ ॥

इति श्रीभक्तवत्सल बिडदरागकौतूहल नरसीमेहेताका मामेरा
तृतीय प्रकाश समाप्त ॥ ३ ॥

चतुर्थ प्रकाश ४.

दोहा

इत थोरे दिन व्याहके, नरसी कर मन सोच ।
जेहुं तो ले जेहूं कहा, नहिं जेहूं तौ पोच ॥

पद राग मारू

श्रीपति श्रीरणछोड़ सुमरकर नरसी जाजम ढारीजी ॥ भाई बंद सब भेला कीन्हां घरकी बात बिचारी ॥ टेर-अक्षत पीत दियै सबहीकूं पत्री आन बचाई ॥ नमस्कार लिख नाम-प्रनामें भेजी श्रीरंग बाई ॥ १ ॥ कुंवरबाईकौ व्याह रचौ है सब मिल माहेरे चालौ ॥ न्यूं पात सरधा सम कीज्यौ एक कापड़ा तो घालौ ॥२॥ सुनकर हँसे सकल भाई बन्द अच्छी बात बिचारी॥ श्रीरंगके घर रच्यौ स्वयंवर किति एक सरधा थारी ॥ ३ ॥ तब नरसीजी सौज बतावै पंचां आगल मेली ॥ गंगा गौली गोपीचंदन राम रंजकी थेली ॥ ४ ॥ तुलसीदल और डामरैंणुका तुंब लंगोटां टौपी ॥ बिचमैं संग गोपाल विराजे सौंज भली विध औपी ॥५॥ कोइ एक वचन मरमका मारै कोइ एक मुख मसकौड़े ॥ केइ मौसा केइ महणा देवै केइ छानै केइ चौड़े ॥६॥ कह माधौ भट सुण रे

नरसी काम घणौ घर म्हारै ॥ सूरदास दस लंगड़ा लूल्हा साथै सो है थारै ॥७॥ मरदंग ताल पखावज लै लै सब मिल हर-जस गासी ॥ संमदीकौ किरतारथ हौसी दरसण सौ तिर जासी ॥ ८ ॥ भायाकौं नरसी समझावै जीमौ घृत और खाजा ॥ पांवण चार मास इस करसां बणौ डीलमैं ताजा ॥ ९ ॥ कह सुन्दर भट सुण रे नरसी तैं कुलरीती छांडी ॥ नागरन्यात तणीं पत खोई निपट पेटकर मांडी ॥ १० ॥ कोई कर छींक कोई कर हिचकी कोई कर ऊठे खांसी ॥ कर कौगत सबही उठ भागा भई नग्रमें हांसी ॥११॥ तब नरसी करताल उठाई गुन गोविंदकौ गायौ ॥ कह शिवकरण हाथ धर पत्री पंथ द्वारका धायौ ॥ १२ ॥

दोहा

पत्री तुलसीपत्र धर , कर चंदनकौ लेप ।
चल्यौ दैन श्रीकृष्णकौ, विप्र मान मन छेप ॥ ११ ॥
पंथ द्वारका पीपली, धरी पत्रिका जाय ।
कर करुणा नरसी फिरचो, जदुपति लई उठाय ॥ १२ ॥

पद राग सोरठा

सगांरा कागद आया छै जी सांवलासाय ॥ टेर-महता नरसीने तो कोई नहिं जाणैं थानैं तो छे म्हाका साय ॥ महता नरसीजीकै दोहिती जनमी जिणरो रच्यो छैं बिवाय॥१॥ भाईबन्द सब हँसी करत हैं ताल बजाय बजाय॥ करुणानिधि प्रभु बार न ल्याजो वेगा आज्यो धाय ॥ २ ॥ जौ जौ सूज लिखी कागदमें लीज्यो सकल मँगाय ॥ हूँ तौ नाम ठाम नहिं जानूं कौन बस्तु कांइँ भाय ॥ ३ ॥ मोपै दाम टकौ

नहिं कौड़ी कीज्यो आवै दाय ॥ मौनें हसैं जैसे थानैं हसेला-दीज्यो मती मान गमाय ॥४॥ करुणा सुन शिवकरण दया-निधि आकाशवाणी सुनाय ॥ नागरिया कांइ सोच करौ छौ हरि भगतनके सहाय ॥ ५ ॥

पद राग सोरठ चाल मारू

नान्हीं बाईरा माहेराकौ भायां जसल्यौ ॥ माहेरे चलां छां वीरा गाड़ी है तो ॥ गाड़ी तो हूती रै नरसी देता तौ खरा ॥ पूठचा ज्यांरी फटगीनै टूट ग्या अरा ॥ १ ॥ पड़ौसी उठ बोल्यो पेड़ा हूंता तौ खरा ॥ यांनां वाकी फाटगी वे पिछवाडे पडचा ॥२॥ वींणींने चूणीनैं नरसी भेला तो किया ॥ गाडली तौ मिलगी बैल्या मांगणा रया ॥ ३ ॥ जन्तन लावा पींजणीनैं जवा डोरयौ ॥ इतरा तौ मिल जासी म्हारौ कारज थयौ ॥ ४ ॥ नान्हीं बाईरा माहेराकौ भायां जस ल्यो ॥ गाडुली तो मिलगी म्हानै बहल्या है तो द्यौ ॥५॥ बहल्या तौ हूँता रे नरसी देता तो खरा ॥ नाथां ज्वारी काढ लीन्हीं गोरवैं पडचा ॥६॥ नरसी बौल्या उठो भाई बहल्या भजो राम राम ॥ नान्हीं बाईरा माहेराको सार दीज्यौ काम ॥ ७ ॥ नान्हीं बाईरा माहेराको कारज करौ ॥ दोय चार दीन, पाछैं भलांई मरो ॥८॥ नान्हीं बाईरा माहेराको सार दीज्यौ काज ॥ थांका तो मरबाका दिन नहिं छै वीरा आज ॥९॥ पूंझड़ा पकड़ नरसी खड़ा तौ किया ॥ टूटा भाग सीदरांसू हकड़ लिया ॥१०॥ टूटी गई गाडलीने योदा मिल गया जंत ॥ बहलियांरा मुड़ माँहें डाढ दंत ॥११॥ नरसीजी फिरै छै अब भायांके दवार ॥ माहेरे चालणैन वीरा हो जाज्यौ तयार ॥ १२ ॥ म्हारा तो घरमें रे नरसी घणौंई छै काम ॥ सूरच्या सामीं लै जा थारे भजे

राम राम ॥१३॥ नान्हीं बाईरा माहेराको भायां जस ल्यो ॥ संगनैं चालो तो एकेक कापड़ो तो द्यो ॥ १४ ॥ म्हांकी तौ नहीं छै नरसी एक टकाकी पूछ ॥ भाया रे भरोंसै तैं तो मुंडाय लीन्हीं मूंछ ॥ १५ ॥ भगतवछल प्रभु सारै सब काज ॥ नान्हीं बाईरा माहेरारी ठाकुरजीनैं लाज ॥ १६ ॥

दोहा

सुण नरसी चुपचाप है, सुमरे श्रीजगन्नाथ ॥
सांवलदेवी कापड़ा, म्हारे गिरिधर चलै साथ ॥१॥
साध हमारे सिर धणीं, परमेश्वर परवार ॥
साधू मायर बाप है, सुरचा म्हारै लार ॥२॥
इष्ट भरोसौ अतिहि दृढ, निहकामी निकलंक ॥
सुखसागर प्रभु आसरैं, नरसी सदा निसंक ॥३॥
कर विनती फिर नग्रमैं, साधू लिये बुलाय ॥
भई भीर शिवकरण कह, द्वारे बैठे आय ॥४॥
नरसीकी नारी कहै, सखियनको समुझाय ॥
स्वामीजी समुझैं नहीं, मुंडिया बुरी बलाय ॥५॥

पद राग कल्याण

महताजी तो मोडियानैं घेर घेर ल्यावै ॥ टेर—एकनै बुलावै मोड़्या दोय च्यार धावैं ॥ चूल्हा पाछै ठंडी रोटी रहण न पावैं ॥ १ ॥ छाज भर पीसूं हूं तो कुंडाभर पोऊँ ॥ जाये पीट्या मौडियानै भूखां मरती रोऊँ ॥२॥ उठ सँवारे मुंडिया सापडवानैं धावै ॥ एक दोय मौडिया डूब क्यों नीं जावै ॥३॥ मूंड मुंडावै मुड़िया लंबी राखै चोटी ॥ जाये पीट्या मोडियाकी गरदन मोटी ॥ ४ ॥ न्हावै तो धौवै मुंडिया लांबा

काढ़े टीका ॥ जाये पीटचा मौडियांका दरसण नीका ॥५॥ खावानैं तौ धीर खीचडचा बेठवानैं पाट ॥ म्हारा पीटचा मौडियांरा दूणा दूणा ठाट॥६॥ नरसीजी तौ माहेरारी सौज करै ॥ मौटा मौटा तूम्बा लेकर गाडी मैं धरै ॥७॥ छोटी मोटी तुमड़ियाकी गिनती कांई ॥ मौटा मौटा तूम्बा लिया ब्ययांके ताई ॥ सारांकै बिंचै तौ धरिया मदनगोपाल ॥ आजू बाजू मेली नरसी मरदंग ताल ॥९॥ सवा मण गोपी चंदन खडियौ भर्‍यौ ॥ बीच मांहेठाकुरजीकौ सिंघासन धर्‍यौ ॥१०॥ एक तौ लीन्ही छै नरसी कपडा हंदी पोट ॥ पांच सात तौं टौपियानौ बाकीकी लंगोट ॥ ११ ॥ ब्यांयणजीके तांई माला लीन्ही छै बसेक ॥ सवा सेर को छै मणियो एक एक ॥ १२ ॥ मती करो महताजी थे तो इतरो फेल ॥ कोणतो करेलो थार आंधलारी टेल ॥ १३ ॥ बोली रे ये चुपकी छानी घरकी तू नार टहल तो करेलो म्हारो सिरजनहार ॥ १४ ॥ आगे चाले गाडूलीनैं सूर्‍या लारो लार ॥ छिनमैं पोचासी ठाकुर नगर अजार ॥ १५॥ बोलो रे ये चुपकी छानी बडका बोली जोय ॥ मोड़िया विना म्हारी मुगती न होय ॥१६॥ साथे थे चालो तो जीमण जीमो दिन च्यार ॥ साधूडारी टल कीज्यो घरकी नार ॥१७॥ भगतवछल प्रभु सारैं सब काज ॥ नानीबाईरा महेराकी ठाकुरजीनैं लाज ॥ जै जै नारायण नृंसिंहहरी

दोहा

गांव गेर भेली हुई, करत सकल मिलि सौर ॥
नरसी निरधण जाणके, सगे करत सब रौर ॥१॥

निरधनकौं सब जगहसे, परापरीकी रीत ॥
हरि राचे शिवकरण कह, अन्तरगतकी प्रीत ॥२॥

पद राग कल्याण

देखो मेहता नरसीजी तौ माहेरो ले जावै ॥ टेर--भाई बंद नरसीरा बोलै एक अचंभो आवै दैण लेण लेणने कछू न सूझै गेवी गौता खावै ॥ १ ॥ गाडूलीको पैडो पडगौ जवाडौपे जावै एकानैं उठावै बहल्यौ दूजो पड जावै ॥ २ ॥ नरसीजी गाडीमैं बेठा बहल्ला चिमकावैं ॥ लारै लारै सूऱ्या सामी हाक तो मचावैं ॥३॥ पूठ डली चुग ऊँची मेलैं फाचरिया पड़ जावै फाचरियानैं ऊँचा धरता तूमड़ा गुड़ जावै ॥४॥ तूमडांकी सिरमैं लागे आंधसा लावैं ॥ नरसीरा भाईबंद बोलै याने लाडू भावै ॥५॥ आगे आगे मानदासजी चोखा हरजस गावै ॥ लारे लारे सूऱ्या सामी पाडचा झरती आवै ॥ ६ ॥ नरसीजी गाड़ीमें बैठा मरदंग बजावै ॥ जाकी धुन साहाबसूं लागी राग केदारो गावै ॥७॥ कांधै कुराड़ी हात बसोलौ किसनो खाती आवै ॥ साठा रहज्यौ सूरदासजी नरसीलौ बतलावै ॥८॥ तूमड़ाको करौ जापतो एक आदमी आवै ॥ सूरदासजी हैरण लागा लकड़ी हाथ न आवै ॥९॥

दोहा

पड़ पूठी पड़ फाचरा, बहल्या पड़ै दड़ाक ॥
रात घणीं सूझै नहीं, आखड़ पड़ै अड़ाक ॥१॥

पद राग सोरठा चाल मारू

हाथमें बसोलौने कांधे करौत ॥ छै आणतो करी छै किसनैं भगतांसूं दंडौत ॥ टेर-आय तौ गाडीके हरजी लागयौ छै हात ॥ हीरां हदी फूली जडदी सौना हंदापात ॥१॥ रूपाकी

पींजडियां जड़दी रैसम हंदाजंत ॥ बहलियांरा मूढामां है दूधियासा दंत ॥ २ ॥ गाडी तौ सूधरतां लागी एक घडी नरसीजीकी गाड़ी देखौ रतनासू जड़ी ॥ ३ ॥ हांकड़ लागौ सांवलियौनै कीया ललकारा । वाजणींसी बहल हो गई चिमकण हैग्या न्यारा ॥ ४ ॥ भौला भगतांपर ठाकुर कियौ उपकार ॥ छिनमें पौंचायो नरसी नगर अँजार ॥५॥ हाली हैकर हाकी महता नरसीजीकी बहल ॥ साम्हाई दीखै छै थारी नान्हीं बाईरा महल ॥६॥

दोहा

उस दिन सूरज ऊगतां, पहुँचा नगर अँजार ॥
हाटपाट सब ऊघडचा, खुलिया सकल बजार ॥१॥
आवतही नरसी मिले, कौकलियाते जाय ॥
तुरतहि श्रीरंगके घरां, दीन्हीं खबर कराय ॥२॥
जौसी दौरचा कौकल्यौ, गायौ सँहारे गेह ॥
व्याही आथा गौरवैं, मौही बधाई देह ॥३॥
श्रीरंगजी पूछत भये, कहौ सगांकी बात ॥
कांइ कांइ ल्याया माहरौ, कुँणकुँण आया साथ ॥४॥
जौसी बौलौ कौकल्यौ, माहेराकी बात ॥
थांनैं माला तूंबडा, सूरचा सामी साथ ॥ ५ ॥
विस्मय बाणी कौकल्ये, कही सभामें जाय ॥
सुख सागर चकित भये, सुनकर श्रीरंग साय ॥६॥
कुटुमसकल मिलकर चल्यौ, साम्हैलाके काज ॥
कौकलियौ शिवकर्ण कह, भलौ दिहाडौ आज ॥७॥

इति श्रीभक्तवत्सलबिड़दरागकौतूहल नरसीमेंहेताका मामेरो
चतुर्थ प्रकाश समाप्त ॥ ४ ॥

पंचम प्रकाश ५.

दोहा

श्रीगुरु गणपति सुमर हरि, हिय धरि प्रेम हुलास ॥
दरक सहाशिवकरण यह, पँचम कहूँ हुलास ॥ १ ॥

पद राग सोरठ चाल मारु

जोसीजी तौ बोलै म्हाने बधाई तौ देवो ॥ व्याहीजी आयां छे थांका साम्हां जायर लेवौ॥ टेर-भलीकरी नरसीजी महता आया मेरे देस ॥ कितरा तो ल्याया छै वांरीबा साढूवेश ॥१॥ वेसडलांरी बाता थे तौ पूछौई मती॥ जिनस तौ ल्याया छैं थांने लागसी जिती ॥ २ ॥ पौसांखारी बात थे तौ पूछोई कांई ॥ बड़ौ बड़ौ तुंबौ तौ ल्याय ब्यायांके तांई ॥३॥ छौटी छौटी तूमडूचांकौ अंत न पार ॥ दो दो तौ बरता दौ थांरै सारे परवार ॥४॥ सवामण गोपीचंदण ल्याय छै खरौ ॥ तारी तो वसतीका बैठा तिलक करौ ॥५॥ एक तो ल्याया छै ब्याही कपड़ा हंदी पौट ॥ भाईबंदानैं टौपिय और सरबांलै लंगौट॥६॥ब्यांयणजीके तांई माला ल्याया छै बिसेक ॥ सवा सवा सेरकौ छै मणियौं एक एक ॥७॥ खौडे ला ब्याहीनैं यहांसूं काढो न परौ ॥ टूटी टपरी गांव बारणै डेराही करौ ॥८॥ फुटौड़ी हाटयामैं जूँवा माछर छै घणां ॥ जठै तौ दिराया डेरा नरसीजी तणा ॥ ९ ॥

दोहा

नरसी निरधन जानके, डेरा दिया कुठोड़ ॥
चींचण माकण अति घणा, जूँवा खावै तोड़ ॥१॥

नां जाजम नां गूदणा, नां मांचाके बाण ॥
सूरदास सीयां मरै, नां कोई जाण पिछाण ॥ २ ॥
पाड हाटका पाटका, धूणीं दई लगाय ॥
हरिजस गावै सूरिया, मरदंग ताल बजाय ॥ ३ ॥
इत समाज सखियन मिलि, संग श्रीरंगकी नार ॥
आई ढोल बजायके, नान्ही बाई लार ॥ ४ ॥
कनक थार कर में लियो, अक्षत दीप सहेत ॥
दुग्ध कलशमें तो दुरब, कुंकुम गन्ध जु लेत ॥ ५ ॥
नरसीकूं अरचिके, अरु सन्तनकों पूज ॥
राम राम कर सब मिले कुशल परस्पर बूझ ॥ ६ ॥

पद राग सोरठा चाल मारू

हूँ तो आई नान्ही बाई थोड़ो कूंकूं लेर ॥ साधू डारो गोपी-चंदन लागै सवा सेर ॥ टेर-तु तौ जलको कालस्यो ल्याई कर कर मनमें प्यार ॥ एक एक साधू पीवै तूबां च्यार च्यार ॥१॥ गुड़की भेली चावल ल्याई एक पसी ॥ सूरचांनै कलेवो चावै सेर असी ॥२॥ धौटको तू वटको ल्याई सांठी वारे हाथ ॥ क्यां सूतौ ढकी जे म्हारौ सूरियांरौ साथ ॥३॥ हडहडहड-हडसे म्हारी नान्हीं बाईरौ साथ ॥ काना देर सुणज्यौ म्हारा द्वारकाका नाथ ॥ ४ ॥

दोहा

हँसी जु नार अँजारकी, सुण नरसीके बैन ॥
उलटा मांगे कापड्यो, आयीं माहेरौ देण ॥ १ ॥

पद राग मारू

म्हारा सगां रे सय्या काहेरा टौटा ॥ चनण घसणनैं बड़ा

चकलौटा ॥ टेर-सूरचा साम्यां कनै सोटाइ सोटा ॥ सिरपर टोपीनै बजरलंगोटा ॥१॥ म्हारा सगांरे सयां ठाकुर मौटा ॥ सालगराम संख गड गड गौटा ॥ २ ॥ सून्या साम्यां काढ़ूं गाइमौटा ॥ गरदन लंबीन लंबाई चौंटा ॥३॥ गज तो बाजा तम्बूरानै घौटा ॥ मरदंग ताल और अचरौटा ॥ ४ ॥ ब्याई जीना चैने बांजै अनौटा ॥ गावै सूरचा सब मिल मिल जोटा ॥ ५ ॥ मालाका मिणियां दड़ी करा दोटा ॥ तुलसीका हीरा गलामाहीं मोटा ॥ ६ ॥ पागां पवड़ियासूं फूटै छै औटा ॥ तुंबी तुम्बीनै प्याला छौटा ॥ ७ ॥

दोहा

सुण नरसी करुणा करी, कर लइ मरदंग ताल ॥
आंब फल्या, केला फल्या, फूली फूली सबै रसाल ॥१॥
संत फूल शिवकरण कह, सब फूली वरणाय ॥
कुजन कुटिल हरि विमुख नर, अर्क गये मुरझाय ॥२॥

वधावौ पद राग मल्लार

रामरस आंवौ मौरियौं मोऱ्यौ मोऱ्यौ ये नरसीजीरे द्वार॥ हरिरस आवौ मोरियो ॥ टेर-केतौ जिण दिन आंवौमोरियौ लंकाजीत रु आये लक्ष्मण राम ॥१॥ कैतौ जिण दिन आवौ मोरियौ मथुरागढ़ जनम्यां यदुकुल नाथ॥२॥कैतौ जिण दिन आवौ मौरियौ ब्रज डूबत राखि लियो गिरधारी ॥३॥ केतौ जिण दिन आंवौ मौरियौ द्रौपदीकी सभा बिच राखी छै राज॥ केतौ जिण दिन आयौ मौरियौ जल डूबत राख लियौ गज-राज ॥ ४ ॥ कैतौ जिण दिन आवौ मौरियौ जय देवतणी जीवाई छै नार ॥ ५ ॥ पांडवांगृह आंवौ मौरियौ लाखागृह

बीच बचायौ छे प्राण ॥६॥ सोवनसिखर आवौ रस भार्‍यो जाकी बिरलाहो जनकेरी खाय ॥ ७ ॥ दास बीरे रस पीयौ के री क्यूं सी ह्रौ गुरु गोरखनाथ ॥८॥ नरसीलो विनती करे हरि आज्यौ जी म्हारे माहरौं संजोय ॥ रामरस आंवौ ॥९॥

दोहा

हुवौ बधावौ हरखसूं, घर आई सब वाम ॥
अपने अपने भवनमें, करन लगीं सब काम ॥ १ ॥
बाईकूं बुलवायके, सासू पूछै रैंस ॥
कितौक भरसी माहरौ, किताक ल्याया वैस ॥ २ ॥

पद राग सोरठ चाल मारू

कहौने वजी थाराहू बाबाजीरी बात ॥ कितना तो ल्याया छै थाने दौंवड तेवड़दात ॥ टेर–हौले चालौ वेवड़ गेठड़ा ल्या भारी ॥ वारे आय नराण रवि बुगचौं उतारी ॥ १ ॥ ऐसौ कांई वेवड घरमैं काम करे ॥ थारी तौ जेठाणी उभी भार्‍याहीं मरे ॥२॥ आंगड़ियामैं ऊभा बाईकी सासूजी लड़ै ॥ देखौ जी म्हारी बेवड़ ऊपर बुगचा पड़ै ॥ ३ ॥ सासूजी म्हारा बाबाजीके बुगचा व्हेता ॥ तौ टूटौ डीट परीं मैं डेरा कायनैं देता ॥४॥ जे वावौजी ल्यायां हूं ता माहेरौ मुलाय ॥ सुसरौजी तौ मिलता सासू वहडली बुलाय ॥ ५ ॥ कारा कूरा सासूजी थे करचायीं कीजौ ॥ म्हांरौ बूढौ बापजीतो जांवतौ रीज्यौ ॥ ६ ॥ बाबाजीनै देख्यां हूतो रीजी वरी ॥ माहेरौने ल्याया म्हारे आय तौ खरी ॥ ७ ॥ आया तौ म्हें दरसण पाया मेल दो घरां॥ व्याहीजीने देख्यां म्हें तो लाजाही मरा ॥ ८ ॥ हौंजी रहौजी देवर गर बन बौल ॥ धन विना

मान वीरो कौड़ी हंदोतोल ॥९॥ रहो रहोजी मौडयाकी जई
काहेको गुमान ॥ मौडियौ खावै छे ल्यावै मांग मांग धान
॥ १० ॥ हारीं बाप मांगे देवर थे तो बांधी पाज ॥ ब्राह्म-
णको जमारो कांई मांन वारीं लाज ॥ ११ ॥ नणदल बाई
बोली भावज मती करौ रीस ॥ थारे तो सरीसी दिनमें
ल्याऊँ पूरी वीस ॥१२॥ मौसूं तो म्हारि नणदल बाई कायनें
लड़ौ ॥ म्हारे भावै बाबाजी थें कूंवामें पड़ौ ॥ १३ ॥ पुतरी
तौ दौड़ पिता कनैं गई ॥ मौनें म्हारा बाबाजी मोडियाकी
कही ॥ १४ ॥ मौंडियाकी कह्या बेटी मती मानौ रीस ॥
मौंडियौ ठाकुरजीका विसवा बीस ॥ १५ ॥ और कोई
मौंडियौ छै एक दोय बार ॥ नरसी लौ तो मौडियौ छे लाख
क्रोड़ वार ॥ १६ ॥ जावौ म्हारी नान्ही बाई आपके घर ॥
मौडियौ कह्यासूं म्हारा कारज सरै ॥ १७ ॥ तौसूं म्हारा
बाबाजी हूँ कदे नठरी ॥ जब थानैं पूछूं जब सुमरो छौ हरी
॥१८॥ और सुमरै छानें चौड़ें बैठे औलै जाय ॥ नरसीलौ
तौ सुमरे बाई ताल बजाय ॥ १९ ॥

दोहा

हरिसुमरणसूं अघ जरै, कोटिन विघन टल जाय ।
हरि आगे पीछे खड़ा, संकटमाहिं सहाय ॥ १ ॥
चल्यो दुसासन दौरिके, चीर द्रौपदीहर्ण ।
जब आयौ आसी आवैं, नरसीके शिवकर्ण ॥ २ ॥
अब आसी ल्यासी किसूं, कब हरि करसी लाज ।
रह्या भरौसे क्यूं सझै, औ अवसर छे आज ॥ ३ ॥
म्हारी सासू नित लड़ै, माहेराके काज ।
आया हात हलावता, मोहि उलटी आवै लाज ॥ ४ ॥

पद राग ठुमरी

मोकुं लजावण आये पिताजी मोकुं लजावण आये जी ॥ टेर–मायड है तौ भैरे माहरौ के मायड़कौ जायौ हौ ॥ भरी सभामें करै ऊजलो राखे मान सवायौ हो ॥ १ ॥ ताल मृदंग झांझ डफ लाये संग ले मोडचा आयौ हौ ॥ सब नागर मिल करत मसकरी भरण माहरौ धाये हौ ॥२॥ ध्यान धरूं बैठूं आसनपर सेठ सांवरो आवै हो ॥ नरसी-जीकी कुँवर लाडली नरसीजी समझावै हो ॥३॥ धीरज धार कलप मत मनमें बाई मत घबरावै हो ॥ कह शिवकरण दयालु सांवरो आता बार न लावै हौ ॥ ४ ॥

दोहा

बाई चिंता मत करौ, मनमें धीरज धार ।
मनमांने सौ मांग ज्यौ, देसी सिरजणहार ॥ १ ॥

पद राग मारू

बोलै पुतरी सुण बाबाजी कांई कांई सौदा ल्यायाजी ॥ तुमपेतौ कछु दीखै नाहीं सून्या साथे आया॥ टेर-फाटा कपड़ा टूटी गाड़ी बहल पुरातन ल्याया जी ॥ समदीरे घर माहैरौ भरणो ताल बजावन आया ॥१॥ कंठी माला और तूमड़ा मरदंग ताल बजाया जी ॥ गोपीचंदन और रामरज तीखा तिलक बणाया ॥२॥ जीमणकाजिमणाऱ्या थे तौ कौड़ी एक न ल्यायाजी ॥ कुंवरी कहै लाज तुम खोई देस बिराणैं आया ॥३॥ कह शिवकरण लड़े बाबलसैं नैन नीर ढलकाया जी ॥ लेत उसास सास नहिं आवै अनबन वचन सुनाया ॥ ४ ॥

दोहा

क्यानै आया बापजी, विना जघरकी पूंछ ॥
घरा पराया ऊपरै, थे भली मुंड़ाई मूंछ ॥ १ ॥
नरसीजी हरि सुमिरिके, बैठा आसन मार ।
बाई सांवल आबसी, तू मनमें धीरज धार ॥२॥

पद राग मारू

कह नरसीलौ सुण ये पुतरी तासू मिलवा आया जी ॥ देन लेनकौं कछुबी नाहीं सांवल साह बुलाया ॥ टेर—बोले पुतरी सुण बाबाजी सांवलसाह कब आसी ॥ काल तुम्हारे माहेरौ भरणौ कांइ कांइ सौदा ल्यासी ॥ १ ॥ बोले नरसी सुण ये पुतरी बोदी बात बिचारी ॥ एक पलकमें सब जग पेलै सांवलियो गिरिधारी ॥ २ ॥ द्रुपदसुताको चीर बढ़ायो करी दुशासन हांसी ॥ अजामेलकौ अन्त सुधार्‍यो मिटगइ जमकी फांसी ॥ ३ ॥ राणे विषका प्याला मेल्या पी गई मीराबाई ॥ अमृत कियो वदनपर लावे नेक गहलनहिं आई ॥४॥ ग्राह गह्यौ गजराज उधार्‍यो काट्यो फन्द मुरारी ॥ नरसी कहै माहरौ भरसी अबकी बेर हमारी ॥ ५ ॥ कह शिवकरण काज भगतांका जुगजुगमाहिं सँवारे ॥ असरण सरण दयालु दयानिधि जनका असर्‍या सारे ॥ ६ ॥

दोहा

जब नरसी करुणा करी, कुँवरीने समझाय ॥
बाई गिरधर आवसी, सकल मनोरथ थाय ॥१॥

पद राग रेखता

अरी घबरा मती बाई हरी नुखतेपैं आवेंगे ॥ टेर—कहै

नुखते निबाज़ुस्कौं मुझे क्या भूल जावेंगे ॥ वौ तौ घटघटकी कला जाने झटपट क्या ह्यां न आवैंगे ॥१॥ मुझे है आसरा उनका जरूरी दौड़ धावेंगे ॥ किसन परवस्त हैं मेरा जरी जर-तास ल्यावेंगे ॥२॥ उसै टोटा नहीं धनका खजाना पूर पावेंगे ॥ भरेंगे माहरा माधौ बैठे हम राम गावेंगे ॥३॥ बाई टुक धीर तुम धारौ अभी मोहन वधावेंगे ॥ कहै शिवकर्ण यूं नरसी भरौसा मोहिं आवेंगे ॥ ४ ॥

दोहा

अरी मती घबराय तू, परी भीर लखि आज ॥
करी करी कारण खरी, दौड़ द्रौपदीकाज ॥ १ ॥

राग बिहाग

थे कहो बाबाजी सांची ॥ थांको सांवलसा कब आसीं ॥
टेर-थे तौ सांची बात सुणावौ ॥ म्हाने राधा कृष्ण मिलावौ ॥
वेतौ द्वारावतीरा राजा ॥ कहोजी किणारा सार्‍या काजा ॥१॥
वां छौड़ी जसोदा मासी ॥ सब झुरत रहै ब्रजबासी ॥ जन
ब्रज नारी तज दीन्हीं ॥ कुबज्या पटरानी कीन्हीं ॥ २ ॥
वाँरे मनमांनी छै दासी ॥ ज्याने लाज किसी विध आसी ॥
इम नान्ही बाई गावै ॥ हरि लाज मरै तो आवैं ॥ ३ ॥ रण
छौड़ चल्या पग नागा ॥ वे तौ अठारे बेरां भागा ॥ इम साहा
शिवकर्ण बखाणै ॥ बाई गिरधरका गुण जाणै ॥ ४ ॥

दोहा

पहले केश खचायके, पछे बढ़ायो चीर ॥
आवत लाज गमायके, आखर जान अहीर ॥ १ ॥

बिदुराकी भाजी भखी, द्विजतांदुल गयो खाय ॥
कुँवरि भनै शिवकर्ण कह, सूंक मिलै जहां जाय ॥२॥
नरसी बोला-भक्तवछलको बिडद है, सारेंगे हरि काज ॥
छिन छिन निकट निदान है, दीनबन्धु महाराज ॥३॥

पद राग बिहार

बाई आसी आसी आसी हरि घणैं भरोसे आसी ॥ टेर-
वे तौ माहेरौ मौलासी ॥ सङ्ग सोजलियां सब आसी ॥१॥
वे तौ जांझण रथ जुतवासी सङ्ग राधा रुक्मण ल्यासी ॥२॥
जे सांवलियौ नहिं आसी ॥ तो बिड़द किणांरो जासी ॥३॥
जे सांवलसा नहिं आसी ॥ तौ हि नरसीलो तो गुण गासी
॥४॥ शिवकर्ण भक्त जस गावै ॥ हरि आवै तौ आज्यावै ॥५॥

दोहा

आसी तो आज्यावसी, नहिं तर चूकी बात ॥
बाई जावौ भवनकौ, मती गमावौ रात ॥ १ ॥
जझिक उठी झुंझलायके, सुण नरसीके बैण ॥
रीसि कुँवरि शिवकर्ण कह, लागी महणां दैण ॥ २ ॥
थेनहिं व्याहता बापजी, के बांझड रहती माय ॥
क्यानैं राखी जीवती, जण देती विष प्याय ॥ ३ ॥

पद राग सोरठ चाल मारू

जाई जदी दीन्ही क्यूं नी अमलकी डली ॥ क्यां सूं तौ
पुरो ला म्हांरा मनकी रली ॥ टेर-फलसा आगल बाबाजी
खिड़ाई क्यूं नी नाव ॥ रमदी तौ खेलती हूँ पड़ती जाय ॥१॥
काजल विनां तौ कांई आंखियारो तेज ॥ मायडली विना तौ
काँई बापकौ हेज ॥२॥ माय हुवे तौ माहेरौ भरै मांई माहेरौ

कायको करै ॥३॥ आज म्हारी होवती जनमकी माय ॥ एक दोय कपड़ा तौ देती आय ॥ ४ ॥ गुड़ विन फीकौ लगे छे कसार ॥ यूं माय विना फीकौ परवार ॥५॥ मायडली विनां तौ म्हांरां राखे कुंण मान ॥ घिरत विना तौ जैसे सूखौ धान ॥६॥ मायडली विना तो धीयड निरथार ॥ माय विना तो झूठो संसार ॥ ७ ॥ पूरब जनमका तो प्रगट्या है पाप ॥ थांरे तौ सरीखा मौनें मिलिया बाप ॥८॥ इसड़ी तौ खारी बातां बापकूं कही ॥ एसा तो बाबाजी विनां यूंही नां रही ॥ ॥ ९ ॥ जावो म्हारी नान्ही बाई घराने सिधावो ॥ लागे जितनी जिनसांको तो कागद लिखा लावो ॥ १० ॥ के तो म्हारो सांवलिवो माहेरो भरसी ॥ नहिं तौ माहेरा विना कित-रयानैं करसी ॥११॥ नान्ही बाई दौड़कर जेठपै गई ॥ लागे जितनी जिनसां थे तो लिख दो सही ॥ १२ ॥

जेठ बोला-दोहा

नाच कूदकर कूदके, भरे मोडियो पेट ॥
माहेरो क्यांसू भरै, यूं कह बाइरौ जेठ ॥ १ ॥
मझक नराणौं बोलि हो, वचन विरोधी रीस ॥
नरसी धरसी थालमें, तुलसी बिसवा बीस ॥ २ ॥
हँसै भक्तकों जगत सब, देता नां दै गार ॥
ठठा करै शिवकर्ण कह, मिस सबही नर नार ॥ ३ ॥
हरिभक्तनकी गूढ गति; लखी न जावे रंच ॥
सरल भाव शिवकरण कहे, जग राचे परपंच ॥ ४ ॥
कहा होत परपञ्चतैं, हरि सन्मुख नहिं होय ॥
रामविमुख शिवकर्ण कह, कारज सरे न कोय ॥ ५ ॥

जक्त भक्त गत नां लखै, कौगत करतकि तौल ॥
नरसीकी शिवकर्ण कह, मिल सँमदी कर रौल ॥६॥
सोरठा-चोल चढ़ी सब नार, मिल आंई छोटी बड़ी ॥
जाजम दीन्दी ढार, करत हास्य शिवकर्ण कह ॥७॥

दोहा

सकल कुटुम मेला हुवा, बैठा रणौराण ॥
द्वात कलम कागद लयै, लिखवा लग्यो नराण ॥१॥

पद राग सोरठा चाल मारू

आज्या रे फलसाका तूं सो सूरतियारें भील॥ थारा तो लिख
देऊँ दोय सोना हंदा तीर ॥ टेर-चिरा तौ विना न्यायकजीर
चांले छे चाक॥ जिणका तो रूपइया लिख दो सवा सवा लाख
॥१॥ पारस पींपलका जितरा छे पान ॥ जितरा तो लिखद्यौ
नी जरिया हंदा ॥२॥ बांमण लिख द्यौ बाण्या लिख द्यौ लिख
द्यौ सुनार ॥ तेलीन तम्बोली छीपा लिख द्यौ लुहार ॥३॥
यांची मोची दरजी धोबी लखारा साहू ॥ दोय तौ लिख दे
नारण्यां पाडोसीरी बहू ॥४॥ पाडौंस्यांकी बेबांनौं तौ आछी
कीन्ही चीत ॥ पहरै ओढैं नाचैं कूदैं गावैं चोखा गीत ॥५॥
माली लिख द्यौ कौली लिख द्यौ लिख द्यौ अहीर॥ मालवै जातौं
डीमऊ लिख दीज्ये वीर ॥६॥ मालवैं जातोडीकौ राख लीज्यौ
मान॥ एक एकको लिख दे बारा सौ सोमण धान ॥७॥ जरकस
हन्दातार लिख दें जरिया हंदी झूल ॥ मनरूपा जवाई साकू
सोना हन्दो फूल॥८॥ दिवराण्यां जीठाण्यां सारू जरीकुंजरी।
छोटौड़ी नणदूली सारू माही चुन्दरी ॥९॥ उणाँकी तो नान्ही
बाईरो सारो सिंणगार॥ दोयतडीनैं लिख दे मोती हीरा हँदोहा
॥ १० ॥ नरसीजीकी नान्ही बाईड़ा मामैं छोटी ॥ सोनाके

पगौ त्यौ लिख दे नावडे कौठी ॥११॥ सारी तौ बरात सारू ल्याव ज्यो पोसाख ॥ दायजा मैं देवण ल्याज्यौ रुपिया सवा लाख ॥ १२ ॥ लाडा सारू साल दुसाला ब्यायांनैं बनात ॥ बाई सारू ल्या ज्यो थे तो दौवड तेवड दात ॥१३॥ माहेरौ लिख्यौ छे म्हें तो बिसवा बीस ॥ घरका तौ बिराह्मणका रुपिया साढा तीस ॥ १४ ॥ कोकल्यै बीराह्मण थासूँ कासीदी मांगै ॥ नाईका रुपया साढा बाराही लागै ॥१५॥ धाय सारू लिख दे एक मेणियारो बेस ॥ धाऊ बाबा सारू लिख द्यौ जरकस हंदौ केस ॥१६॥ दाई माई नायण लिख द्यौ नालौ मौडनहार ॥ गीगीबाईरा कांन बींध्या आणदे सुनार ॥१७॥ धजा धौवती मन्दिरा सारू थौडचडी अमौल॥ पांच मोहोर पंचानैं दीयां बाजण देला ढौल ॥ १८ ॥ पांच रुप्यांका फदिया ल्या ज्यौ कौरी ला ज्यौ आवता ॥ पह्लौ फटकार ब्याही उछाल जांज्जै जावतां ॥१९॥ बूढली ब्याहणनैं तो उपजी सला॥ मनैं तौ पगधौवण लिख द्यौ सोनांकी सिला ॥२०॥ कुंकूं पत्री लेय बेटी बापकै गई ॥ इतरौ म्हार बाबा जी द्यौ माहेरौ सही॥२१॥ कूंकूं पत्री बांची नरसी मगन भया॥ ठाकुरजीका नाम सारा ऊपरे रह्या ॥२२॥ देखौ मरदौ नरसीलाकी दसा तौ घिरी ॥ नीच नाम नरसीलाको ऊपरै हरी ॥२३॥ ऊपर नांव मांड्या जकौं माहेरौ भरसी ॥ नीचै नाम नाम नरसीलाको भजन करसी ॥२४॥ भगतवछल प्रभु सारै सब काच ॥ नान्ही बाईरा माहेरा माहेराकी ठाकुरजीने लाज ॥ जैजै नारायण नरसिंह हरी ॥ २५ ॥

दोहा

पत्री सीश चढ़ायके, सुमरै सालगराम ।
लेकर सिंहासन धरी, प्रभु सारै सब काम ॥ १ ॥

अब घर जावौ लाड़ली, मनमें राखौ धीर ।
पूरण भरसी माहेरो, आसी सांवल वीर ॥ २ ॥
दे पत्री पाछी फिरी, आई सासू पास ।
बैवडल्याई मांहरौ, करी पडौसण हास ॥ ३ ॥

इति श्रीभक्तवत्सलविडदरागकौतूहल नरसी मेहेताको वड़ा मामेरा पंचम प्रकाश समाप्त ॥ ५ ॥

षष्ठ प्रकाश ६.

पद राग सोरठ चाल मारू

आये तू पांडचारी छोरी नरसीजीने ल्याव ॥ थारे जीमण धाया व्याही म्हारे जीमण आव ॥ टेर–न्हाया नैं धोया ये छौरी सेवा ने करी ॥ क्योंकर जीमण चाल बाई हालकी घरी ॥१॥ ठाकुरजीको सिंहासन सीसपैं धरो ॥ आजकी सेवा तौ म्हारी हवेली करो ॥२॥ मरदंग ताला नरसी हाथमैं लई ॥ ठाकुरजीको सिंहासन सीसपैं सही ॥३॥ हरीहर सुणीं सून्या तूंबा तौ भऱ्या ॥ डांगडी पकड़ नरसी पिछाड़ी कऱ्यां ॥४॥ नरसीजीके लारै देखौं लंगर लाग्या ॥ देखौजी श्रीरंगजी थांका भागडा जाग्या ॥ ५ ॥ पौली मांही बडतां साम्हां व्याहीजी मिल्या ॥ नरसीजीने देख मुखड़ौ मौड़ चल्या ॥६॥ भगत बछल प्रभु सारै सब काज ॥ नान्ही बाईरा० ॥ ७ ॥

दोहा

पौली माही पेसतां, सून्या पून्यौ संख ।
काईक सक सगां तणीं, नरसी कह्यो निसंक ॥ १ ॥
मानदास ततकारियो, रणसिंगाकी जोड़ ।
सौला संख सून्यां तणां, बाग हौडाहौडा ॥ २ ॥
सुनी संखध्वनि सहर सब, नरनारी गए दौड़ ।
नरसीकी निंदा करें, समदीं मुख मसकोड़ ॥ ३ ॥
गायां भागी वच्छ तज, भैंस भिडक गइ भाज ।
तिलक देख टाबर डऱ्या, सगा मऱ्या सब लाज ॥ ४ ॥

समदन बोली-पद, राग गरभा चाल गुजराती

बोली समदण नार नरसी भांडचा रे ॥ नागरनौं सभ व्यवहार मूडियै छांडचा रे ॥ टेर-यों तो बोल विकल विह्हाल लोग हँसाई रे ॥ संमदीने पिता पुकार कर संमदण माई रे ॥१॥ यो तो बहन कंहे सब भाम इण सब खाई रे ॥ यो तो भयोकढी बिगाड़ सकल डुबोई रे ॥२॥ अपतीनैं उरो बुलाय सबी समझावां रे ॥ थां कारण घर तज विखड़ो खावां रे ॥ ३ ॥ तू तौ डेरौ तज मति जाय लौग हँसेला रे ॥ म्हारौ मौटो छै परवार महणा देला रे ॥ ४ ॥ हम बोलै समदण नार दोऊ कर जोडै रे ॥ विनय करे शिवकर्ण मन तन मौडे रे ॥ ५ ॥

दोहा

तब नरसी कर जोड़ कर, बोलै बुद्धि विशाल ।
थारो महणौं सकल शिर, राखे गिरधरलाल ॥ १ ॥

पद राग सोरठ चाल मारू

आंगड़िया मैं बडतां बाइरा सुसरौयी मिल्या ॥ सून्यां साथै

देख व्याहीरी सांई बलमा ॥ टेर-बूढली तो व्यायण ऊठ तिलक कऱ्यो ॥ नेगको रूपइयौं व्याही देवोजी उरो ॥१॥ देवोनैं लेवानैं समदण रामजीको नाम ॥ तुलसीकी माला सेवा सालगराम ॥२॥ ईतनी तो सुणतां समदण रूस गया ॥ काढचोड़ा तिलक पाछा पूंछ लया ॥ ३ ॥ आछा म्हारा ठाकुरजी थे ये निरधन किया ॥ काढचोडा तिलक म्हारा पूछलिया ॥४॥ ईस्या तो तिलकांरो व्यायण कांह पूछौं फेर ॥ म्हांका तो तिलकानैं चंदण लागे सवा सेर ॥ ५ ॥ सीनान करावो थे तो यो तो जस ल्यो ॥ ठंढो पाणी छै जी थोड़ी तातो तो कर द्यो ॥६॥ ईतरो तो सुणकर समदण पाछीई फिरी ॥ ऊकलता पाणीकी मोटी मेल दी चारी ॥ ७ ॥ समदण यूं विचाऱ्यो नरसी दाझतौं मरे ॥ घरमां पड्यो रह दस दिन वारे ना फिरे ॥८॥ नरसीजी तो पाणीमांह आंगली धरी ॥ पाणी मैं नहिं पौंची तोही भाफसूं बरी ॥९॥ सीनान करावो तो थे यो तो जल लेवो ॥ तातो पाणी छै जी थोडो समावण देवो ॥१०॥ थारा तो हुकुमामैं व्याही वरषै छै मेय ॥ इन्दर आवे लौं थारे समौंवण लेय ॥११॥ करुणा सुणकर आयो इन्दर उणही घडी ॥ मूसलधारा औसरयौंनैं लगाई झडी ॥१२॥ व्ययांका तो घर सते जलसूं भऱ्या ॥ और तो समरमा है मेह न कऱ्या ॥१३॥ व्यायणजी आंगणियामैं नाडूली भरी ॥ नणदूलीरी दो डावड्यां डूब मरी ॥ १४ ॥ खोडौला व्याई कौसयां कांई तो करै ॥ आंगणियामैं पगल्या धरतां टावरिया मरै ॥ १५ ॥ पुतरी तो दोड पिता कनै गई ॥ डावड्यां डूबतां खोटी मौकली थई ॥ १६ ॥ जद महता नरसीजी करुणा करी ॥ मरचोंडी छोरयानै पाछी जीवाई हरी ॥१७॥

दोहा

ब्यायणजी राजी हुआ, आया नरसी पास ॥
जीमणकी मनुहार कर, नान्हीं बाईकी पास ॥ १ ॥

नरसी बोला—राग सोरठ

थे तो ब्याँयणजी म्हासूं ठठोही कियो ॥ टेर-म्हें तो नीर निवायोहि मांग्यो बलतोहि आँण दियो ॥ १ ॥ चावल सीजैनैं मूंग पसीज एसोहि गरम कियो ॥२॥ भाफांसूं म्हारै भयो जी पसीनों देखत दाझ गयो ॥ ३ ॥ इन्द्र कृपाल भयो नरसीपर समोंवण आण दयो ॥४॥ भगतवछल प्रभु भगता आधीन सदा पतित उबार लयो ॥ ५ ॥ कह शिव-करण भगतको कारज सुन प्रभु पूरण कियो ॥ ६ ॥

दोहा

तब संमदण कर जोड़ कहि, क्षमा करो अपराध ॥
भोग लगावो देवको, संग जिमावो साध ॥ १ ॥
बासीखूसी खीचड़ी, साग पात कछु नांय ॥
नरसी बैठा जीमवा, धरी थालके मांय ॥ २ ॥
धर तुलसी अरपन करी, आरोगो बलगीर ॥
गरम होगई खीचड़ी, चावल होगई खीर ॥ ३ ॥
साकपाल सरसा हुआ, पापड़ और पितौड़ ॥
खटरस भोजन ह्वै गयो, जब आरोग्या रणछोड़ ॥४॥
भई शंखध्वनि गगन जय, इत जय बोले संत ॥
जीमणकी आज्ञा भई, बाढ़ो रिद्ध अनन्त ॥ ५ ॥
सून्या मारै सबड़का, नरसी करै मनुहार ॥
ऊद्ध भरचा भावै नहीं, भरचा रहचा सब थार ॥६॥

नरसीजीनैं जीमतां, देख्या सब परवार ॥
श्रीरगम अवखी भई, रूस गया न्यूं यार ॥ ७ ॥
श्रीरङ्ग फिरै मनावता, सब कोई करे न खेद ॥
नरसीकी सरसी करी, तैं कियो पँगत मैं भेद ॥ ८ ॥
म्हानैं परुसी खीचड़ी, निरसीजीकूं खीर ॥
तै म्हांसूं दुरमत करी, है नहिं जीमांवीर ॥ ९ ॥
श्रीरङ्ग सकल मनायके, कही विगत समुझाय ॥
सुण सबही चुपक्या रह्या, जीवण बैठा जाय ॥ १० ॥
नरसीकी सरसी रही, भई खीचड़ी खीर ॥
इन्द्र आय शिवकर्ण कह, गरम सीत कर नीर ॥ ११ ॥
उन्हेंका ठंढा किया, किया समोवण आण ॥
ठंढाका ताता किया, लखि शिवकर्ण सुजान ॥ १२ ॥

नरसीजी बजारकी शैलको पधारे

राग मारू

एक दिवस नरसीजी बोल्यो सूरया सब मिल आवोजी ॥ बाजारांकी सहल करां थे मिरदंग तालबजावोजी ॥ टेर-संख पखावज झालर बाजै नरसी नाचण लागा ॥ सीस उघाडे पूद लंगोटी ऊपर पहऱ्या बागा ॥ १ ॥ हात तँबूरा पाय घूँघरू करवट ताल बजावै ॥ नाचत मगन होत मनमाहीं गहि धुनि मङ्गल गावै ॥ २ ॥ बीच बजार जाय भये ठाढ़े मधुरतान तिन गावै ॥ मानदास दे ताल पानपैं महरी मृदंग बजावै ॥ ३ ॥ बालक तरुण वृद्ध नागरि कौतुक देखन धावै ॥ नरसी निसँक नगर फिर देखे श्रीरङ्गके घर आवै ॥ ४ ॥ तब श्रीरंग एक बुद्धि उपाई मन्त्री तुरत पठायो ॥ बिन नर-

दोहा

सीके कही कानमैं डेरैं गिरधर आयो ॥ ५ ॥ पटकी ताल तान तज भागो पड़ पड़ ठोकर खावै ॥ सात उसाँस सांवरा कारण दोड्यौ डेरैं आवै ॥ ६ ॥

दोहा

डेरामैं दीखे नहीं, गिरधर जाको साथ ।
आरत कर टेरत भयौ, मींडत दोनूं हाथ ॥ १ ॥
नरसीजी डेरे गया, गयो बुलावो लार ।
करौ तयारी माहरौ, सब आयानूं त्यार ॥ २ ॥
सुन नरसी चक्रित कियौ, कर लइ मरदंग ताल ।
ऊँचे स्वर टेरत भयौ, गावै गुण गोपाल ॥ ३ ॥

पद राग सोरठ

सांवर बड़ोही भरोसो तेरौ ॥ टेर-खंभ फार प्रहलाद उबार्‌यो नखसू उद्र बिडेर्‌यो ॥१॥ इन्दर कोप कियो ब्रज ऊपर नखपर गिरिवर टेर्‌यो ॥२॥ द्रुपदसुताकी लज्या राखी दुष्ट पच्यौ बहु-तेरौ ॥३॥ जल डूबत गजराज उबार्‌यो कृष्ण कृष्ण कहि टेर्‌यौ ॥४॥ अडीज्यांझ शिवकर समंदमैं तुरत पार कर मेरौ ॥५॥ नरसी कह तुम सुनौ सांवरा काज सुधारो मेरौ ॥ ६ ॥

पद राग सोरठ

सँवरा कठे तौ लगाई एती बेर ॥ टेर—कांह भगतनकी करत नौकरी कांइ निद्रा लिया घेर ॥१॥ जौ जौ चीज लिखि कागद मैं सो अब आज्यौ लेर ॥ २ ॥ नारद शारद गण-पति ला ज्यो रिद्ध सिद्धका ढेर ॥३॥ राधा तो रुकमन साथे ला ज्यो अरु भंडारी कुबेर ॥४॥ माला दीन्हीं विप्र जिमाया हुंडी दई छै सिकेर ॥ ५ ॥ आगू काज अनेक सुधार्‌या

भरो जि माहरो फेर ॥६॥ मोय भरोसौ सांवरिया कांइ आप लगाई देर ॥७॥ कांई रुकमण बिलमाये प्रभुजी कांइ गंधा लिया घेर ॥ ८ ॥ थारे भरौसे खाली आयौ कछू न आयौ लेर ॥ ९ ॥ आगू भक्त अनेक उधाऱ्या अबके मेरी बेर ॥१०॥ नरसी मेहते दास तुम्हारो सुमरै सांझ सबेर ॥११॥ कह शिवकरण भरौसै तेरै रह्यो सुमरना फेर ॥ १२ ॥ बेगा आज्यौं बेर न लाज्यौ सुण नरसीकी टेर ॥ १३ ॥

पद राग चरचरी मारू

ये जि म्हारा नटवर नाजुरिया भगतां रे क्यू नहिं आयौ रे॥ टेर-धना भगतके भगत पुरबली जिनको खेत निपायौ रे ॥ बीज लेप साधानैं बांट्यो विना बीज निपजायौ ॥ १ ॥ नामदेव थारे नानौ लागे ज्यांको छपरो छायो रे ॥ मार मडासौ छावण लागौ लक्ष्मी बंध खचायौ ॥ २ ॥ सैन भगत थारे सुसरौ लागौ ज्यांरो कारज साऱ्यौ रे ॥ बगलर छौडी नाई बणगौ नृपकौ सीस सवाँऱ्यौ ॥ ३ ॥ परसौ खातौ पुरखौ हूँ तो ज्यांके पडो पुठ्यौ रे ॥ बिना बुलायौ आप आयौ रात्यूँ लकड़ौ कूट्यौ ॥ ४ ॥ कबीर कांइ थारे ककौ लागै ज्या घर बादल ल्यायौ रे ॥ खांड खोपरा गिरी छुहारा आप लदावण आयो ॥५॥ भिलणी कांइ थारे भूवा लागी जखरी जूटण खावै रे ॥ ऊंच नीचकी शंक न आनी रुच रुच भोग लगावै ॥६॥ करमा कांइ थारे काकी लागै जिणरौ खीचड़ खायौ ॥ रेधावलियारौ पड़दौ करती रुच रुच भोग लगायौ ॥ ७ ॥ मीरा कांइ थारे मासी हूती जिणरा बिखरा जाऱ्यारे ॥ राणैं विषरा प्याला भेज्या विष अमृत कर डाऱ्या ।८।

बाल भोगको भूखौ बाला खौस खाय गयो बोरौ रे ॥ नान्ही बाइरो माहेरो भरणौं अब तनै लागे दोरौ ॥ ९ ॥ जीमणको जिमणाऱ्यौ तू तौ फिर सारै कामौ रे ॥ नान्ही बाइरो माहेरो भरता लागै घरका दामौंरे ॥ १० ॥ कह नरसीलौ सुंण सांवरिया आणौ है तौ आवौ रे ॥ ब्याही सगामें भूंडा लग्या यूं कांइ लाज गमावौ ॥ ११ ॥

पद राग सोरठ

सांवरा किसेरे दिसावर म्हाटौ ॥ टेर-आगे तौ तू आवतो रे बाला अब कांइ पड़ गयो घाटौ ॥ १ ॥ नामदेव थारै रंगेरे धौतिया जिणकूं छायो टारौ ॥ २ ॥ करमाके घर नितकौ जातौ खातौ खींचर खाटौ ॥ ३ ॥ ब्राह्मणका तू तांदुल खा गयो विदुराकौ साग रु बाटौ ॥ ४ ॥ थांरी तो जीभ चटौकड़ी रे सांवरा म्हांरै नहिं छै चाटौ ॥ ५ ॥ बक-बक कर म्हारी जीभ दुखाई तैं ढलवाह्यो न भाटौ ॥ ६ ॥ म्हारी बेल्या आंख खुजाई पगके बांध्यो पाटौ ॥७॥ भगत-वछल बिडद झूठो म्हारा बाला थारों तौ जिवड़ौ काटौ ॥८॥ जे थारौ बिडद बधायो चावै खोल कानको दाटौ ॥ ९ ॥ हूँ तौनै सिवरूं हूं भर माहेरौ करल्या आटो साटो ॥१०॥ भणै नरसीलौ सुंण सांवरिया यो जस क्यूं न निखाटौ ॥ ११ ॥

पद राग दीपचंदी

नाथ थानैं जानत हूं दिन दिनका ॥ थे तो ताऱ्या कोर-अरु गिनका ॥ नाथ थानैं० ॥ टेर-नाई कीर कसाई तारै भेद कहूं भिन भिनका ॥ घोघू कीता कुबज्या तारी संग किया अहिरिनका ॥ नाथ० ॥१॥ डूम भील कौली कुल तारे पला

न छीवै जिनका ॥ ब्राह्मण कुलतै लाज मरत हौ तिनसैं तोऱ्या तिनका ॥ २ ॥ कीर कुम्हार ढेढ अरु धोबी झेंवर मोची पिनका ॥ उत्तम उधारणतै तुम हारे ज्यों तारे धनि धनका ॥३॥ नीच निवाज करत हौ प्रभुजी उज्ज्वल कुलते छिनका कह शिवकरण भक्त नरसीलौं काज सुधारो इनका ॥ ४ ॥

दोहा

नीच निवाजस करणकी, तोहि परी है बान ॥
एक बिराह्मन तार दे, नर निरधन है जान ॥ १ ॥
धोय हाथ दरियाव बह, जगमें कीरत होय ॥
विन आयां शिवकर्ण कह, भगत करैं नहिं कोय ॥ २ ॥
मौय भरोसो बापजी, जगतारण जगदीश ॥
नान्हीं बाईरे मांहरे प्रभु, आस्यौ बिसवा बीस ॥ ३ ॥
तन मनकी जानत सबै, मोपै टको न दाम ॥
लक्ष्मीसहित पधारज्यौ, सकल सुधारण काम ॥ ४ ॥
ब्रज डूबत धाऱ्यो हरी, गिरा गोवर्धन हाथ ॥
गज ताऱ्यो जद धारियो, चक्र सुदर्शन हाथ ॥ ५ ॥
करुणासिंधु कृपालु हरि, करी करी हित दौर ॥
सुन बाई नरसी कहै, करसी कारज और ॥ ६ ॥
पूछैं पुत्री बापतैं, गज तारयो किण वाय ॥
काहां भीर भांजी प्रभू सो मोहिं भेद बताय ॥ ७ ॥

सोरठा

जनरञ्जन प्रभगञ्ज; भक्तभीर-भंजन हरी ॥
हरी करीकी पीर, नीरमांहिं नरसी कहै ॥ ८ ॥

गजराज उधारण

ग्रहा गह्यो गजराज नाथ विना कुण तारै दूजौ ॥ रे हरी विन कूंण तारै दूजौ ॥ भक्तवछल भगवान कृष्णकौं प्रेमसहित पूजौ ॥ टेर—चैत महीनैं मस्त भयो गजराज मदन छायौ ॥ घेर लई निज नारगह्लिका नीर निकट आयौ ॥ धरनि पग धऱ्यो कमठ थर हऱ्यो कूद कर पऱ्यो केलजल कुंजर अति रूजौ ॥ ग्रहा गह्यो गजराज० ॥१॥ वैशाखां जलमांहि ग्रहा गजराज आन ग्रास्यो ॥ बिकल भई सब नार कुटुम सब नीर छौड़ नास्यो ॥ उरझ कर पऱ्यो अखारन अऱ्यो कुटुम परहऱ्यो अबै कोई सङ्ग नहीं सूजौ ॥ ग्रहा गह्यो० ॥२॥ ज्येष्ठ महीनै युद्ध ग्रहा गजराज कियो भारी ॥ विकल भयो कुञ्जर कुल सारो बिलख रही नारी ॥ फंद अतिपऱ्यो मगर बल कऱ्यो दंत धर डऱ्यो तौहु गजराज खूब जूझौ ॥ ग्रहा गह्यो० ॥३॥ आषाढ़ां आकाश बूंन्द घन वीच घट छाई ॥ उमंग घमंड घनघोर चमू चहुँ औरन चढ़ आई ॥ मगर थरहऱ्यो अँग खरखऱ्यो देखकर डऱ्यौं फौज कोई ले आयौ दूजो ॥ ग्रहा गह्यो० ॥ ४ ॥ श्रावण नदियां सघन पूर उत ग्रह जौर आयौ ॥ खैंच लियौ जल बीच मगर जब कियो आप भायौ ॥ पिसुनवस पऱ्यौ अंग थरहऱ्यौ महाबल कऱ्यौ नार मिल बाहरकूं अजौ ॥ ग्रहा गह्यो० ॥५॥ भाद्रव भीर चढ़ी त्रिय गजकी जुद्ध कियौ भारी ॥ पकर सूंडमें पूंछ ऐंचती अहिपतकी नारी ॥ लंगरां जरचौं खैंच बल करचौं तनक तन टरचौ डाब सबकूं ऐसो सूजौ ॥ ग्रहा गह्यो ० ॥६॥ आसौजां मैं ग्रहजाल सब कुटुम सहित डारचौ ॥ दोऊं ओरके लगे झपट्टे लरत-लरत हाऱ्यो ॥ भंवर मैं पऱ्यौ दुसह दुख डरचो

नीरमैं तऱ्यौ अबै कोई साहक नहिं सूजो ॥ ग्रहा गह्यो गज
॥७॥ कार्तिक कँवल फूले नानाविधि बनचर हरखाये ॥ लि
पुष्प फल पत्र सूंडमैं नभकौ बरसाये ॥ सरन अनुसऱ्यो चर
चित्त धऱ्यो दंडवत कऱ्यौ गगनमैं नारायण सूजो ॥ ग्रहा गह्
गज० ॥८॥ मिगसर कृस्य भयौ तनसेती फंद पऱ्यो भारी ।
भयौ दीन बलहीन छीन कोई लगे नांहिं कारी ॥ सात अ
झऱ्यौ नीर बहु ठऱ्यौ अंग सरसऱ्यौ चमकाचित कुंजरत
धूजो ॥ ग्रहा गह्यो गज० ॥ ९ ॥ पौस महींनैं ठंढ पड़ी ज
हाड मांस सूका ॥ जलचर मस्त चरै जल मांही बनकर सबक
भूखा ॥ चाम सब सऱ्यौ नीरमैं पेट नहिं भऱ्यो उदरमें देत
कहा डूबौ ॥ ग्रहा० ॥ १० ॥ माहा मास गजराज हार क
तनकी सुध भूल्यौ ॥ दिन-दिन ग्रहा जौर कर ऐंच्यो गहरे जल
झूल्यौ ॥ सांकरे पऱ्यौ मान परहऱ्यौ मीचतैं डऱ्यौ पगनमैं
तुर्त आय उरझो ॥ ग्रहा० ॥ ११ ॥ फागुन सूंड तनक र
बाहर स्वास नहीं आयौ ॥ राम राम ररंकार ऊचऱ्यो गरुड़
छाँड धायौ ॥ याद हरि कऱ्यौ बेगसे खऱ्यौ चक्र कर धऱ्यो
फेककर फन्द काटऊजो ॥ ग्रहा गह्यो० ॥१२॥ कह शिवकर-
णदास नरसी लौ राधाकृष्ण रटै ॥ पढ़ै गजेन्द्रमोक्ष नार नर-
जमका फन्द कटै ॥ सरणा उद्धऱ्यौ दुःख तब टऱ्यौ जनम
नहिं धऱ्यौ भेद यह ग्रन्थनमें सूझो ॥ ग्रहा गह्यो० ॥१३॥

नान्ही बाई बोली-दोहा

गज ताऱ्यौ एक बरसमैं, भयौ दीन बल हीन ।
कहा ढील पुत्री कहै, तेरे तौ दिन तीन ॥ १ ॥

हरि बरसै एक पलकमैं, पुरवे च्यारूं देस।
नान्हींसूं नरसी कहै, नाला खाल भरेस ॥ २ ॥
गदगद वाणी रुदन कर, नरसी करुणा कीन।
चौंक उठे हर नींदतैं, प्रभु भक्तां आधीन ॥ ३ ॥
गज तार्‌यौ जद औ जग्यो, तज लक्ष्मीको साथ।
गरुड़ छोड़ शिवकरण कह, चक्र चलायो नाथ ॥४॥

पद राग सोरठ चाल मारू

जब नरसीजीने करुणां करी ॥ द्वारकामैं सूता हूता औ जग्या हरी ॥ टेर—राणीं तो रुकमिणी खकखांमाँ हीं करे ॥ मौतीडारो थाल भरकर आरती करै ॥ १ ॥ कांई बंदगी मैं प्रभू चूक परी॥ काची तो निद्रामें सूता औ जग्या हरी ॥२॥ म्हारा तो भगतां मैं राणीं भीर परी ॥ माहेरो ले जाणो म्हांने इण ही घरी ॥ ३ ॥ राधा तो रुकमण हरिके जौंड्या दोनूं हाथ ॥ माहेरो तो म्हानैं ले चाली ज्यो साथ ॥४॥ सैंजौडैं भरालां थे सुण ज्यो रणछोड़ ॥ भगतांरा महिरारो म्हानैं आवै कोड़ ॥ ५ ॥ थारा तो मनमाहीं राणी जरेली नाहीं ॥ नेग तो करणा छैं बैठे व्याणाकी तांई ॥६॥ नरसीका सगा छैं सो तो आपणा सगा ॥ बूढली व्याणके पड़सी लागड़ौं पगा ॥ ७ ॥ थे तो यूं जाणौं ली राणीं पती म्हारे स्याम ॥ नान्हीं बाईरी सासू आगे करणौं पड़सी काम ॥८॥ नान्हीं बाईके नहीं छै जनमकी माय ॥ ऊणसूं तो मिलणों पडसी कंठ लगाय ॥९॥ नान्हीं बाईने आबेली जनमकी भाथ माई चीत॥ नरसीजीकी बालकीका आंपाई माईत ॥ १० ॥ दिवराण्या जीठाण्यानैं थे जीकारा दीज्यौ ॥ नान्हीं बाईकी नखदूलीसूं

डरताई रीज्यौ ॥११॥ इतनौ थे करार म्हांसू काल करौ ॥ नान्हीं बाईरी सासूं आगैं पाणीडौ भरौ ॥ १२ ॥ वाणिवा वीराणी हंदौ कर लीज्यौ रूप ॥ कोई नहीं जाणैं राणी द्वारकाकौ भूप ॥ १३ ॥ जावौजी गिरधारी ल्यावौ माहेरौ मुलाय ॥ कहस्यौ ज्यूं कर लेस्यां थे तो दीज्यौ फरमाय ॥ १४ ॥ मंहदी मौली कर ऊबटणौ माथौ चोटी न्हाय म्हे तौ म्हाकै त्यारी बैठी महा प्रसादी पाय ॥ १५ ॥

दोहा

पकरसहित पधारबा, त्यार हुआ रणछोड ॥
सौंज लई सब सौंधिके, कर कर मनमैं कौड ॥१॥
सकल सौंज भेली करै, धरै जबर भर बाथ ॥
सुखसारण गाडा भरै, हरजी अपणै हाथ ॥ २ ॥

पद राग सोरठकी लूर

चढ़िया हरजी द्वारापुरकी हाठ बाइनै भात जमौ लवे ॥ टेर-खौल्या हरजी कुबेर भंडार काढया तौ सेलानैं प्रभूजी बाफता ॥१॥ कढयाजी हरजी जरियां हंदा थान रेसमी किरस चीवौ कपड़ा ॥२॥ लीना प्रभूजी मेण्यां हंदा वेस नान्हीं तौ बाईनैं बौरंगा चूंदड़ी ॥३॥ काढया हरजी थिरमांव नात मिसरू मरीना काढया पालचा ॥ ४ ॥ काडया हरजी कुलरकवाण सालू तौ काढया छे ठाकुरसावटू ॥५॥ लीनालीना जरकस हंदाकेस मुखमलनै माई चूँदडी ॥६॥ खौल्या प्रभुजी बजड किंवाड़ खजाना गहणा वौ रतनजडावका ॥ ७॥ लीन्हीं प्रभुजी मौती डरीमाल चढ़ता गहणा वौ घण मौलका ॥८॥ लीन्हा प्रभुजी रतनजड़ाव छलानै अंगूठी बींटी मूँदड़ा ॥९॥

नखसिख सुथर संवार पेरावौं नागरकुल सब पहरसी ॥१०॥ नान्हीबाईरौ कुटम परवार सकल सिंणगारण सारू हरि चाल्या ॥ ११ ॥ लीन्हां हरजी सौनां हंदा तीर सिलाडी लीन्हीं छै ठाकुर सौवनी ॥१२॥ बांधी बांधी रुपियां हंदी पौट म्होरा तो बांधी वो प्रभुजी मनसवीं ॥१३॥ धरिया हरजी महाजन हंदा भेस सेठाण्यां साथ वौ चत्रभुज ले चल्या ॥१४॥ पाली हरजी पूवंली परीत किसन वणिक बांधी गांठड़ी ॥१५॥ बांधी हरजी पचरंग पाग जामौ तौ पहऱ्यौ छै ठाकुर केसऱ्यां ॥१६॥ माहेराको बांध्यौं प्रभुजी मौड कलमां तो टांकी छैकानपै॥१७॥ चाल्या हरजी नरसीलारे काज कांख वहीनैं कर कौथली॥१८॥ घुडलां हरजी बांधी गूवरमालहल्यांरे बांध्या हरजी टौंकऱ्या ॥ १९ ॥ चंनणियांरा रथ सिंणगार चाल्या जूनां तो गढरा मारगां ॥ २० ॥ लीन्हीं हरजी रिध सिध धार राधा तोस लीन्हीं छै रुकमणीं ॥२१॥ गावौ थे तौ माहेरारा गीत सब मिल हरख बधावणां ॥ २२ ॥ रथ हांकै जी गोपाल कह शिवकरण सताबसूं ॥२३॥ भल-भल सुगन मनाय हितकर चाल्या छै भरवा माहरौ ॥ २४ ॥

दोहा

मत कोई अचरज मान, ज्यौ संतां राम सहाय ॥
सुखसारण कर बंदगी, अबही प्रगटै आय ॥ १ ॥
नट नाचै काचै मतै, राचै नहिं हरि चर्ण ॥
मनसाचे माचें नृसी, प्रभु राचे शिवकर्ण ॥ २ ॥

इति श्रीभक्तवत्सल बिडदरागकौंतूहल नरसीमेहेताका मामेरा
षष्ठ प्रकाश ॥ ६ ॥

सप्तम प्रकाश ७.

पद राग सोरठा

सुरगो नान्हीं बाईरो माहेरो ॥ टेर—ये तौ धन राध धन रुकमणी धन धन छै वौये तो रिधसिध नार ॥१॥ धन रथ बहुल्यानैं घोडला धन धन छै वोसांवलसारो साथ ॥२॥ ये तो धन जूनागढ़ द्वारका ॥ धन धन छै जी प्रभु नगर अंजार ॥ ३ ॥ ये जी आज सूरज भल ऊगिवौ दरसण करस्यां जी नरसीजीरा जाय ॥ ४ ॥ शिवकरण कहै जी वधावणां प्रभु चढियां छै भागतांरी बाहार ॥ सुरगो नान्हीं० ॥ ५ ॥

दोहा

हरि जूनैगढ़ पहुँचिया, सूरज ऊगे सेह ॥
जाय चोहटे पूछियो, नरसीजोको गेह ॥ १ ॥

सोरठा

पाणीरी पणिहार, नरसी महताको घर किस्यो ॥ १ ॥
सूरज साम्हीं द्वार, केलझवरके वारणैं ॥ २ ॥
पोल पहँता जाय, करि नरसीजीरी पूछना ॥
महतो गयौछै अंजार, नान्हीं बाईरे माहरै ॥३॥
वेसमद शिरपाव, किताक नरसी लैगया ॥
किता एक पौहोंणपिलांण, किताक भाई संग गया ॥४॥
ले गयो रामजीरो नाम, सौलै सूरचा सँग गया ॥
सांवल कियौ विलाप, हौं तातौ मिलता सही ॥ ५ ॥
महणौमसकरी, सूरदास दसबीस, लुल्ला लँगड़ा संग गया॥
जौ दरसणकी ख्यांतां, तौ थे लारै क्यानैं रया ॥ ६ ॥

सुणी मसकरी स्याम, कृष्ण वणिक ऐसे कही ॥
दरसणरी मोहि ख्यांत, नरसीसूं मिलसां सही ॥७॥
किता एक कौस अंजारे कहां, होय मारग नीसरे ॥
विरद वधावणहार, कृष्ण कदे नहिं बीसरै ॥८॥

दोहा

मारग लयौ अंजारकौ, श्रीपति रथ ललकार ॥
ठीकदुपेरी मांहरौ, भरणौं आज अंजार ॥ १ ॥

राग मारू सोरठ

थौडा धीमां हाकौजी थे नंदेकंवार ॥ टेर-रथथांरो कडकै हीयो म्हांरो धडकै टूटै जी हिंवडारा हार ॥१॥ गावत डारां म्हारा कंठज धूजे हचका तौ लाग छै अपारा ॥२॥ ऐसा कांई हारी हुज्य स्यांमारे परी अस्यां थारै रथडारी लार ॥ ३ ॥ पाली२ चालां सांवरा मंगल गास्यां पहुँचा तुरत अंजार ॥४॥ कह शिवकरण भनैं इस राधा रूक्मण राजकुँवार ॥ ५ ॥

दोहा

राधा राणी रूकमणी, अरज करै सुण स्याम ।
थौडा धीमा हांकता, थारो कांईज बिघडे काम ॥१॥
सुण राधा सुण रूकमणी, नरसी करै विलाप ।
आसर पर पूगा नहीं, लागै भगत सराप ॥ २ ॥

पद राग सोरठ

धीमां नहीं हांकां राधारूकमण नार ॥ टेर-सुखभर सौया राधे मौडा रथ जोडचा छिन छिन होत अंवार ॥१॥ भगत हमारा राधे गया छै अकेला साथे वांके साधांरी बेगार ॥२॥

भगत हमारा राधे है निरवणी बिलखै छै राजकुवार ॥३॥
औरांरा माहेरा राधे कांकड पूगां आपणैं तौ भईछ अंवार ॥४॥
बात कहतां हरजी नगर पहुंचता कर भगतनकीनसार ॥५॥

दोहा

नगर अंजारे गौरवै, हरि लीन्हौं रथठांम ।
पणि हारचां नैं पूछियौ, किस्यौ नगर कहो नाम ॥१॥
पणिहारी वायक कहैं, यो छै नगर अंजार ।
थे किंणरे थाय पहुंणां, अब जास्यौ किंणरे द्वार ॥२॥
श्रीरंगजीरा पांहुणां, नरसी जीरी लार ।
महरकरौ म्हां ऊपरै, दोऊ बतावौ द्वार ॥ ३ ॥
टूटी टपरी साम्हली, नरसी जी तिहां ठाम ।
मण्डप ऊभैं चौहटै, श्रीरङ्गजीकौ धाम ॥ ४ ॥

पद राग सोरठा चाल मारू

श्रीरंगजीरा घरमा है राड़ भई ॥ नराणे तौव नान्हीं बाईने औझाड़ दई ॥ टेर-थारा ये बापकै माहेरौ कठै तूम्बा भर भर ल्यावै जूनागढ़ छै पटै ॥१॥ तालिया बजावैं मुडियौ पेट भरैं ॥ सामीड़ौ माहेरौ भाभी कायसू भरै ॥२॥ माहेरौ भरता तौ वाने लागै बड़ा भार ॥ नौतरौ देवांतौ मौडचा जीमणने तयार ॥३॥ एकने बुलावता तौ लारे बीस आवै ॥ पाच पाच सेर पक्को सून्या सांमी खावै ॥४॥ नान्ही बाई जलकौ तौ कलस लियौ ॥ पाणीडै जावणकौ तौ मतौ ही कियौ ॥५॥ कुटुम कबीलौ लडवा लागौ पल्ला झाड़ ॥ नान्हीं बाई तौ राड़ आडीकर बाड़ ॥६॥ कह शिवकरण समझ मनमाय ॥ पाणीरौ मिल कीन्हौं बाई सरवर जाय ॥ ७ ॥

दोहा

ले चुकल्यौ सरवर गई, विलखत राजकुँवार ॥
रींड मिटावण कारणैं, सरबर लागे बार ॥ १ ॥

पद राग कहरवौ सोरठकी लूर

हूं तौ सरवर पांडीडै चाली ये माय नरसी महताकी बालकी ॥ टेर—जल भरूंके डूब मरूं ये म्हारी माय नरसी० म्हारौ सुसरौ जो घणां बखतावर म्हें तौ बावल निरधन पायौ है ॥ माय नरसी० ॥१॥ दिवर जिठाण्यां मान महणाई देवै मनै सासू नणद सतावै ॥ ये माय० ॥२॥ पडौसण पेमी लड़ै नित नेमी वा तौ बलतीमैं पूलौ न्हांखै ॥ ये माय० ॥३॥ देवरियौ दूतौ फिरै रे निपूतौ म्हारा सासुराजीनैं जाय मिलावै ॥ ये माय० ॥४॥ ससुरौजी सपूता एक न मानैं देवरियौ विलख पाछा आवै ॥ ये माय० ॥ ५ ॥ म्हारै तौ नहीं छै जामण जायौ वीरौ अब कुंण म्हानै चौर ओढ़ावै ॥ ये माय० ॥६॥ म्हारै नहीं छै जनमकौ माई मानैं हिवड़ै कूंण लगावै ये माय ॥७॥ म्हारै तौ बाबौजी असल निरवाणी ज्यारे पल्ले पइस्यो नाहीं ॥ ये माय० ॥ ८ ॥ म्हारै तौ नहीं छै मामौनै मौसालौ म्हारौ सांवल काज सुधारौ ॥ ये माय० ॥९॥ के तौ सांवलियौ काज सुधारै ना तौ परत पाछी जाऊँ ॥ ये माय ॥ १० ॥ कह शिवकरण मत्तौ करवाइ प्रभुके चित ल्याऊँ॥ ये माय० ॥११॥

दोहा

खाली चुकल्यौ हाथमें, ऊभी सरवर पाल ॥
भर चुकल्यौ घर जावसूं, तब आसी गोपाल ॥१॥

सोरठा

नैना नीर झरंत, वाई ऊभी उनमुनी ॥
कहै दरक शिवकर्ण, प्रभु मारग हेरै खड़ी ॥ २ ॥

दोहा

गऊ वच्छ बच्छा गऊ, अन्तरगत दोहुं प्रीत ॥
औत पौत शिवकर्ण कह, हरिभक्तां यह रीत ॥१॥

पद राग कल्याण

हेली म्हारा बालजीरी ऊभी जोऊवाटड़ी॥ ये जी गिरधारी जीकी उभी जोऊ वाटड़ी॥ टेर-कंवरी कलस लियां कर ठाड़ी औडया छै कसूंमल घाटडी ॥१॥ कांई तो माहेराकी सौज खरीदौ किस्वा तौ बजाजीरी हाटडी ॥२॥ कांई थानै राधा रुकमण रोक्या साथै आंवणकी आटडी ॥३॥ कांई थे माल उधार खरीदौ साहकरी कांई नाटडी ॥ ४ ॥ नान्ही बाई कहै भव अधिक अथाहमाहीं गिरिधर तिरबांनै पाटडी ॥५॥

पद राग गरभा चाल गुजराती

वीरा गिरधर लाल हण अवसर नहीं आयौ रे फिर कब आवसी ॥ टेर-म्हेतो जाण्यो छौ रे माहेरौ ल्यासी ॥ तू तौ खाली हथन आयौ रे ॥ फिर कब० ॥१॥ मनै खरो रे भरोसो गिरधारी ॥ तौ पत पंचामैं खोई रे ॥ फिर कब० ॥ २ ॥ म्हारौ उमंग २ हियरो उबकै म्हारि छाती भर भर आवै रे ॥ फिर० ॥३॥ हूँ तौ माया विहूणी डीकरी म्हेहीं निरधनबावल पायौ रे ॥ फिर० ॥ ४ ॥ नान्हीं बाई कहै सुण सांवलिया म्हारे मात तात तुहिं भाई रे ॥ फिर० ॥५॥ कह शिवकरण मिलन तौ आतौ थारौ माहेरौ भर पाई रे ॥ फिर० ॥ ६ ॥

दोहा

अजामेल गज गीधके, आयौ बंधी पेज ॥
माय बिहूणीं कारणै, कठै लगाई जेज ॥ १ ॥
आतो तौ मिल जाव तौ, हाथ कापड़ौ लेर ॥
सुखसारण अवसर गया, कठै मिलै लो फेर ॥ २ ॥
आज अठै आयौ नहीं, जठै तठै नित जाय ॥
भक्तविडद शिवकर्ण कह, दीज्यो मती गुमाय ॥ ३ ॥
इन अवसर आतौ अठे, रहतौ अविचल नाम ॥
अवसर बीते मेहड़ा, फिर बरसौं किण काम ॥ ४ ॥

पद राग मल्लारकी लूर

ऊभी वाई सरवर पाल ऊँची चढ़ै औ नीची ऊतरे ॥ टेर-
आंवडल डांरी गहरी छांय जिण चढ़ बैठोजी सूवटौ ॥१॥
सूवट डारे धरमकौजी वीर देख झूलरियानै आंवतौ ॥ २ ॥
सूवौ बैठौ बैठौ टौकीजी जाय पछिम दिसाजी साम्हौ जोइयौ
॥३॥ झणीझींणीं उडजी गुलाल झमके जूनावौ गढरा मारगां
॥ ४ ॥ पथडांरा कलस भलकाय बहल्यांरा वाज्या बाई
टौकरा ॥५॥ घुडलारी गूघरमाल देखौ झूलरियानै आव तौ
॥६॥ रथ बैठाजी गोपाल रूप निहारयौ रणछोडकौ ॥७॥
उतरी बाई सरवर पाल आडी तौ फिरनै कंवरी पूछियौ ॥८॥
थे छौ कौठारा सिरदार किंणरे तौ जास्यौ वीरा पांवणां ॥९॥
कह द्यौ छावज मनजीकी बात थारां तौ गीत सुहावणां ॥१०॥
प्रभुजी छे मथुराका सिरदारा द्वारवतीका वौ रावजी ॥११॥
वसुदेव जीरा समरथ पून देवजीकी छे बाई डीकरी ॥१२॥
बोले रिध सिध नार वाई वौ सहोदरारा वीर छे ॥१३॥ राणीं

रुकमण सिरमौड सांवलसाहा यांरौ नाम छै ॥१४॥ श्रीरंग-
जीरा मिजमान नरसीमहता संग पांवणा ॥ १५ ॥ भरस्यां
माहेरौ अंजार जिणरावौ वीर बधावणा ॥१६॥ नान्हीं बाई
करसी म्हांरा चाव इण विध गीत सुहावणा ॥ १७ ॥

दोहा

उमगि वाई उमग हिय, सुण रिध सिधकी बात।
जल भरती छी छांणके, अण छांण्योइँ ले जात ॥१॥
उणियारत मेटणहरी, दीनबन्धु महाराज।
सुखसारण तारण तिरण, प्रभु सारण सब काज ॥२॥

पद

हूँ तौ थांकी बाटडली जौबै छीजी गिरिधारीजी थे तो भल
आविया॥ टेर-कूकूरे परा भलाई पधार्‍या राधा तो रुकमण
लाविया श्रीलक्ष्मीजी रथसूं उतऱ्या नान्हीं बाई कंठ लगा-
विया ॥१॥ तब सांवल सिरपै कर फेऱ्यौ आनँद हरख बधा-
विया ॥ नरसीजीकी कुसल पूछकर नैंन नीर ढलकाविया ॥२॥
नान्हीं बाई पूछै कुसल परस्पर रिध सिध कंठ लगाविया।
सौबन सुरज आज भल ऊगौ गिरधर मो घर आविया ॥३॥
चुकल्यौ लेकर चली है भवनकूं मनमें हरख वधाविया॥
सासूजीनै कहै उठो माहरौ वधावौ वीरौ गिरधर आविया ॥४॥

दोहा

नान्हीं बाईका वचन सुण, हँसी कुटुमकी नार।
सास हँसी नणदल हँसी, हँसियौ नगर अंजार ॥१॥
निरधनकूं सब जग हँसै, एह पुरातन रीत।
सुखसारण प्रभुकूं प्रिय, अन्तर सांची प्रीत ॥ २ ॥

लगी सुर्त हरिचर्णमैं, सिद्ध मनोरथ कर्ण ।
दिये हर्ष भावै नाहीं, कहै दरक शिवकर्ण ॥ ३ ॥
सास नणदसूं यूं कहै, रहसी जुग अखियात ।
सांवल भरसी माहरो, ज्यारी अविचल रहसी बात ॥४॥
नान्हीं बाई हरखर, चढ़ी तिखंडे जाय ।
लाल नणदनैं यू कहैं, थांनु देऊँ वीर बताय ॥५॥

पद राग सोरठ चाल मारू

देखौनैं सासूजी म्हारा पीयररो परवार ॥ रथमैं बेठो सांवल वीरो भौजायाँ छैं लार ॥ टेर-वीराजीरी पाग ऊपर सेहरो झलके ॥ भोजायाँरा सीस ऊपर चूनडियां चिलकै ॥१॥ मौत्यां दी झालरीनै हीरा हंदीलव ॥ वीराजीरा रथडारी झसकै छै झूम ॥ २ ॥ हाल्यांके हीरांका-गहणां वहलियाँके झूल ॥ सूरमकेरी किरणां झलकै रथडांराफूल ॥ ३ ॥

दोहा

अनंत औपमा आपकी, कवी न सक्के कथ्थ ।
छड़ मौला रतनां जड़्यां, सांवलसरां रथ्थ ॥ १ ॥
कवि उपमा किणविधि कहै, महिमा अगम अपार ।
शेष सहस्त्र शिवकरण मुख, तिनहु न पायौ पार ॥२॥

पद

बाइ ऊभी रंगरे छाजैं घुडल लारे जांझर वाजे ॥ टेर-बाई खडी झरौवां झांकै ॥ देखौ आयौ माहरो म्हांकै ॥१॥ बाइरी सासूनणद लडैं छै । मत नीची आंण पडै छै ॥२॥ यौ छाजौ टूट पडैलौ ॥ म्हारा व्यावमें बिघन पड़े लौ ॥३॥ बहु मामेराकी ढूकी ॥ तू तौ बेस पहरवा ढूकी ॥४॥ केइ गांवमें व्याह गणांछै

ज्यारै आवे बौत जणा छै ॥ ५ ॥ कोइ मारग बहसो आवै ॥ म्हारी बहु वडवीर बधावै ॥ ६ ॥ थारो बाप माहरै आयौ ॥ सून्यांग टौला लायौ ॥ ७ ॥

नान्हीबाई बोली-दोहा

सासूजी धीर धरौ, आयौ सांवल सेठ ।
नरसी भरसी मांहरो, करसी सरसी भेट ॥ १ ॥
बाईसूं सासू लड़े, मत कर झूठी बात ।
लोग हंसै अब नग्रको, महणांदे सब जात ॥ २ ॥
झीणी बाँधै पागड़ी, झीणौं सावलजीरो साज ।
मौरांपाछै गठांड़ी, बड़ गया आप बजाज ॥ ३ ॥
लक्ष्मीसों भगवान मन, मनसूबाकी बात ।
नरसीजीके भवनको, चालौ सगलौ साथ ॥ ४ ॥
म्हे आवां छां चौहटै, थे चालौं गलियां ।
नान्हीं बाईरे आंगणे, करस्यां रंगरलियां ॥ ५ ॥

इति श्रीभक्तवत्सलरागकौतूहल नरसीमेहेताका मामेरो
सप्तम प्रकाश समाप्त ॥ ७ ॥

अष्टम प्रकाश ८.

पद राग सोरठ चाल मारू

हेला मारै सेठजी थे दरवाजौ खोलो॥ माहेरौ तौ भरो तौ कोई कपड़ा तौ ल्यौ ॥ टेर--दौडियौ नराणौं देवर खिड़की दीन्ही खौल कहो जी सेठजी थांरा कापडलांरो मौल ॥ १ ॥ सवा हाथका कापड़ारा रूपैया हजार॥ साबूता थांन को तौ अन्त न पार ॥१॥ इतना महँगा कापड़ा तौ नरसी महतौ लेसी॥

ज्यारै पल्लै रोकड़ी छै थौकड़ी गिण देसी ॥ ३ ॥ ज्यांकनै वघी छे सेठां रुपिया हंदी पौंट ॥ माथा ऊपर टोपी राख पून्दमैं लंगोट ॥ ४ ॥ हसनै मूलक कर बोल्या छै हरी ॥ नरसीजी आया छै कांई मिलस्यां तो खरी ॥ ५ ॥ कठे उतऱ्या नरसीजी थे डेरो तौ बतावौ ॥ मिलवारी तौ ख्यांत म्हानैं तुरत मिलावौ ॥६॥ नान्हीं बाइरौ देवरियौ पूछे छै नराण ॥ थांरे तौ नरसीरे सेठां कदकी पिछांण ॥ ७ ॥ म्हारे तौ नरसी रे बाला आगलौ वैवार ॥ देसी तौ ले लेस्यां नहिं तौ करदेस्यां उधार ॥८॥ भौलौं छै रे बाणियौ तू मूरख गिवार ॥ महता तो नरसीसूं भाया मती करै बैवार ॥ ९ ॥ न वौडी हवेली जठै ब्यायां हंदी जान ॥ फूटौड़ी दूकाना बैठे नरसीरा मकान ॥ १० ॥ सेठांकी भौलांवण सुणकर सूत्या सामी तौले ॥ देखौ जी नरसीजी जाणै किसनौ खाती बोलै ॥११॥ मारगमें गाडुली पूठी जिणरो बोल पिछाण्यौ ॥ सूरदास कह बौली सुणकर जब नरसीजी जाण्यौ ॥ १२ ॥ आवत देख्यौ सांवल नरसी बैठौ छै रिसाय ॥ लेजा थारी गाठड़ी आयौ सरम गमाय ॥ १३ ॥ साम्ही मेले गांठड़ी अफूटा फिर जावै ॥ नरसीजीनैं सांवलियो तौ मायांई मनावै॥१४॥ हसीनैं मूलक कर बोल्या छै हरी॥ माहेरौ ल्यायां छां नरसी देख तौ खरी ॥ १५ ॥ माडाणीं दिखावण लांगा आंख्या लीन्ह मीच ॥ बोल्यौ ना सूहावै जिणसूं कान लीन्हा मीच ॥ १६ ॥ बादीला भगतां रौसया कांई तौ करा ॥ ऐसी जौ जाणां तौ गांठ ल्यांयाके धरा ॥१७॥ चालण लागौ सांवलियौ जब गांठड़ी उठाय ॥ नरसीजी जाण्यौं रे यौ तौ ल्यायोड़ी ले जाय ॥ १८ ॥ उबौ रे सांवलिया तू ठाढौ रे

गौपाल ॥ ल्यायोड़ी गाठडली ह्मानैं दे जा नंदलाल ॥१९॥ हारे लारे नरसीजीनैं आगै सांवलसाय ॥ पौलीसूं नीसरतां पूगा बुगचौ पकड़चो जाय ॥ २० ॥ ठाकुर आगे नरजी तौ निरत करै ॥ यासूं म्हारा सांवलियांजी बौल्याही सरै ॥२१॥ बड़ा बड़ा तुमडांकी भेट धरै ॥ छौटी छौटी तूमडियांरी निछरावल करै ॥२२॥ तुलसीकीमाल दीन्ही गला मैं पहिराय ॥ गंगा गौली गोपीचंदन मेल्यो आगे ल्याय ॥ २३ ॥

दोहा

भीर भई सब नग्र नर, देखण दौड़े ख्याल ।
एवड़ छेवड़ सूरिया, बीचमैं श्रीगोपाल ॥१॥
कुसल पूंछि सब परसपर, मिलै जु कंठ लगाय ।
प्रेम बढचो छूटै नहीं, जनु वेल वृक्ष लिपटाय ॥२॥
भई उनमनी हिय हरष, नयन नीर ढरकाय ।
बँधे प्रेमके जेवड़े, कंठ न छोडचा जाय ॥३॥
कर नौछावर तूमड़ी, फैंकि दी फौड़ ।
दौड़ दौड़ ले वारणा, नरसी कडकन मौड़ ॥४॥

पद राग सोरठ

तें तूंबा क्यानै फौडचा साधांने क्यूं नहिं चौडचा ॥
टेर--म्हारा सदले तूंबा फूटा ॥ प्रभु आप जाय छा रूठा ॥१॥
येजी सांवलिया गिरधारी ॥ म्हारी वेल्यां फलसी भारी ॥२॥
हूँ तौं वरसा वरसी वाऊँ ॥ साधांरे भेंट चढाऊँ ॥ ३ ॥

दोहा

मित्र मिले बहु दिवसतैं, हरिमुख कियो उचार ॥
स्वामी भुरकी डारदी, यूं कहैं नग्र नरनार ॥ १ ॥

गांठ खौस घरमैं धरी, अब कछु ठगसी और ।
भयौ मंत्र बस बावरौ कछुक न लागौ जौर ॥२॥
अब इनते डरते रहौ, धरै सीसपर हात ।
नरसीसे डरसी नहीं, जाको सब धन हर ले जात ॥३॥
भगे देख नर नग्रके, ठगे नरसीयौ जांण ।
छीन लई यह गांठरी, परगट परी पिछान ॥४॥
सुख सारणकौ गत करै, नग्रमांहिं नर नार ।
नरसी ठग्यौ बजाजनै, भुरखी दीन्ही डार ॥५॥
अब इनतें दूरा रहौं, निज कीज्यौ बिसवास ।
स्वामी भुरखी डारदे, मत जाज्यौ कोई पास ॥६॥

पद राग कहरवौ

आयौ रे भगतारौ भीरी मौमी ल्यावौ गांठड़ी ॥ टेक-और सागांनैं इच्छा भोजन तौ विना नरसीनैं घाली लूखी सूकी घाटड़ी ॥१॥ और सागांरा महलां डेरा तौ विना नरसीनैं दीन्ही फूटी टूटी हाटड़ी ॥ २ ॥ और सगांनैं हींग लूढो ल्यातौ विना नरसीनैं दीन्हीं विना बानकी खाटड़ी ॥३॥ और सगांने छोड़ पथरणां तौ विना नरसीनैं दीन्हीं फाटी टूटी काथड़ी ॥४॥

दोहा

धनविहीन कछु पास ना, हम प्रभु दीन मलीन ।
कछू न वाना कर सकैं, इसे विधाता कीन ॥१॥

पद राग सोरठ

कांइ मनुहार करां सांवलिया थारी कांइ मनुहार करां ॥ टेर--अन म्हारे नाहीं धन म्हारे नाहीं छैठा छां पराये घरां ॥१॥ कासण बासण कपड़ौ वीनाहीं गहणैंई जाय धरा ॥२॥ मांग्यो

मिलै तौ उधारोहि ल्यावा भोजन आन करां ॥ ३ ॥ थारी गाठड़ी माड़ी केपड़ोइ दीसै म्हानैं दे तौ माहरौ भरां ॥ सांवलिया थारी ॥ ४ ॥

दोहा

कांइ कांइ सोदा ल्याइया, कांइ कांइ कांइ करी खरीद ॥
कुण कुण साथे आविया, म्हनै सकल बतावौ वीध ॥१॥
भगवान बोले-रीध सिध म्हारे संग है, आनंदमंगलचार ॥
माहेरौ औढावस्यां, सारेहि नगर अंजार ॥ २ ॥

पद राग सोरठ

आनंद बौत घणा वौ नरसीजी म्हारे आनंद बौत घणां ॥ टेर-म्हारी गांठड़ीमांहीं सब कुछ पावै भगताँरे काज फिरां ॥१॥ गिरिहों छुँहारा दाख चिरौंजी मेवा छै बहु विधना ॥२॥ मँहँदी मौली और सुपारी ल्याया छां म्हें मणाहीं मणा ॥३॥ कह सांवलियौ सुणौ नरसीजी चालौ क्यूंनीं माहेरौ भरां ॥४॥

सोरठा

आप उठाई गौठ, निज भगतांरे कारणैं ॥
नरसीजिरी वेगार, धरि व्यायाँरे वारणैं ॥१॥
मन्या ढह पड़िया साँकड़ी, गली अंजारकी ॥
पड़तार खुल गया नैंण, दातारा दरसण किया ॥२॥
निरधनको धन राम, सांचा नरसीरा सांवरां ॥
आया नरसीजीरे साथ, तौ दातां लौयण जिया ॥३॥

पद राग मारू

संांवल सेठ सेठणीं लक्ष्मी नरसी कारण आया जी ॥ निज भगतासूँ नातौं पाल्यो सीस बोझ धर ल्याया ॥ टेर-बणिक

संग बहु भीड़ घणेरी कलम कानपैं टांकी ॥ पवासाई बांध पगडी ऊँची पहरी आंगी ॥१॥ संग कुबेर साह बाण आयो रोकड बटावो साथे । और सखन सिरबँधी गांठडचा डाबो श्रीपति हाथे ॥ २ ॥ साँवल सखन सहित मंडपमैं सोभित दिनकर जैसे ॥ उडुगण सम सब नगर छबि तज प्रात होत ही ऐसे ॥३॥ विस्मय भए नग्र नर नारी मान तज्यौ भइ फीकी ॥ सबके सिरे तेघपर तुररो तीख रही नरसीकी ॥ ४ ॥ नवल नागरी निरख वदनछबि हरखि-हरखि मन मोहैं ॥ पूछत वाम परसपर छुपि छुपि कहो सखी ये कोहैं ॥५॥ साँवरी सूरत लगै सुहावनि भामनि सबै लुभानी ॥ कोऊ कहै यह नग्रसेठ हैं कोउ कहै राजा रानी ॥६॥ चौकस कर लक्ष्मीजी निंविया न्यायणजीके आगैं ॥ नगरकुलकी बड़ी बड़ेरी तिनके पायन लागैं ॥ ७ ॥ चकित भईं वचन नहिं निकसै सब कोइ रहीं ठगीसी ॥ बई चित्रसम रूप निहारैं दे न सकी आसीसी ॥८॥ श्रीरङ्गजीकी वृद्धि बड़ेरी जिनकों नैन नदीसैं ॥ लुलकर पाँय लगे लक्ष्मीजी विन दीन्हीं आसीसैं ॥९॥ सुनकर अमर पुष्प बरसाये देवदुंदुभी बाजी ॥ चहुँ दिस भयो उजास नग्रमैं जोत जगामिग जागी ॥१०॥ पुरजन चौंक उठे अति विस्मय भामनि हरख बधावैं ॥ दौरत एक एककै आगै सब कोई मण्डप आवैं ॥ ११ ॥ बंस उजागर नागर नरसी तनक बानगी बरण्यौं ॥ हरिजनको जस पार न पाऊँ कहैं दरक शिवकरण्यौं ॥१२॥

पद राग मारू

पारब्रह्म पूरण अविनासी विश्वरूप प्रभु धारे जी ॥ निरगुन सरगुन दरसाये माया त्रिगुण पसारे ॥ टेर–सतयुग मैं

हिरणाकुश मार्‍यौ नखतैं उद्र बिड़ारे ॥ जन प्रहलाद काज खँब धार्‍यो रूप नरहरी धारे ॥ १ ॥ रामरूप त्रेतामैं धरके रावणादि सब मारे ॥ लंका दई दास अपनेकौ देवन बन्ध विदारे ॥ २ ॥ द्वापरमें कंसादिक छेदे कीन्हे बहुत पँवारे ॥ राखी लाज द्रौपदीकेरी जुग जुग काज सँवारे ॥ ३ ॥ कलियुगमैं नरसीके कारण वनिकरूप प्रभु धारे ॥ कह शिवकरण बगलमें बुगचौ मण्डप माँहि पधारे ॥ ४ ॥

पद राग सोरठकी लूर

बैठा हरजी जाजम ढाल नौगज धरती दल चढचौ ॥ टेर-दीना दीना दुलीचा बिछाय श्रीरङ्गजी आदर कियौ ॥१॥ नान्हीं बाई निकट बुलाय हितसूं कीन्हीं पूछना ॥ २ ॥ नान्हींबाई आघी आव सब बातां दिलकी कहौ ॥३॥ किसडा तौ भरणां भात किसी ये करां पहरावणीं ॥४॥ जौ थां हारे तात सरधा सम पहिरावणी ॥ ५ ॥ बाई मन मुकलाय मनमान्यौ लै माहरौ ॥६॥ सांवल आया है द्वार ओरू तो ओछौ कायरौ ॥ ७ ॥

दोहा

मुख मांग्यौ ले माहरौ, जरा संक मत आण ॥
वर दीन्हौ शिवकर्ण हरि, कहि मम वचन प्रमाण ॥१॥

पद राग सोरठ चाल मारू

दिवराण्यां जिठाण्यानै तौ जरी कुअरी ॥ बडौड़ी नणदनैं माहीं चुन्दरी ॥ टेर-बडौड़ी सासूजीनैं साबटू वेस ॥ घाऊ सुसराजीनै जरी हंदौ खेस ॥ सुसराजीनैं औंढा दीज्यौ लाल बनात ॥ सासुजीनैं बेस दीज्यौ पूराई सात ॥२॥ जेठजीनैं

दीज्यौ रंगकी पौसाख ॥ गीगी बाईनैं साड़ी दीजो किमत रुपियां लाख ॥३॥ लिखियारे परवाणैं दीज्यौ सारी बसती ॥ नरायणजी देवरनैं थे तौ दीज्यौ ही मती ॥ ४ ॥

दोहा

सुखसारण हरि मुलकमुख, दीयौ सीसपै हात ।
बाई देवर टालियां, हलकी लागै बात ॥ १ ॥

इति श्रीभक्तवत्सल विडदरागकौतूहल नरसीमेहेताका मामेरा
अष्टम प्रकाश समाप्त ॥ ८ ॥

नवम प्रकाश ९.

पद राग मारू

श्रीरंगजीकी लाड़ बहु मिल सङ्ग सखी ले आई जी ॥ आवत नार मधुर स्वर गावत चालत चाल सबाई ॥ टेर--गंगाबाई नै जमनाबाई पेमाबाई आई। रेवानै तिरवैणीं बाई और सरस्वतीबाई ॥१॥ खेमां नेमां झमकूबाई मंडपमा हैं छाई ॥ कुँवर बहु और लाड बहू संग सखी अजब कुँवर बहु आई ॥२॥ राई रंभाभांणक हहुरे हातां महँदी राची ॥ कनखांदार कांचली सोहै ओढण चूँदड़ आछी ॥ ३ ॥ छोटी बड़ी नार नागरकी सहु मिल मंडप छायौ ॥ एक एकसौ रूप सलौनी तीखौ तेज सवायौ ॥४॥ कुन्द कलीसी दंत बतीसी मुखमैं बीड़ी राची ॥ नैन कटाक्ष निरखि गिरधरकौ मुदित फिरैं मुख पाछी ॥ ५ ॥ अकबककवचन प्रेम मतवारी लाज सरम सब भूली ॥ लौचनै पीयैं मधु जैसे प्रेमलता फर फूली ॥ ६ ॥ कोई कह नागर कोइ निरपत जात भेद नहिं पायो ॥ ७ ॥

दोहा

मौहन मूरत मौहनी, पढी मौहनी जाण ॥
बाल तरुण बृध प्रौढ सब, मोही तन मन प्राण ॥ १ ॥
नागरकुलकी नागरी, और मिलीं सब वाम ॥
वाँरौ गावत विहँसि मुख, ले ले मौहन नाम ॥ २ ॥

पद राग मल्हार

सहैल्यां म्हारी मौहन वीरौ आयौ ॥ टेर—नान्हीं बाई तौ ले कलस संजोयौ मोतियन थाल बधायो ॥१॥ धन धन है म्हारी बहू कुलवंती नरसी बावल पायो ॥ २ ॥ सब सखियन मिल भाग्य बखानैं सौवन सुरज उगायो ॥३॥ नान्हीं बाईके म्हांरे भलांइ पधार्‍या दल धरती चढ आयो ॥ ४ ॥ कह शिवकरण बधायां बटे छैं गिरधर मंडप छायो ॥ ५ ॥

पद राग मल्हार

देखो री गिरधारी वीरौ आज तो बजाज बण आयौ ॥ टेर—नान्हीं बाई तौ ले तिलक सँजोयौ चंगौ चीर ओढायो ॥१॥ बसुरंग चूनड सुरंग सुहावन टीपकसूं मल घायौ ॥२॥ आजू तौ बाजू मोतीडारी लूबां लंपाकोर चढ़ायो ॥ ३ ॥ अरुण उद्योत धनुषसौं भलखे मांणक रंग लजायो ॥ ४ ॥ नान्हीं नान्हीं बूँदां चमके चहुँ दिस दामनि दमक सवायौ ॥५॥ उमंड घुमंड वीरौ बरसण लागो सौवन मेह बरसायौ ॥ ६ ॥ नान्हीं बाई कहै दल बादल उलटचो रिध भंडार भरायौ ॥ ७ ॥ कह शिवकरण इन्द्र झड लागौं पुष्पन मेह बरसायौ ॥ ८ ॥

पद राग जैजैवन्ती

आज तौ सांवरियौ वीरो बणजारौ वीरौ माहेरौ ले आयोरी माई ॥ टेर—नौपत निसाण राजैं दुंदभी बधाई बाजैं डमंड घुमंड वीरो बरस सवायौ री ॥ आज० ॥१॥ रिधी सिधी साथ ल्यायौ संग ही कुबेर आयो लोकपाल इंद्र धायो बादरोसो छायो री ॥ आज० ॥२॥ मिसरू मरीनां ल्यायौ खाता तौ बनात ल्यायौ अतलस खींन खांसे खेपां भर ल्यायौ री आज० ॥ ३ ॥ साल तो दुसाला ल्यायौ सावदू खरीद धायौ भरके कतार वीरौ बनजाराही बण आयो री॥ आज ० ॥४॥ सौनांकी सिलारी ल्यायौ रूपैया ल्यायौ थाल ठबकायो बाईरौं हिवणौं सवायो री ॥ आज० ॥ ५ ॥ मिसिरि बिदाम मेवा खोपरा खिजूर ल्यायौ वीरौ वींणजारौ म्हांरौ बादल भर ल्यायौ री॥ आज ० ॥ ६ ॥ केसर कपूर ल्यायौ कूंकम किस्तुरी ल्यायौ मेंहदी मौंली चालोरी सू हाँडा भर ल्यायौ री॥ आज० ॥७॥ नखसिख गहणां ल्यायो यौ रतन जड़ाव भायौ मोल तौ अमोल ताकौ तौल हू न आयौ री ॥ आज० ॥८॥ सुनाहू न देखी केहूं ग्रँथनमैं लेखीं केहूं अपर अनौखी ऐसी सौंज लेके आयौ री ॥ आज० ॥ ९ ॥ सुनके सताब धायौ द्वारकासूं हीर आयौ भागतांरौ बाहारू शिवकरण सरांयौ री ॥ आज तौ० ॥ १० ॥

पद राग मारू

नागर साथ सिरीरंग तेडै सब कोइ मंडप आवौ जी ॥ नरसी साथ भूलि कोउ आया सावलनैं समुझावौ॥ टेर—ना-कोइ जण पिछाण न्यातकौ अपणौं सगौ न कोई ॥ लपटि

पाग बाणियां जैसो देव नृपति कहूं सोई ॥ १ ॥ जै शंकरनै करूणाशंकर भीमाशंकर भाई ॥ हरशंकर शिवशंकर दौनूं जौड़ बैठा आई ॥२॥ भभूतशंकर भवानिशंकर भीणाशंकर जाडी ॥ दयाशंकरनै ब्रह्माशङ्कर कृष्णाशंकर कोडी ॥ ३ ॥ जटाशंकरने हरिशंकर हेमाशंकर आया ॥ मनीकरणनैं रेवा-शंकर बैठा मान सवाया ॥ ४ ॥ हेसखेमनै माणक महता गोमंदनैं गिरधारी । दयाराम सद्दाजी महता पैमांजी पटवारी ॥ ५ ॥ आसकरणनै गनजी महता सांवल महता आया ॥ पनजी धनजी गोकुल महता सब मिल मंडप छाया ॥ ६ ॥ उमाशंकरनैं माधोशंकर विनय सहित बैठाया ॥ कह शिव-करण जौड कर पूछैं सेठ कठासूं आया ॥ ७ ॥

सोरठा

पूछै हरिजीसो बात, नागर सब भेला हुआ ॥ कौठारा सर-दार, किणरे आया पांवणां ॥१॥ कांई थे भूल्या बाट, नगर-अंजारे घर घणां ॥ कहो थारा मनरी बात, किणरे ल्याया माहरौ ॥२॥ नरसी निपट अनाथ, भूल करो पहरावणी ॥ भोलै करो उधौर, बहुर न आवण जावणी ॥ ३ ॥

पद राग

थे तो सां कहौ जी महराज किंणरारे आया पाहुणा ॥ टेर- किंण धरतीरा रावजी थे जास्यौ किसडे गांव ॥ किणरे ल्याया माहरौ थांरो सांच बताय दीज्यौ नांव ॥ कीणारे ॥१॥ नागर-साथ सिरीरंग ल्यायौ सांवलनैं समझावण आयौं ॥ भूल करौ पहरो बणीं थानैं पाछौ तौ मिलै न दाम ॥२॥ पंथ मार गृगेलौं भूला यौं छै नगर अंजार ॥ दीसंता थे महाजन दीखौ

चालौ छौ चाल गिंवार ॥ ३ ॥ कांई था ऊपर भूरखी बाही के नरसीले करी ठगाई ॥ कांई माल थारे मुफतको आयो कांई थे पीनी छै भांग ॥ ४ ॥ कह शिवकरण हरखि हरि बौल्या नागर कुलसौं अन्तर खोल्या ॥ म्हें छां खा गुमासताजी नरसी छै म्हारो नाथ ॥ ५ ॥

सोरठा

मथुरारा सिरदार द्वारावतीरा रावजी ॥ सावलसा छै नाम श्रीरंगजीरे पाहुंणा ॥१॥ नरसीजीरे लार, म्हे छांसेठ गुमासता ॥ नरसीरो परताप, तन मन धन नर सीतणां ॥ २ ॥ भरां आसरे पेट, दूर दिसावर म्हें बसां ॥ नरसी आदू सेठ म्हें छां आद गुमासता ॥३॥ तीन सौ साठ मुनीम म्हा ऊपर किरपांघणीं ॥ बेचे तो बिक जाउं, नरसी म्हाका सिरधणीं ॥ ४ ॥ पहली पत्री झात, भरवा लाग माहरो ॥ चुपक्यो नागर साथ, वचन सुण्यौ जब साहरो ॥ ५ ॥

पद राग मारू

सवा पचस मण लेल्यौ सुपारी सवा मण रौरी ॥ सवा पचीस मण मँहदी लेल्यौ सवा पचिस मण मौरी ॥ टेर- गिरि छुहारा पिसता नौजा विदाम अरु चारोरी ॥ सवा पचिस मण लेल्यौ कलेवो अरु मेवनकी बोरी ॥१॥ हजार थान महमूंदिका लेल्यौ साल दुसाला चौकड़ा ॥ असिहजार तौ मोहरां लेल्यौ कौड रुपैया रौकड़ा ॥२॥ कागद मैं दोय लिखी सिलाडी छपटर लेगई डोकरी ॥ लूण अंवारी मांगण लागी पांडयांजीरी डोकरी ॥ ३ ॥ भगत वछल प्रभु सारे सब काज ॥ ४ ॥

सोरठा

पहली पत्री पूर, जूनैंगढ आईजकी ॥
दूजी हाथ हजूर, भरवा लागे माहरो ॥ १ ॥

पद राग मारू

श्रीगणपति पहले सिणगाऱ्या और सारदा माई ॥ लिछमीजीकी पूजा कीन्ही श्रीलिछमीजी आई ॥ टेर-ठाकुरको पौसाख पिराई श्रीठाकुरजी हाते ॥ रामलाल अरु बालमुकन्दजी सब सनगाऱ्या साथे ॥१॥ कुलदेवी अरु पित्ररिषेश्वर ऋषि-पतनी औढाई ॥ कुलगुरु और गुराणी पूजी वैनसवासणबाई ॥२॥ हरि हर मंदिर ग्रामदेवता साध संत सब पोष्या ॥ कहै शिवकरण दयाकर ठाकुर अपणैं हात संतोष्या ॥ ३ ॥

पद राग सोरठ चाल मारू

आज्या रे फलसारा तूं तौ सूरतियारे वीर ॥ थारा तौ लेजारे दोय सोनां हंदा तीर ॥ टेर-जीतरा तौं चाल छै बीन्यायक हंदा चाक ॥ जिणराता रूपैया गिणल्यौ सवा लाख ॥१॥ पारस पीपलिरा जितरा छै पान ॥ जितारा तौं गिणल्यौ जी थे जरियां हंद थान ॥२॥ वांमण ओढौ बाण्यां ओढौ औढल्यौं सुनार ॥ तेलीने तंबोली ओढौ ओढल्यौ लुहार ॥ ३ ॥ घाची मोची दरजी छिपा लखारा सहू ॥ गहणा तौ समेत दौनुं पडौंसीरी बहू ॥ ४ ॥ माली औढौ कोली औढल्यौ अहीर ॥ मालवे जातौ डीमऊ औढल्यौ सहीर ॥ ५ ॥ मालवे जाती छीमऊ सगां राख्यौ मान ॥ एक एक जपालेल्यौ सौ सौ मण धान ॥६॥ जरकस हंदा थान लेल्यौ जरियां हंदी झूल ॥ मनरूपाजवाईको ल्यौ सौनां हंदो फूल ॥७॥ दिवराण्या जेठाण्यां

लेल्यौ जरी कुञरी ॥ छोटीडी नणदूली लेल्यौं माही चून्दरी ॥८॥ म्हांकी तौ नान्हीं बाईरी सारौ सिणगार ॥ दौयतडीसूँ लछां बाईनै मोत्या हंदौ हार ॥९॥ म्हारी तौ नान्हीं बाई छै डांणमैं छौटी ॥ सौनाकौप मोत्यौ नावडैं कौठी ॥१०॥ सूरतकी बरात सारी पहरल्यौ पौसाख ॥ जायजामैं देवण लेल्यौ रुपिया सवा लाख ॥११॥ नरसीरा जंवाईरो परसराम नाम जिणरो तो हीरासूं जडियौ दागिनौ तमाम ॥१२॥ आवौजी नारांणजी थे पेरल्यौ पौसाख ॥ तीनां भायां साऊ ज्यारा रुपिया लागा लाख ॥१३॥ बौलै छै नराणौं हरिजी म्हारी सुण ल्यौ ॥ हातकी सुमरणां ठाकुर म्हानैं डरी द्यौ ॥ १४ ॥ हात सुमरणां सांवलसाके रूठौ देख नरांण ॥ सिरौपाव नहिं पहरे यौ तौ सूतौं खूँटी ताण ॥१५॥ दिवी सुमरणां हातकी जब रूठौ लियौ मनाय ॥ सिरोपाव पहरायौ सौ तौ सबके आयो दाय ॥१६॥ ह्यांरौ सांवलवीरे सइयां हँस हँसनै देवै ॥ नाराणौ देवरियौ नकठौ मांग मांगके लेवै ॥१७॥ वींद साऊ साल दुसाला व्यायांनैं बनात ॥ ह्यांकी तौ बाईजी लेल्यौ दौबडते बड़ दात ॥ १८ ॥ माहेरौ भरा छां म्हे तौ बिसवा बीस ॥ घरका बीरामणकी ल्यौ मोहोरां साढा तीस ॥१९॥ पंचसार बोल्या ये तौ रूपियांही मागै ॥ मोहरां तौ दियां सूं म्हांनै नवी लागत लागै ॥२०॥ कौकल्या वीरामणकी कासी दीकेद्यौ ॥ नेवगीरा साढीबाहर रूपेया लेल्यौ ॥२१॥ बाईकी सासूजी सुसरा आवौजी डरा ॥ व्यायणजी पहरौनी थांकी मनसाही पूरा ॥२२॥ व्याहीजी पहरावै जीसूं चोखौ ही पहरास्यां ॥ याद तौ करौला थारैं फेरूँ कद आस्यां ॥ २३ ॥

बाईरी नणदूली रूठर दूरा बैठा जाई ॥ श्रीलक्ष्मीजी हातकौ जब कांकण देर मनाई ॥२४॥ रूठा व्यांयण बूढलाजी साड़ी दाय न आई घणमौली रतनां जडीले श्रीपति जय औठाई ॥२५॥ सगी व्यांण बाईरी सासूं ऊपर रूठा जावे ॥ तब लां लक्ष्मीजी हार गलाकी व्यायणने पहिरावे ॥२६॥ हार देख हाबडो हरखायौ सब सखियन मन भायौ ॥ आछौ वेस अमोलके ल्यायां श्रीपतिआण पैरायौ ॥२७॥ लेल्यौजी धायजी व्यांयण मेण्या हंदौ वेस ॥ धाऊजी व्याईजी लेल्यौ जरकस हंदौ खेस ॥२८॥ दाई माई नांयण ओढौ नांलौं मौढनहार ॥ थारी तौ पौसख लेजा अणदा सुनार ॥२९॥ धजा धौवती मंदरा लेल्यौ घौडचडी अमौल ॥ पाँच मोहोर पंचाकी लेल्यौ सारू करावौ ढौल ॥३०॥ रंगसें तौ राधा रूकमण रूसणौं करचा ॥ सैजोडे कह्यो थे तौ अकेला भरचौ ॥३१॥ माहेरौ ओढन्यौ म्हे तौ नगर अञ्जर ॥ नान्हीं बाईरौ ऊभौ छे थैं सारौ परवार ॥३२॥ नान्हीं बाइरौ वाकी राख्यो सारोइ साथ ॥ जीणांनैं औढास्यां राणी थांरइ हात ॥३३॥ राधा रुकमण बोलै थे तौ सुणज्यो हरी ॥ परणें फेर साड़ी ल्याया औडाद्यौ परी ॥३४॥ कुलका भाट दमांमी ओढ़ो सेवग भोजग सारा ॥ गांध्रव चारण और बंदीजन विरद बडावणहारा ॥३५॥ धौबी धौवण कपड़ा धौवै ज्यांने कीज्यो चीत ॥ ब्यायांकी गीतेरण्या सौ गावै चोखा गीत ॥ ३६ ॥ ढौली ढौलण और कलावत रामजणीको सान ॥ बहरुप्या अरू भांडभुवाया ओढ़ो सबही जात ॥३७॥ पहरनैं पौसाख ऊभी सबहि जणी ॥ आपणी तौ नान्हींबाई सो वैही घणी ॥३८॥ नान्हीं बाईरी नणद लीनैं

और कीज्यो जाय ॥ आछी आछी चूंदडया तौ ढौरू ओढी आय ॥३९॥ नान्हीबाईरी साथणियांनै नणदल ओढी आय ॥ कठै रंगाई समलियाजी आई म्हारै दाय ॥४०॥ फाटै म्हांरी ओढण्यां म्हें फेरूं ल्या रंगाई ॥ कठोडै रंगाई म्हानै साचोद्यो बताय ॥४१॥ दास कबीरे रेजो वणीयौं कर कर मनमें ख्यात ॥ नामदेव छींपापै छपाई म्हें तौ भांत ॥४२॥ पूरी म्हारी द्वारकामैं भारिया छै भण्डार ॥ नान्हीं बाइरा माहेरानैं कीनी छी तयार ॥ ४३ ॥ श्रीरंगजीनैं कहै नराणो जोर हुई ॥ अपणै आयौ माहरानैं ओडग्या कोई ॥ ४४ ॥ पहली नहीं जाण्यौ नरसी माहेरौ भरतौ ॥ आपणीं हवेली म्है तौ सौनांकी करतौ ॥ ४५ ॥

सोरठा

यह नहीं जाणीं बात, नरसी भरसी माहरौ ॥
भयौ जगत विख्यात, सौच नराणो यूं करै ॥१॥
म्हें तौ करी अन्हाक, नरसीजीसूं मसकरी ॥
खून करे म्है लांख, क्षमां करौगे हरिभगत ॥२॥

दोहा

हरिभक्तासौं ठेचरी, कर कर नर पसताय ॥
भीर परच्या शिवकर्ण कह, हरि आवत हैं धाय ॥१॥

पद राग

भर भर बाथां देत सांवरौ नरसी ताल बजावै हौ ॥ बिच बिच तान मृदंग ढोल डफ सूरदास पद गावै हौ ॥ टेर—केई नागरिले बाल नचावै सांवल साहाके आगे हौ ॥ केहै प्रभु यांकू कछु दीजै बालकके मिस मांगे हौ ॥१॥ नये उतार पुराणे

पैन्हैं पुनि पुनि औढण गावै हौ ॥ केइ केइ औढ पहरवांहिं ठाढी केइ औढ कर जावै हौ ॥२॥ भौजग भाट देत आसीसां कुलगुर गौत उचारैं हौ ॥ बंदीजन गांध्रव गुन गावैं नाचत दे दे तारैं हौं ॥३॥ बिदुषक नकल कर बहुत हँसावै कविजन कवित सुनावै हो ॥ वेदध्वनि सब करत विप्रगन सखियन मंगल गावै हौं ॥४॥ होतां परस्पर चोज अधिक अति संमधी पाट बिठावै हौ ॥ केसर कुंकुम और अरगजा छापा पीठ पिटावै हौ ॥५॥ कोउ ले रोरी मुख लिपटावे केसबाबची ल्यावै हौ ॥ कोउ ऊबटना अंग लिपटावै आपस हांस चलावै हौ ॥६॥ अगर अबीज गुलाल कुमकुमां केसरकीच मचावैं हौ ॥ सूंधां अंत्र चलैं पिचकारी मोहनके मन भावै हौ ॥ ७ ॥ सुखसारण देवनकौं दुरलभ नागर फाग खिलावै हौ ॥ हरखित देवपुष्प वरषैं सुर विवाण चढ़ धावै हौ ॥ ८ ॥

दोहा

सब कछु सब काहू दयौ, म्है जाचत हरि तौय ॥
रह्यो विमुख शिवकर्ण यौं, भक्ति दान दे मौय ॥१॥
अन धन भूषण वसन कौ, मौकूं अचरज नाहिं ॥
काहां जाचै शिवकरणियौं, यह मेरे घरमाहिं ॥२॥
म्हैं हरि जाचत हरि भगति, द्यो तुमरे घर हौय ॥
तूं जाच्यौं बलिराजपै, चाहैं द्यूं तौय ॥३॥

इति श्रीभक्तवत्सल विडदरागकौतूहल नरसीमेहेताका मामेरा नवम प्रकाश समाप्त ॥ ९ ॥

दशम प्रकाश १०.

सोरठा

गावैं सेठाणीं गार, सब संमधी हरखित भये ॥
इत श्रीरंगकी नार, सखी खरी सब येखटी ॥१॥
गाई अनौखी गार, यदुपति मुख मुलकत भये ॥
विहँसि विहँसि सब नार, गारी देति सुहावनी ॥२॥

दोहा

भई प्रेमवस वाम सब, बढी परस्पर प्रीत ॥
रीत भांत लज्यो तजी, गावत अनवन गीत ॥३॥

पद राग कहरवाकी परज

इसि गावै सेठाणी गाल संमदण सांची कहौ॥ टेर–अंग थारौ भलकै विंदली चिलक भूषण वसन विसाला ॥ १ ॥ काजल मिसि तंबोल तिलकमांही विन्दली लाल गुलाब॥२॥ खंजन नैन चिकोर चलावौं मोह्या गिरधरलाल ॥३॥ श्रीरंग ग्याही वृद्ध भया म्हांरौ रथरौ हाकडवाल ॥ ४ ॥ कह शिवकरण नारद मुख गावत नाच बजावत ताल ॥ ५ ॥

पद राग कहरवाकी परजत तथा काफी

थांने समदण गावै गार गिरधर सांवलिया ॥ टेर–अंग गौरेगाथ प्रभुजी मैं भेल पऱ्यो बलदेवजी गौरे अँग गिरधर सांवरिया थांने समदण ॥ १ ॥ दोय कहीजैं बाप जगत मांहि पड्यो दौन्याकौं रंग वसे खगवर अरु सांवरियां ॥२॥ दौय बाप च्यारूं हात विधाताने दुरस घड्या थारि परगट होति

पिछांण जगत कांइ बावरियां ॥३॥ थारी भाभी दारोपतिनार पांचासीर पड्यो थे नाक बिधायो नाथ नाच्या संग डाबरियां ॥४॥ सुण समदणकी गार नरसी सकुच पड्यौ कांइ सांवला काढै दांत दिखावै चावरियां ॥५॥ बारकियो शिवकरण भवजल जात बुह्यो भवसागर तारण कीजे गिरधर नांवरियां ॥ ६ ॥

राग परज तथा काफी

व्यांयण रंगमहल मैं आंव सांवराकी सहज बिछी ॥ टेर- सुपनै नहीं सूती ऐसी सहज नरम बिछौनां छै ॥ मनभावन पलंग बिछाय गालम सू्या लैं ॥ १ ॥ औढौ सुन्दरदिरणी चीर मौतियन मांग भरौ ॥ खावौ मिसरी मेवा पान समदन आंवौनै उरी ॥२॥ थे तौखेलोचौपडसार सांवरां सूं रंगरली॥ थारो वधसी वोही परवार पूता बेल फली ॥३॥ ऐसो अवसर बारन मोही मोहन मनमें वसी ॥ ऐसी सुन नारदकी गाल नागर नार हँसी ॥ ४ ॥

दोहा

गीत नाद आनंदयुत, चौस मौज रस रीत ॥
उभय ओर शिवकर्ण कह, बढ़ी परस्पर प्रीत ॥१॥
पंचनपैं आग्या लई, कर विनती यदुनाथ ॥
विधिसो पाक बनायके, करो तयारी भाथ ॥२॥

पद .राग सोरठा

नोतो छै जी नगर अंजार ॥ महताजीकौ नोतो छै जी नगर अंजार ॥ टेर-हरिमंदिर सिधा ले जाज्यौ खटदरसण

नर नार ॥ साधू भगत और भिखारी आज्यो दूदाधार ॥१॥ सूरततणां बरात्याने नूतौ दयो छै भातकवार ॥ बामण बणियां सब जुड आज्यो अस सब राजदुबार ॥२॥ घांची मौचानै तेली तँबौली दरजी और सुतार । माली कौली नाई छीपां गूजर और सुनार ॥३॥ डवगरनैं रँगरेजलखारां कमणीगरनैं कुम्हार । चूडी गरनैं और चितेरा धोबी और लुहार ॥ ४ ॥ कहार कचेरा कीर कसेरा जाचक कारू कसार ॥ लौधा भील कलौता कोली रेगर और चमार ॥५॥ सबकौं नौतौ छै सिगरीकौ आज्यौ सैंपरिमार ॥ ऊँच नीच कोउ हरण न पावे अन्तज आज पधार ॥ ६ ॥ कह शिवकरण सकल नगदियौ छै पुकार रीमें नोतौ । भूल चूक कोइ रहण न पावै आज्यौं सह परिवार ॥ ७ ॥

दोहा

सकल नगर नौतौ दयौ, ढूंडी दई पुकार ॥
भूल्या चूक्या पाहुणां, पंथी सब नर नार ॥ १ ॥
सकल सौज त्यारी करी, भरे बहुत भण्डार ॥
अपणीं अपणीं पंगतीं, जुडि आवै संसार ॥ २ ॥
पनवाड़ा देवा लग्या, नौपत सरू कराय ॥
देव परूसणा आविया, छाबां लई भराय ॥ ३ ॥
चढ विवांण सुरकन्यका, मंगल वदित अपार ॥
सुरपुरतैं शोभित अधिक, पुष्पन वृष्टि प्रहार ॥ ४ ॥

दे पनवाडा पुरसण लागा निज करसौं गिरधारी ॥ अपणीं अपणीं पंगत बैठो गुलकंदकी मनुहारी ॥ टेर-मोहन-

भौग और पचधारी लपसी अधिक सँवारी मौतीचूर खीर और खाजा घेवर सरस सँवारी ॥ १ ॥ नुखती गुंजा और हेसमीं मौदक और कसारी ॥ कलाकंत बरफी अरु फीणी खुरमा नरम अपारी ॥ २ ॥ पूवा और जलेबी ताजी सरस खिजूर तयारी ॥ सक्करपारा और इंम्रती मठड़ी मुरकि सुधारी ॥ ३ ॥ ठौर खांखरी और खरखरी गूंदपाक अति भारी ॥ सेव सिंगाडा और चिरौंजी पेड़ा मगद अपारी ॥ ४ ॥ भुजिया पेठा बड़ा कचौरी बैंगन बड़ा पकौरी ॥ दशमीं दूद पुरी खाजा पापर और पितौरी ॥ ५ ॥ केर करेली और मुगौरी रायतां साक सुधारी ॥ चावल मूग घिरत अरु बूरो बिंजन बहु परकारी ॥ ६ ॥ भात केसऱ्या पूरण पूरी रामखीचड़ी त्यारी ॥ नीबू केरी और आंवला चटणी मिरच अच्यारी ॥ ७ ॥ आग्या भई ग्रस सब लीन्हैं देव करै परुसारी ॥ पंखा पवन करत लक्ष्मीजी जीमणकी मनुहारी ॥ ८ ॥ सांवल साहा कर रतन कटौरौ अन्त्रभरी पिचकारी ॥ नागर जीम लगौ सब अचवन जीमीं नगरी सारीं ॥९॥ नौपत नाद बजै सुनराई मंगल मुदित अपारी ॥ प्रीत सहित सबही जग जीमें त्रिपत भए नर नारी ॥१०॥ कासां भांणां दयौ डबारौ सबकौ पान सुपारी ॥ मोहोर मोहोर सगरी नगरीमैं कुलमैं सोवन थारी ॥ ११ ॥ कह शिवकरण सकल जन पौखे नगर कधीणरू कारी ॥ कंठी काड़ा बँदील दुसाला दीन्हे कृष्णमुरारी ॥ १२ ॥

इति श्रीभक्तवत्सल रागकौतूहल नरसीमेहेताका वड़ा मामेरा
दशम प्रकाश ॥ १० ॥

एकादश प्रकाश ११.

दोहा

आप अरोगी साँवरा, सब संतन ले लार ॥
नरसीजी सब पांणवां, समदण गावैं गार ॥ १ ॥
नरसी संग श्रीरंग झुके, बाई रुकमण संग ॥
संतनके संग सांवरो, जीमत राच्यौ रंग ॥ २ ॥

पद राग सोरठा

देव सब रूप धारणकर आवैं ॥ नर और नाग अमर तिहुं पुरतैं सुन सुनके सब धावैं ॥ टेर-नारद आदि रिखेश्वर जीमैं ब्रह्मा पुरसण आवैं ॥ छप्पन भोग छतीसूं व्यंजन रुचि रुचि भोग लगावैं ॥१॥ अति मनुहार परसपर विनवै तकि तकि पुरसण धावैं ॥ वरषै प्रेम नेम सब छांडे उमंग हिये नहिं मावैं ॥ २ ॥ मारुत त्रिविध बयार इन्द्र झर तनक बूंद बरषावैं ॥ देत सुगंध थरा नानाविध तेज विद्युत दरसावैं ॥३॥ धन्यवाद आकाश होत ध्वनि षटरितु समय दिखावैं ॥ कह शिवकर्ण सांवरो जीमैं समदण गारी गावैं ॥ ४ ॥

पद राग बिहाग

लालजीकूं किसविधि गारीगावां ॥ थाकोकीरत सकल सुनावां लालजीकूं ॥ टेर-मात गुनी नवीस पितु सुन विण नार अनेक जतावां ॥ दधिके चोर छाछके दानी बल घर भीख बतावां ॥ १ ॥ जादव छोक अहीर लालजी कांई कइ बतलावां ॥ मौहनिरूप धर्‍यौ शिव आगै किंणरी नार जतलावां ॥२॥ भुवा तुमरी कूंतां कहिये करण कूंवारी जावा ॥ बहन तुम्हरी कुंवारि सहोदरा अरजुन लेकर धावा ॥३॥ सत्राजीत

तुम्हारोइ काकौ जादववंस बतावां ॥ तास सुता सतभामा परण्या कीरत सकल जतावां ॥४॥ चंद्रवंस गुरुपतनी दूषित बुद्ध जन्म हम गावां ॥ समदण कहै तुम सुणो हो सांवरा तुमरो म्हें पार न पावां ॥ ५ ॥ अनुऊपम उपमा नहि लागै देताहि लजावां ॥ कह शिवकरण सरण चरनकी भक्ति-पदारथ पावां ॥ ६ ॥

पद राग ठुमरी

कुंवर तुम महरका हो बाला थानैं औलखियाहो अहीर ॥ बलै वसुदेव काहो लाला थानैं औलखियारे अहीर ॥ टेर-पिता तुम्हारा वसुदेवजी हो बाला कैद किया नृप कंस ॥ माय-तुम्हारी रोहिणी हो बाला बलो उजाल्यो वंस ॥१॥ नन्दम-हरके घर बसीहो बाला जायो हलधर वीर ॥ बेटी जाई सौद रहौं बाला तज्यो कुँवारी पीर ॥ २ ॥ लक्ष्मीजी घरघर फिरै हो बाला सब जग जाके जार ॥ घरमैं दासी कंसकीहों बालाप्यारी रींछड़ी नार ॥ ३ ॥ राधा रुकमण संग ल्याया हो बाला आया नगर अंजार ॥ नागरकुल नित निरखसी हो बाला समदण गावैं गार ॥ ४ ॥

पद राग जैजैवन्ती तथा मल्लार

सांवरा गिरधारीकूं दीज्यौ मति गारीरी माई॥ टेर-जुग जुग रूप धारै नारि देखे मार डारै गौत घाव करिबेकों बड़ो उपगारी है ॥ सांवरा० ॥ १ ॥ गौतमकी घरनी सौवा परी पखान भई तुर उडाय दीन्ही तारका संघारी है ॥२॥ सुप-नकाके कान काटे लंकाहूकौ लूटी लांटे नारी नाम पायौ सीता अगन प्रजारी है ॥३॥ थनकौ करायौ पान धाय तिहुँ

लौक जानै बापरी गरीणनीसौं पूतना पछारी है ॥ ४ ॥ कूबरीकौ ऐंच लीनी लंवीर खैंचकर दीनीं प्रानके बचेतै रूप रूडी प्रानप्यारी है ॥ ५ ॥ पेटमें परत माय कैद करवाय डारी मधमें लुटांय सारी गौपी गारडारी है ॥६॥ गारी कोउ मति दीज्यौं सहदही बलैयां लीज्यौ नारीकौ हनक माधौं सांवरो विहारी है ॥ ७ ॥

सोरठा

सुन समदणकी गार, दोहूं ओर आनंद भयौ ॥
जीमत अति मनुहार, चलत परस्पर चौज अति ॥१॥
भयो काम अभिराम, सब जन परिपूरन भयौ ॥
बरणा वरण तमाम, बाकी कोउ न रह सक्यौ ॥२॥

दोहा

कर भोजन अचवन लयौ, मौंछन दयो निकार ॥
अतिपाचक अति अमिअरसु, कृष्ण करी मनुहार ॥३॥
बीरी दीन्ही पानकी, केसर लवँग इलाय ॥
मृगपद और कपूरयुत, कत्थौ कली मिलाय ॥४॥
नर नागरि सब नग्रके, त्रिपत भये भरपूर ॥
सुखसारण पुनि ले गये, पठन दिसंतर दूर ॥५॥
महाप्रसादी प्रेमतैं, सब कोइ सीस चढाय ॥
जहां तहां शिवकर्ण कह, प्रीति सहित सब पाय ॥६॥
वह प्रसाद एक संतपैं, कनका मात्र जरूर ॥
दयौ मोहि जिन प्रीतिकर, भयौ प्रेम भरपूर ॥७॥

पद राग मारू

मनबांछित सबहीकौं दीन्हौं नाना भांति अघाया ॥ बांछित

फल इच्छाकर भोजन प्रीति सहित सब पाया ॥ टेर-किरपानाथ सकल जन पौखे जाचक सबैं धपाया ॥ किये अजाच फेर नहिं जाचै जो कोइ जाचण आया ॥१॥ गान विनोद करैंगे हरिजन कृष्णचरण चित ल्याया ॥ नरसी अबैं सुनैं मामेरौ श्रीमुख यूं फरमाया ॥२॥ लखि अधिकार कँवलदललोचन सबकौं राजी कीया ॥ भक्तिदान शिवकरण रीझि मोहि चार पदारथ दीया ॥ ३ ॥

दोहा

नमन करी सब परसपर, बोले जय गोपाल ॥
रहस्य सुणीं श्रीरंगकी, मुलके मोहनलाल ॥१॥
सेठाणीं समदण तणे, लुलकर लागी पाय ॥
बहु प्रकार विनती करी, समदण कंठ लगाय ॥२॥
तब सारथि रथ साझिके, हाजर कीन्हौ ल्याय ॥
सकल सवारी त्यार कर, तुरियन झीण कराय ॥३॥
श्रीपति रथ आरूढ़ है, झाटकियौ रूमाल ॥
पाती थे कोच्यां लिखी, माहेरां दई उछाल ॥४॥
तब नरसी चरणां लग्यौ, बहुत बीनती कीन ॥
हरिमुखतैं कहि भक्त तूं, दोऊँ कर मस्तक दीन ॥५॥
श्रीरंगजीसे बीनती, कीन्हो जदुपतिनाथ ॥
कहि हम तावेदार हैं, जोरे दोनूं हाथ ॥६॥
तब श्रीरंग बहु बिनय कर, कहि प्रभु दीनदयाल ॥
असरनसरन दयाल हौ, भक्तनके प्रतिपाल ॥७॥
खुसी रहौ आनंदतैं, हम लायक कछु काम ॥
लिखयौ बहुत कृपाल हैं, उहां तुमारौ धाम ॥८॥

करी परसपर बीनती, नमस्कार कर जौर ॥
बहुर कृपा कर आइयौ, श्रीरंग कही निहौर ॥९॥
द्वारवती पधारज्यौ, कह गये गिरधरलाल ॥
सब नागर नर नग्रके, बोले जय गोपाल ॥१०॥
भये बिदा जदुनाथ तब, गये द्वारिकाधाम ॥
कह्यो भक्त नरसी जबैं, अरु सब संत तमाम ॥११॥
धन्य धन्य नर नग्रके, कहै नरसियौ संत ॥
सुखसारण सारे प्रभु, ऐसे काज अनन्त ॥१२॥
सकल सराहत नीपनी, यह जगकौ व्यवहार ॥
सुखसारण देखा नहीं, नेपै सिरजनहार ॥१३॥
जन महिमां शिवकर्ण कहि, सज्जन बांचे कोय ॥
हरि आग्या हिरदय धरौ, दौस न दीज्यौं मौय ॥१४॥

इति श्रीभक्तवत्सल बिडदरागकौतूहल नरसी मेहेताका बड़ा मामेरा
एकादश प्रकाश समाप्त ॥ ११ ॥

द्वादश प्रकाश १२.

पद राग सोरठ चाल मारू

नेतूली खेतूली नणदल पाणी तौ भरै ॥ बाईने सुणाय कर चूगली करैं ॥ टेर—ऐसौ कांइ नरसी मेहेते महेरो कियौ ॥ कालकी जाईनैं नहीं कपड़ौ दियौ ॥१॥ पाडौसणकी दोहतीनैं भूल तौ गयौ ॥ और सारा गांवमांहैं कापड़ा दियौ ॥२॥ आण दीकी नाणदीनैं भाणी बाई नाम ॥ जैन नहीं दीन्हौ एक कपड़ा रौ ठाम ॥३॥ पैंमली पाडौसण तौ लाडती आवै ॥ जाणेकालौ नाग रीस्यौ झपटांहीं बावै ॥४॥ पाट तौ पीतांबर नरसीसारांने

औढायो ॥ भाणजीरी दौहतीरो कापड़ौं न आयो ॥५॥ सुणज्यो हे लुगायां थे तौ सगली जणीं ॥ कापडारै साख छौरी रोई ही घणीं ॥६॥ रात्युं रोई छोकरी वा राखीनैं रही ॥ कापड़ो दीयांसूं छौरीं रह जासी सही ॥७॥ नान्ही बाई दौड़ी आई देखूं तौ सही ॥ कलकी जणियोडी कंवरी देख तौं लई ॥ ८ ॥

दोहा

पाडौसण प्रेमी कहै, थारो मोडचो मौहिं बताय ।
केतौ देसी कापडौ, नहीं तौ लेस्यू ताल छिनाय ॥१॥
नरसी मौहि बताय है, तौकूं रामदुहाइ ।
तान खौस घरमें धरूं, तौ बावलकी जाइ ॥२॥

पद राग सोरठ चाल मारु

पुतरी तौ दौड पिता कनै गई एकतौ बाबाजी बिना कापड़ै रही ॥ टेर—माहेरो भाग्यानैं हुई दोय तौ घड़ी ॥ औजू कूणऊणी जिणपर पटकी पड़ी ॥ १ ॥ पाडौसणकी भांणजीके दौयती थई ॥ आख्यां देखकर आई बीना कपड़ै रही ॥२॥ ल्यौन म्हारा बाबाजी थे यो तौ जस तौ जस आज ॥ कापड़ा मौनैं जाती दीख लाज ॥३॥ डेरामैं नहीं छे बाई वटकाको विचार ॥ तूंमडा चावै तौ लेजा दोय च्यार ॥ ४ ॥ फौंड थारा तूंमडा सरे तौ नहीं काम ॥ कापड़ा बीनांतो डूबोमाहेरों तमाम ॥५॥ के थे बाबाजी मौने कापड़ोई देवौ ॥ नहीं तौ थांरो माहेरौ दीयौडो पाछौ लेवौ ॥६॥ डेरामैं नहीं छे एक आंगलको विचार ॥ कपड़ा सांटे लेजा म्हारी सवा रुप्याकी ताल ॥७॥ तालां लेकर चाली बाई बाबाजीके गई ॥ कपड़ो लेदीनौ छौरी रौवती रही ॥ ८ ॥

सोरठा

ताल अडाणैं मेल, बाई ल्याई कापड़ौ।
यौ करतारो खेल, नरसी विना तालां भयो ॥ १ ॥

पद राग सोरठ चाल मारू

ताता थेई नाचैनैं बजावै नरसी हात ॥ विहूणौं करग्यो म्हारा द्वारिकानाथ ॥ टेक–माहेरो भऱ्यो तो थारी बेटीके भरयौ ॥ तालां तौ बीहूनो नरसी महताने करयौ ॥ ॥ १ ॥ तूं तौ मनमैं जाणेलौ म्हैं माहेरो भऱ्यौं ॥ नरसी तालासूं थारौ कारज सऱ्यौं ॥ २ ॥ एक हातकौ कापड़ौ तूं न्हाख दे गोपाल ॥ कापडलामैं गइ रे म्हारी सवारुप्यारी ताल ॥३॥ रौजीना बजावतौ रीझावतौ गौपाल ॥ पौकरजीके मेले लीन्ही सवा रुप्यामैं ताल ॥४॥ जबी महता नरसीजींनैं करुण करी ॥ इन्द्र तौ आतानै लागी एक नां घरी ॥५॥ बरसण लाग कापडलानैं माचण लागौ सोक ॥ छीदी छीदी मोहोरां बरसै रुपिया बरसै रौक ॥६॥ बरसै छै कापड़ानै माच रही धार ॥ डरपण लागौ सारौ नगर अंजार ॥ ७ ॥ सवा सवा मणकां तौ कपड़ा पड़ै ॥ पैंमली पडौसणका सौ टापरा गिरै ॥८॥ बडौडा जेठजीकी फूटगी पटी ॥ ल्यौटक्या जेठजीकी फूटगि घटीटी ॥९॥ नान्हीं बाई हँसै मुख फूल झड़ैं ॥ देखौ म्हारी सासूजी पर जरी कापड़ै ॥ १० ॥ बरसै छै कापड़ानैं टूट गया हौट ॥ आछा आछा देख सासू बांधलीज्यो पौट ॥११॥ देराणी जेठाणी तारे ऊभी ऊभी बान ॥ नाराणा देवरियाकी टूट गई टांग ॥ १२ ॥ बाज्यौ झरणाटौन पूकाऱ्यो सारौ

साथ ॥ पैंमली पाडौसनकौ टूट गयो हाथ ॥१३॥ ईसडो तौ मेह आज पहलीनै बूठौ ॥ छौटकी नणदौलीकौ कानड़ौ टूटौ ॥१४॥ कापड़ो तौ लेकर बाई बाबाजीके गई ॥ तालां तौ छुडाय महता नरसीनैं दई ॥१५॥ थे तौ म्हारा बाबाजी ये तालां थांकी लेवौ ॥ मीनख मरै छै अवे थांबल्यौ मेवौ ॥ १६ ॥ थारा ये कुटमसूं नाई नरसीलो उरै ॥ बड़ा बड़ा पेटवाली मौकली फिरै ॥ १७ ॥ तालां तौ छुडाय ल्याई नान्ही बाई ॥ अबकै कोई जजै म्हारी मरदंगनैं साई ॥१८॥

दोहा

बाई कह सुण बापजी, धार्‍यौ सब संसार ।
पडवा लागा टापरा, दटणैं लगी अंजार ॥१॥
तब नरसी कर जोड़ कहै, सुनियौ कृपानिधान ।
अबकी प्रभु मेह थांब द्यौ, दुखित सकल जनजान ॥२॥
बिदा भये नरसी तबै, सबसैं करी प्रनाम ।
भई परस्पर वीनती, गवने निज निज धाम ॥३॥
तब गाडूली हांकके, संतलये सब संग ।
चले मृदंग बजावते, पद गावत रुचिरंग ॥४॥
एक मास दस दिवस लौ, पंथ चले अति धाय ।
कुसल छेम आनंदसों, निज पुर पहुँचे आय ॥५॥
माघ मास सुद सप्तमी, आश्विनि अरु रविवार ।
माहेरौ नरसी तरणौ, सांवल भरयौ अजार ॥६॥
सौलासैं सौलो तणौं, विक्रम संवत जान ।
चवदासे इकियासियौ, शाके सालिवाहान ॥७॥

भक्तांके हित कारणै, जद हरि बांध्यौ मोड ।
माहेरामैं रूपिया; लागा छप्पन क्रोड ॥८॥
जो गावै सीखै सुणैं, वैकुंठांको वास ।
हरिनामैं रतनौ बसै, हरिभक्तनकौ दास ॥९॥
लिखै पढ़ै गावै सुणै, कहैं कहावौ कोय ।
खाती रतनौ यूं भणैं, गऊ सहस्र फल होय ॥१०॥
माहेरौ नरसी तणौ, करै तांन अरु गान ।
ज्ञान बढ़ै गुण ऊपजै, गंगातणां सिनान ॥११॥
महिमा माम्हैरा तणी, खाती कही बणाय ।
सहज मुक्ति पावै सही, जन जमपुर नहिं जाय ॥१२॥
भक्ति ऊपजै भय मिटै, असऱ्या सरसी काज ।
नुखता सकल निवाजसी, सांवलसा महाराज ॥१३॥
सुखसारण कृपा करी, सदगुर दई सुबुद्धि ।
रामरतन शिवकरण यह, शोध कऱ्यो अति शुद्धि ॥१४॥
ग्रन्थ पुरातन आदकौ, परत मिली मन भंज ।
अतिमहिनत बहु कष्ट ते, सोध रु कऱ्यो तरंज ॥१५॥
द्विज गणेश शीकरतणौ, आदगौड कुलसार ।
कंठ हुतौ वांही जितौ, मुखते लयौ उतार ॥१६॥
कछुपद नये बनायकर, अगले दिये सुधार ।
नये मिलाये अन्तरे, अशुभ दये सब टार ॥१७॥
दोहा सकल नये धरे, अरु सौरठा नवीन ।
गुनिजनगायन भक्ति हरि, सबहि रसिक करलीन ॥१८॥

कवित्त

भगतनके पढबेकूं माहरौ नवील कछु,
आगले मिलायके पद शुद्ध करलीनी है ॥

उगनीसौ पचीस अरु संवत्सर विक्रम शाके,
सत्रासौं नेऊ चैत्र शुद्ध चीन्हीं है ॥
पूरणमां हस्तारिषी ग्रंथ परिपूरण भयौ,
मंगल जस संतनको सदा ही नवीनो है ॥
कह शिवकरणै श्रीसुखसारण प्रकाश यहैं,
छापखानेमें छपाय त्यार सुठि कीन्हो है ॥१॥

दोहा

आद थान मारू धरा, धरक मूंडवै वास ।
मूलचन्दसुत शिवकरण, हरि, भक्तनकौ दास ॥१॥
म्हैं पहिले इणविध लिख्यौ, पापिन कीन्हौ पाप ।
छाप हमारी तौडिके, दयौ अधूरौ छाप ॥२॥
अब मैं याको शुद्ध कर, विधि अनुकर्म मिलाय ।
जहाँ तहाँ टूटक हुती, दीन्ही संध मिलाय ॥३॥
आवरती पहली जितौ, सौहि शुद्ध करलीन ।
पुनि संतन मुख वात सुन, कथि शिवकरण नवीन ॥४॥
ललित ललित लखि रागिनी, पद नवीन धर और ।
तीन जनम नरसीतणां, कहि शिवकर्ण बहौर ॥५॥
भर हूंडी माला दई, पड़ मंडली पत चर्ण ।
जाणि वाद भौजन द्विविध, अबहि धरे शिवकर्ण ॥६॥
भक्तिभेद जाणूं नाहीं, ना कविताको भेद ।
बक्यो लखे बिन बालवत, संतन करहि न खेद ॥७॥
हँसहिं मूढ़ अरु संत दोहु, लखि मौ मति अज्ञान ।
संत हँसहिं मोहिं बाल लखि, मूढ हँसहि बुधजान ॥८॥
म्हैं दौहुनकौ बींनवौं, धर चरण पर सीस ।
दुरजन तौ करसी क्षमा, स्वजन न करहीं रीस ॥९॥

उगणीं गुण चालीस, द्वितीय श्रवण सुद तीज ।
भक्तिभेद शिवकर्णकौ, मिलसी मोटी रीज ॥१०॥
नरसीजीके चरित लख, भजिये श्रीनन्दलाल ।
काम सुधारेंगे सभी, करिहैं तोहिं निहाल ॥११॥

इति श्रीभक्तवत्सलविडदरागकौतूहल नरसीमेहेताका मामेरा
द्वादश प्रकाश समाप्त ॥ १२ ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS